आन्ध्रों का हिन्दी साहित्य

एम. ए. , हिन्दी

Semester-IV, Paper- III

पाठ के लेखक

डॉ. सूर्य कुमारी. पी.
एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी.
हिन्दी विभाग
हैदराबाद विश्वविद्यालय
हैदराबाद।

डॉ. एम. मंजुला
एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी.
हिन्दी विभाग
रामकृष्ण हिन्दू हाई स्कूल
अमरावती, गुंटूर।

संपादक

प्रो. अन्नपूर्णा सी.
हिन्दी विभाग
मानविकी संकाय
हैदराबाद विश्वविद्यालय
हैदराबाद।

निर्देशक

डॉ . नागराजु बट्टू
MBA., MHRM., LLM., M.Sc. (Psy).,MA (Soc)., M.Ed., M.Phil., Ph.D

दूरस्थ शिक्षा केंद्र, आचार्या नागार्जुना विश्वविद्यालय
नागार्जुना नगर – 522510
Phone No-0863-2346208, 0863-2346222
0863-2346259 (अध्ययन सामाग्री)
Website : www.anucde.info
E-mail : anucdedirector@gmail.com

एम. ए., हिन्दी

First Edition :2023

© Acharya Nagarjuna University

This book is exclusively prepared for the use of students of M.A. (Hindi) Centre for Distance Education, Acharya Nagarjuna University and this book is meant for limited circulation only.

Published by:

Dr. NAGARAJU BATTU,

Director

Centre for Distance Education

Acharya Nagarjuna University

Printed at:

FOREWORD

Since its establishment in 1976, Acharya Nagarjuna University has been forging ahead in the path of progress and dynamism, offering a variety of courses and research contributions. I am extremely happy that by gaining 'A' grade from the NAAC in the year 2016, Acharya Nagarjuna University is offering educational opportunities at the UG, PG levels apart from research degrees to students from over 443 affiliated colleges spread over the two districts of Guntur and Prakasham.

The University has also started the Centre for Distance Education in 2003-04 with the aim of taking higher education to the door step of all the sectors of the society. The centre will be a great help to those who cannot join in colleges, those who cannot afford the exorbitant fees as regular students, and even to housewives desirous of pursuing higher studies. Acharya Nagarjuna University has started offering B.A., and B. Com courses at the Degree level and M.A., M. Com, M.Sc., M.B.A., and L.L.M., courses at the PG level from the academic year 2003-2004onwards.

To facilitate easier understanding by students studying through the distance mode, these self-instruction materials have been prepared by eminent and experienced teachers. The lessons have been drafted with great care and expertise in the stipulated time by these teachers. Constructive ideas and scholarly suggestions are welcome from students and teachers involved respectively. Such ideas will be incorporated for the greater efficacy of this distance mode of education. For clarification of doubts and feedback, weekly classes and contact classes will be arranged at the UG and PG levels respectively.

It is my aim that students getting higher education through the Centre for Distance Education should improve their qualification, have better employment opportunities and in turn be part of country's progress. It is my fond desire that in the years to come, the Centre for Distance Education will go from strength to strength in the form of new courses and by catering to larger number of people. My congratulations to all the Directors, Academic Coordinators, Editors and Lesson-writers of the Centre who have help edit the seen devours.

Prof. Raja SekharPatteti
Vice-Chancellor
Acharya Nagarjuna University

M.A (Hindi)

Semester-IV, Paper - III

402HN21: COMPARATIVE LITERATURE

तुलनात्मक अध्ययन

Syllabus

पाठ्यांश

इकाई -1 : दलितों की विनती- कर्ण वीरनागेश्वर राव।

इकाई -2 : नदी का शोर- आरिगपूडि रमेश चौधरी।

इकाई-3 : बैसाखी -श्री बालशौरि रेड्डी।

इकाई 4 : तेलुगु रचनाकारों का संक्षिप्त परिचय।

इकाई 5: आन्ध्रों का अनुवाद साहित्य-तेलुगु से हिन्दी और हिन्दी से तेलुगु।

CONTENT

1. दलितों की विनती ---------- 1.1-1.13
2. नदी का शोर ---------- ---------- 2.1-2.11
3. बैसाखी ---------- 3.1-3.09
4. प्रो. पी. आदेश्वार राव-एक परिचय---------- 4.1- 4.15
5. तेलुगु रचनाकार-साहित्य-संक्षिप्त परिचय---------- 5.1- 5.15
6. आन्ध्रों का अनुवाद साहित्य : तेलुगु से हिन्दी और हिन्दी से तेलुगु----------6.1- 6. 09

1. दलितों की विनती

1.0. उद्देश्य

इस इकाई में हम तेलुगु भाषी हिन्दी के प्रख्यात रचनाकार श्री कर्ण वीरनागेश्वर राव के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। श्री कर्ण वीरनागेश्वर राव का जीवनी, काव्य, भाव-पक्ष, कला-पक्षों के साथ-साथ दलितों का विनती में पद्य रचना के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करेंगे।

रूपरेखा

1.1. प्रस्तावना

1.2. जीवन

1.3. दलितों की विनती- पद्य रचना

1.4. काव्य

1.5. भाव-पक्ष

1.6. कला-पक्ष

1.7. सारांश

1.8. बोध प्रश्न

1.9. सहायक ग्रंथ

1.1. प्रस्तावना

श्री कर्ण वीरनागेश्वर राव को हिन्दी और संस्कृत के उच्चकोटि का रचयिता माना जाता है। 'साहित्य-सौभाग्य' उनके मौलिक निबंधों का संकलन है, जिनमें उन्होंने कुछ आलोचनात्मक और व्यावहारिक निबंध लिखो हैं। 'कथामंजरी' उनकी मौलिक कहानियों का संकलन है। श्री कर्ण वीरनागेश्वर राव जी ने 'दलितों की विनती ' शीर्षक से एक ग्रंथ 'सतसाई' दोहा छंद शैली में लिखा है। इन इकाई में हम श्री कर्ण वीरनागेश्वर राव जी के रचनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करते हुए उनकी जीवनी, रचना, भाव-पक्ष, कला-पक्ष और मुख्य रूप से उनके द्वारा छंद शैली में लिपिबद्ध किया गया 'दलितों की विनती' नामक सतसाई के बारे में विस्तृत रूप में जानेंगे।

1.2. जीवनी

पंडित कर्ण वीर नागेश्वर राव जी का जन्म आंध्र प्रदेश के चीराला शहर से दो मील की दूरी पर स्थित जांडूपेटा गाँव में, उनके जातक चक्र के अनुसार 22 अक्तूबर 1900 को एक प्रतिष्ठित देवांग परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम नागाचार्य था और माता जी का नाम सीतम्मा। दोनों धार्मिक स्वभाव के थे। राव जी की आरंभिक शिक्षा-दीक्षा जांडूपेटा में ही सम्पन्न हुई। वे शैशव में स्व. श्री नीलकण्ठम् जी के यहाँ मातृभाषा तेलुगु का अध्ययन करते थे।

श्री राव जी का विवाह 11 वर्ष की अल्पायु में ही सज्जा तुलसम्मा के साथ संपन्न हुआ। बाद को वे घर बार छोड़कर काशी पहुँच गये और वहीं पर पाँच-छः वर्ष बिताए । काशी से लौटने के बाद पहले हिन्दी प्रचार के लिए 'मोरी' नामक गाँव गये । वहाँ लगभग एक वर्ष तक रहे। उन्होंने पुत्सल भ्रमरदास जी के यहाँ राजमंड्री में रहकर संगीत-शास्त्र का विधिवत् अध्ययन किया। पहले से ही पंडित राव जी अपने गुरुओं के प्रति अपार श्रद्धा की भावना रखते थे। नौकरी प्राप्त करने के बाद वे गुरुजनों की आर्थिक सहायता भी करने लगे। राव जी की दो पुत्रियाँ हैं और एक पुत्र है। पुत्रियों के नाम प्रसूनांबा और आदिशेष भूषणांबा है और उनके सुपुत्र का नाम राज शेषगिरि राव है।

पंडित वीर नागेश्वर राव जी का स्वतंत्रता आंदोलन में भी प्रमुख स्थान रहा । चीराला और पेराला के प्रांत स्वतंत्रता आंदोलन में बड़े प्रसिद्ध हुए । नगरपालिका के 'कर निराकरण आंदोलन' में आंध्ररत्न -दुग्गिराला गोपालकृष्णय्या के साथ उन्होंने भाग लिया। सन् 1942 में जब गांधीजी चीराला पधारे तब राव जी ने 'उनके भाषणों का तेलुगु अनुवाद किया। कुछ समय तक वे चीराला के रामकृष्णा टाकीज में हिन्दी फ़िल्मों के अनुवादक भी रहे।

पं. राव जी ने अपने प्रांत में बड़े मनोयोग से हिन्दी - प्रचार का कार्य किया। समाज के विविध क्षेत्रों के लोग जैसे डॉक्टर, वकील, व्यापारी, किसान आदि उनके यहाँ हिन्दी अध्ययन के लिए आया करते थे। इस तरह पं. नागेश्वर राव जी से घटित हिन्दी - संस्थान चीराला में एक सार्वजनिक संस्था के रूप में विकसित होता गया।

पं. राव जी के हिन्दी प्रचार के संबंध में डॉ. एस. पशुपति राव ने यों लिखा था - "उनके यहाँ पुलकम् रामकृष्णा रेड्डी जी के परिवार के 15-20 सदस्यों ने हिन्दी भाषा का अध्ययन किया था । श्री चिलंकुर्ति राजारेड्डी जी, जो हेतुवादी हैं, एम. एन. रॉय जी से प्रभावित हैं, उनके प्रिय शिष्य हैं। प्रो. जी. सुंदर रेड्डी जी व उनकी पुत्री भी चीराला में हिन्दी भाषा का अध्ययन कर चुके हैं। श्री सुंदर रेड्डी जी, राव जी के द्वारा प्रयाग, हिन्दी अध्ययन के लिए भेजे गये हैं। इस तरह श्री जी. सुंदर रेड्डी जी की उन्नति का श्रेय उन्हीं को प्राप्त है। " बहुत समय तक पंडित राव जी गांधीजी से प्रेरणा एवं प्रभाव ग्रहण करके अनेकों गाँवों में भ्रमण कर हिन्दी का अध्यापन करते रहे।

पं. राव जी की वेश- भूषा बड़ी साधारण थी। वे खद्दर पहना करते थे। वे बड़े सरल और मृदु स्वभाव के थे। बच्चों से लेकर बूढ़ों तक उनसे मिलकर बड़े प्रसन्न हुआ करते थे। हिन्दी प्रचार का कार्यक्रम वे बड़ी निष्ठा के साथ किया करते थे। वे अधिक परिश्रम करने में विश्वास रखते थे। हिन्दी के साथ-साथ वे मातृभाषा तेलुगु और देवभाषा संस्कृत का भी अध्यापन करते थे। हिन्दी और संस्कृत की परीक्षाएँ अनेक संस्थाओं की ओर से बहुत समय तक चलाते रहे। पंडित राव जी का व्यक्तित्व बड़ा ही आकर्षक एवं प्रभावशाली था। उन्होंने तेलुगु, हिन्दी और संस्कृत भाषाओं में अनेक रचनाएँ कीं।

नागेश्वर राव जी सन् 1944 में वेटपालेम के बंडल बापय्या हिन्दू हाईस्कूल में हिन्दी प्रचारक के रूप में काम करते थे। लेकिन, सन् 1958 में उन्होंने हाईस्कूल कमिटी के अनुचित व्यवहार की प्रतिक्रिया में, अपनी नौकरी के लिए त्यागपत्र दे दिया और बाद में उनके अनुनय-विनय को भी स्वीकार नहीं किया । परंतु उनके लिए जीवन भर किसी चीज़ की कमी नहीं रही है। वे बड़े निर्भीक एवं सत्यवादी थे। पं. राव जी सनातनी वंश में उत्पन्न होने पर भी वे एक सुधारवादी व आर्य समाज के अनुयायी थे। उन्होंने हिन्दी प्रचार तथा अस्पृश्यता निवारण- आंदोलन में सक्रिय भाग लिया।

संस्कृत भाषा के उनके पांडित्य को देखकर काशी की पण्डित सभा ने उन्हें 'विद्यावागीश' की उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया। अखिल भारतीय सांस्कृतिक संस्था भारती परिषद् पदाधिकारिणी, प्रयाग ने ज्योति पर्व के अवसर पर

दि. 27-7-1955 को सांस्कृतिक महाधिवेशन में राव जी के संपूर्ण संस्कृत ग्रंथों की सम्यक् समीक्षा के अनंतर, उन्हें 'साहित्य चक्रवर्ती' की उपाधि प्रदान की। इस महान् साहित्यकार एवं कवि का देहांत 26 सितंबर 1969 को हुआ।

1.3. दलितों की विनती- पद्य रचना

श्री कर्ण वीरनागेश्वर राव द्वारा विरचिच 'दलितों की विनती' एक सुंदर पद्य-रचना है। इस रचना के दो महत्वपूर्ण पक्ष हैं-

1. अस्पृश्य-निवारण मानव-ममता का विषय उदात्त और आकर्षक है।
2. आंध्र-निवासी प्रख्यात सुकवि हैं। उनकी मातृभाषा तेलुगु हैं फिर भी राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति उनका जो निर्व्याज प्रेम है वह प्रशंसनीय है।

दलितों की विनती एक विचार प्रधान संदेश प्रदान रचना है। भारतीय समाज में निम्न वर्ग वालों की विपन्नता तथा दयनीय दशा का चित्रण बड़े मार्मिक ढंग से हुआ है। विचार-प्रधान मुक्तक काव्य होने के कारण इसमें कल्पना की उड़ाने नहीं है। कवि ने अत्यंत सीधी एवं सरल शैली में हिन्दू समाज के निम्न वर्गों की विनती उन्हीं के साथ तादात्म्य प्राप्त कर प्रस्तुत की है। दलितों और दीनों की भावनाओं को कवि ने आत्मसात किया है और उसे वाणी लिबास पहना दिया है। इतना ही नहीं कवि सनातन धर्म पर विश्वास करते हैं। फिर भी धर्म की आड़ में जातिगत शोषण का वे विरोध करते हैं।

विनती करें कहाँ तक गुणियों ! प्रकट कीजिए प्रेम।
पवित्र हिन्दू मत का वृष्टि, सूचित करती नेम।
इस के शीतल-धर्म-बिंदु से, होती मन में शांति।
निम्न भावना स्वयं जगत की हठ जाने की क्रांति॥

कवि मानवतावादी है। मानवीय प्रेम में उसे अतीत आस्था है। मानव की सहज ईर्षा का वे विरोध करते हैं। ईर्षा के कारण ही मानवीय संबंध बिगड़ जाते हैं। इसलिए कवि सलाह देता है-

कूकर-सूकर आते-जाते, सदा घरों के पास?
किन्तु हमें आने की आशा, कभी नहीं पास।
मानव-जाति में ईर्षान्गि? क्यों हम है विनती दास।
इसे बुझाकर प्रेम-वारि से, करें दूर यह त्रास॥

कवि जातिवाद का विरोधी है। ऊंच-नीच से कोई मानवोचित प्रयोजन नहीं है। इसलिए कवि ईश्वर को विनती सुनाते हैं कि वे सब को सही धर्म की दीक्षा देकर इस नशा से बचा ले। दीक्षा-ज्ञान देकर उन्हें ऊपर उभार ने की कवि विनती करता है कि-

उच्च नीच कुल नहीं बचेंगे होते सब तो नष्ट।

कब तक रहते आँख मूंदकर, होते हम पथ भ्रष्ट।

हमें धर्म की दीक्षा देकर, कीजै अब उत्थान।

हो कटिबद्ध करेंगे सेवा दीजै दीक्षा-ज्ञान॥

कवि अपनी वैचारिकता को आगे बढ़ाता है। कवि सवाल करता है कि आर्य कौन है? और अनार्य ? क्या दलित आर्य नहीं है? इस रूप में सोचना ही गलत है। इस ऊंच-नीच के बारे में सोचने से प्रयोजन कुछ नहीं है। बल्कि इसका परिणाम सिर्फ दुख है। सहोदरों के बीच में यह ऊंच-नीच का भेद भाव उचित नहीं है।

आर्य कौन है? दलित-जाति का है आधार-स्तंभ।

सु-सभ्यत्व के भंडारों से स्वांत में बढ़ा दंभ।

पुनः आर्य भी अलग हो गया, दलितों से बन श्रेष्ठ।

दलित, दलित ही रहा आज भी, श्रेष्ठ दीरवता श्रेष्ठ॥

आगे कवि कहता है-

ऊँच-नीच की भेद भावना, सहोदरों में व्याप्त।

अलग जाति की नींव देश में, पुनः सर्वत्र प्राप्त।

दलित जाति की शाखाओं के, शताशः बने विभेद।

ऊँच-नीच का अंतिम-फल तो पाते सब हैं खेद॥

यहाँ पर कवि अस्पृश्यता को हिन्दू-धर्म पर कलंक रूप मानते हैं। हरिजन सेवा के अच्छे समर्थक हैं। गांधी जी के परम भक्त हैं। तथा और क्या चाहिए? 'दलितों की विनती' में उन्होंने अपने हृदय के उद्गार पांडित्य और भावुकता के साथ व्यक्त किये हैं।

कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं कि वे-

1.

"कालानुसरण गति की रचना करता कवि लोकेश।

भीति-मार्ग का सृष्टि क्रम तो रचता नहीं परेश।

सृष्टि विधाता की में अब भी षडरस मय-उद्गार।

अहो ! देखिये कवि रचना में नव-रस-मय-श्रृङ्गार॥"

2

"ऋषियोंने यह नाम क्यों रखा ? विश्व-विदित-उपयुक्त

मंत्र-तंत्र में आप कुशल हैं, सत्य-तत्त्व-संयुक्त।

युष्मद्ब्राह्मण विमल-नाम तब, होगा अवश्य सुयोग्य
मलिन रोग को ज्ञानौषध जब, कर देगा आरोग्य।"

3.

"गुलाब, चंपा, कुन्द, चमेली लेते करमें आप।
किंतु हमें तो छी. छी. कहते आते सम्मुख आप।
प्राकृत-चरित्र क्या कहता है, सत्व-तत्व-बलवान ?
सृष्टि-वस्तु तो जलबुद्बुद है, यह विज्ञों का ज्ञान॥"

4.

"ईश-प्रपत्ति शून्य हुई है बढ़ा हुआ है वेष।
बनावटी साम्राज्य बली है, है सदैव विद्वेष।
जाने बिना ध्वस्त होता है, आता नहीं कछु काम
मंत्री आदि महोदय, गण का स्मृति-पथ पाता राम।"

5.

"आन्ध्र-भाषा की लोकोक्ति ही अक्षरशः चरितार्थ।
वेदाध्ययन-निरत है वैदिक ज्ञान रहित है अर्थ।
लौकिक ज्ञान- वञ्चक बन कर डुबा चुका है देश।
तब के मूर्ख-शिष्ट-प्रणाली-वश में रहा प्रदेश॥"

1.4. काव्य

पण्डित कर्ण वीर नागेश्वर राव जी ने हिन्दी, तेलुगु एवं संस्कृत भाषाओं में अनेक ग्रंथों की रचना की है, जिनकी संख्या 32 है। उनके हिन्दी ग्रंथ संख्या में 6 हैं, जिनके नाम हैं 'आदर्श विवाह', 'कथा मंजरी', 'दलितों की विनती', 'सरल हिन्दी बोध', 'साहित्य सौरभ', 'हिन्दी तेलुगु बोधिनी'।

'दलितों की विनती' ही उनका काव्य ग्रंथ हैं, जिसमें 272 छन्द हैं। ये सभी छन्द मुक्तक हैं, जो हिन्दी की सतसई परंपरा तथा तेलुगु की शतक परंपरा के विकास में योग देनेवाले हैं। इसमें दलित एवं शोषित समाज के निम्नस्तरीय जनता की मानसिक वेदना को अभिव्यक्ति मिली है ।

1.5. भाव-पक्ष

'दलितों की विनती' एक विचार-प्रधान, संदेश - प्रधान रचना है। भारतीय समाज में निम्न वर्ग वालों की विपन्नता तथा दयनीय दशा का चित्रण बड़े मार्मिक ढंग से हुआ है। विचार - प्रधान मुक्तक काव्य होने के कारण इसमें कल्पना की उड़ानें नहीं हैं।

कवि ने अत्यंत सीधी एवं सरल शैली में हिन्दी समाज के निम्न वर्गों की विनती उन्हीं के साथ तादात्म्य प्राप्त कर प्रस्तुत की है। दलितों और दीनों की भावनाओं को कवि ने आत्मसात किया है और उसे वाणी का लिबास पहना दिया है।

हिन्दी के प्राचीन कवियों की तरह पण्डित कर्ण वीर नागेश्वर राव जी ने अपनी 'दलितों की विनती' का श्रीगणेश, गणेश वन्दना के साथ किया। इसमें प्राचीन भारतीय परंपरा के प्रति कवि की आस्था परिलक्षित होती है -

"श्री गणेशः भव भयहरः शुभकरः चिन्मय-रूप- महान।
विद्या सागरः बुद्धि विधाताः सकल कामना स्थानः
शंकर- पुत्रः बिशाख सहोदरः सर्वामर प्रधान।
सुन दलितों की विनती सम्प्रति सद्गुण-सत्व- निधान ॥"

कवि 'दलितों की विनती' गणेश जी की सेवा में प्रस्तुत करना चाहते हैं, ताकि भगवान गणेश की अपार कृपा उन पर रहे।

पं. राव जी का सनातन हिन्दू धर्म के प्रति अपार आस्था है। उनके अनुसार हिन्दी धर्म एवं संस्कृति आर्यों द्वारा निर्मित होने के कारण तथा उसके पुनीत आदर्शों के कारण सम्पूर्ण संसार में श्रेष्ठ एवं वरेण्य हैं । कवि के अनुसार आर्य शब्द जातिवाचक न होकर गुणाश्रित ही है। वे आर्यों में सदाचार एवं उच्च आदर्शों को देखने को पक्षपाती हैं । कवि के ही शब्दों में -

"धर्म तत्त्व ही आर्य-सु-सम्मत, जन-जन है तो आर्य।
आर्य-शब्द का अर्थ जानिये लोक, देश ही आर्य।
सु-दूर रहता पाप-कर्म से, वही विज्ञ है आर्य ।
सब से पूजा जाता है जो, वही आर्य है आर्य ॥"

वेद-विहित हिन्दू-धर्म में पहले ऊँच-नीच का भेद-भाव नहीं था, न लोग चर्म के वर्ण के आधार पर ही विभाजित थे। तब मनुष्य के हृदय को ही प्रधानता दी जाती थी-

"काले-गोरे सभी हैं मानव, क्यों चमड़े का भेद?
हृदय एक ही सार - वस्तु है, उसे बताता वेद ? "

हिन्दू धर्म की आधारशिला वर्ण-व्यवस्था है। यद्यपि आरंभ में कर्म की विशिष्टता के आधार पर वर्णों का विभाजन हुआ था, फिर भी सभी वर्गों को समाज में समान आदर प्राप्त होता था । कर्म और योग्यता के आधार पर व्यक्ति के वर्ण का निश्चय किया जाता था। कवि ने हिन्दू समाज के वर्ण-विभाजन के आधार को अत्यंत न्यायसंगत बतलाते हुए कहा -

"सर्व-विज्ञान- खनि महर्षि ने सब वेदों को देख।
लिख दी अपनी सम्मति यों तो खींच-खींच कर रेख।
विद्या से ही कुल की रचना, करते महानुभाव।
यह है निश्चित महाधर्म का दृढ़तर विमल सु-भाव॥"

ऐसे विकसित हिन्दू धर्म के प्रति कवि का प्रगाढ़ विश्वास था, क्योंकि उसमें प्रत्येक मनुष्य को स्नेह और शांति प्राप्त हो जाती थी -

"विनती करें कहाँ तक गुणियों! प्रकट कीजिये प्रेम।
पवित्र हिन्दू मत की वृष्टि, सूचित करती नेम॥"

परन्तु कालांतर में हिन्दू-धर्म के विविध वर्णों में ऊँच-नीच की भावना, पारस्परिक ईर्ष्या की भावना उत्पन्न हुई और सामाजिक शोषण की परम्परा विकसित हुई -

"आपस की ईर्ष्या मनुष्य में, महाभयानक रोग।
किसी धर्म में, किसी वेद में, कहीं नहीं यह योग।
साम्प्रदायिक विचार द्वारा, निकट हुई अब हानि॥"

हिन्दू धर्म के वर्ण विभाजन में बाद को असंगति तब प्रकट हुई जब कालांतर में व्यक्ति का वर्ण उसके कर्म से निर्धारित न होकर, व्यक्ति के माता-पिता के अनुसार माना जाने लगा । क्रमशः बुद्धि से काम करने वालों को उच्च वर्ण के तथा शारीरिक श्रम करने वालों को निम्न वर्ण के व्यक्तियों के रूप में माना जाने लगा। तब से हिन्दू धर्म उच्च - निम्न वर्गों में विभक्त हो गया और निम्न वर्ण वाले उच्च वर्ण वालों के हाथों में पिसकर सामाजिक एवं आर्थिक शोषण के लक्ष्य बने । इससे हिन्दू समाज में विषमता एवं संघर्ष की स्थिति आ गई। उच्च वर्ण वालों की दृष्टि में निम्न वर्ण वाले पशुओं से भी हीन हैं -

"नियम आप के सिर - आँखों पर, रख के करते कार्य।
कभी न टलते, प्रस्तुत रहते, समय सदा अनिवार्य।
इसके बदले पुरस्कार में, देते नाम अछूत।
हाय अभाग्य अनाथों पर ही, बल दिखलाता भूत॥
"वास्तव में अब हम मनुष्य हैं पशुओं से भी नीच।"
"कूकर सूकर आते-जाते, सदा घरों के पास।
किन्तु हमें आने की आशा, कभी नहीं है पास॥"

कविवर पं. राव जी हिन्दू धर्म के आभिजात्य वर्ण वालों की निर्दयता को ही निम्न वर्ण वालों का अन्य धर्मों को अपनाने का उत्तरदायी ठहराते हैं। उच्च वर्ण वालों की निर्दयता के कारण ही अनेक निम्न वर्ण के लोगों ने ईसाई धर्म जैसे अन्य धर्मों को अपनाया है -

"चाकर जनको विरुद दिलाते बड़ी कृपा के साथ।
सभी चाहते साहब बनना मत निन्दा के साथ।
ईसाई जो बनता उसको मिलता गौरव चिह्न।
गौरव पदवी जगती - तन में और दिलाते चिह्न ॥"

इस तरह हिन्दू धर्म के हरिजन, भंगी और यानादि जैसे निम्नतम वर्ण वालों को समान दृष्टि से देखने की आवश्यकता का कवि ने बार-बार स्मरण दिलाया है। उनके प्रति किये गये इस अन्याय और अनादर को दूर करने के लिए अनेक शताब्दियों से धर्माचार्यों ने तथा नेताओं ने प्रयत्न किया है। ऐसे महानुभावों में श्री रामचंद्र, महात्मा बुद्ध, शंकराचार्य, रामानुज, रामानंद, श्री रैदास, नायार, तुलसीदास, स्वामी दयानंद, मदन मोहन मालवीय, महात्मा गांधी अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं ।

कविवर पं. राव जी ने हिन्दू धर्म में ऊँच-नीच की भावना को हटाकर, उसमें विश्वभ्रातृत्व तथा समता के भाव जागृत करने की चेष्टा अत्यंत निष्ठा के साथ की। राव जी ने अपनी कविता के अधिकांश भाग को इन महानुभावों की सेवा परायणता तथा समदृष्टि वर्णन में लगाया। इस संदर्भ में एक-दो उदाहरण द्रष्टव्य हैं -

"खाये जूठे बेर राम ने, हो अतीव संतुष्ट।
उसी महात्मा बुद्ध ने कहा, करके वाद-विवाद।
जाति-पाँति कुछ नहीं जगत् में, करना नहीं प्रमाद ॥"

आधुनिक युग में विशेषकर गांधीजी ने अछूतों को हरिजन का गौरव नाम प्रदान किया। उन्होंने हरिजनों और भंगियों के प्रति अनंत स्नेह का परिचय दिया और उनकी उन्नति के लिए जीवन भर अथक परिश्रम किया। अतः कवि गांधीजी से यह याचना करते हैं कि वे, उनको हिन्दू समाज में सम्मान्य स्थान दिलावें

"वाणी - महिमा पूरी करने, देव! पधारे आप।
अंत्यजत्व को दूर भगा के, रक्षा कीजे बाप। "

इसी सिलसिले में हिन्दू धर्म में ही अलग शाखाओं में दीक्षित वैष्णव और शैवों के सामरस्य पर पं. कर्ण वीर नागेश्वर राव जी ने जोर दिया है। शैव और वैष्णवों के बीच के संघर्ष को पं. राव जी जन- विध्वंसक मानते हैं -

"पंडित मान्य गण-विवाद ही, करता जग का ध्वंस
शैव-वैष्णव- शंका- बुद्धि भी, करती जन विध्वंस ॥"

मानव समाज में अर्थ की महत्ता को बढ़ते देखकर पं. राव जी ने जनता की इस मनोवृत्ति पर करारा व्यंग्य किया है। अर्थ की आवश्यकता, उसकी महत्ता को स्वीकार करते हुए उन्होंने उसी की प्रभाव - परिधि में राज्य, बंधु तथा देव - देवताओं को भी स्वीकार किया है।

'धनम् मूलम् इदं जगत्' की आर्योक्ति का समर्थन करते हुए पंडित राव जी ने अर्थ की तुलना में मानव जीवन की अन्य इकाइयों का अवमूल्यन दिखाने की चेष्टा की । निम्नांकित पंक्तियों में अर्थ के सर्वव्यापी तथा सर्वगामी रूप को अत्यंत प्रभावोत्पादक ढंग से कवि ने चित्रित किया है

"टका राज्य है, टका बंधु है, टका ही आप्त- मित्र।

टका हीन- जन इस दुनिया में गिरा हुआ-सा चित्र।

टका ब्रह्म है, टका विष्णु है, टका पार्वती नाथ।

टके से मनुज हो सकते हैं विश्व - विश्रुत सनाथ ।।"

कवि ने यह अनुभव किया कि आधुनिक युग में नीति का ह्रास हो गया है और लोग अर्थ को किसी न किसी रूप में प्राप्त करने के लिए रिश्वत लेने लगे हैं। इस प्रकार की अनीति एवं भ्रष्टाचार की भर्त्सना करते हुए पं. राव जी ने यों लिखा है -

"छी-छी रिश्वत भारत को ही है अतीव - अपमान।

चौअन्नी-अठन्नी बाप रे ! है कितना सम्मान।

वरना उत्तर देने वाला नहीं मिलेगा क्लर्क ।

रिश्वत के कारण सब काग़ज़ देते दर्शन वर्क ।।"

कवि ने समाज में व्याप्त कृतघ्नता एवं कपटता की ओर अनेक स्थानों पर संकेत किया है। उनके अनुसार मानव-मात्र को धोखा देना बड़ा अन्यायपूर्ण कर्म है। कवि इस बेईमानी एवं धोखे को मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पाते हैं। उन्होंने धोखे को सर्वत्र देखा और उसकी ओर से भी लोगों को सचेत किया है -

"दगा बात में, दगा काम में, दगा सर्वत्र जान।

दगा मान है, दगा जाति है, दगा दान का दान।

दगा भाग्य है, दगा दलित है, दगा शांत स्वभाव।

दगा मोक्ष है, दगा रोग है, दगा मनुज का भाव ।।"

पंडित वीर नागेश्वर राव जी विद्या को किसी एक वर्ण की संपत्ति नहीं मानते। उन्होंने सवर्णों की तरह निम्न वर्ण के लोगों को भी शिक्षा पाने योग्य समझा है। अतः उच्च वर्ण वालों के सामने विनती करते हैं कि वे अपने निम्न वर्ण के भाईयों के प्रति सहानुभूति का प्रदर्शन करें और उन्हें शिक्षित बनायें--

"ज्ञान कमाकर कभी आप से रहें काम में दूर?

आनंदित हो, हाथ बँटावें, नहीं बनेंगे क्रूर।

शिक्षा देकर पथ बताइये, तजिए निज अभिमान।

ज्ञान-सूर्य के किरण स्पर्श से होंगे हम गुणवान ।।"

उन्होंने गुरुकुल शिक्षा पद्धति को भारतीय संस्कृति के अनुकूल स्वीकार किया है, जिसमें विद्यार्थी पर कुछ गुरुओं के तथा आचार्यों के आदर्श जीवन का प्रभाव रहता है । ऐसी शिक्षा-पद्धति के द्वारा बड़े पैमाने पर राष्ट्रीय शिक्षा तथा हिन्दू संस्कृति की रक्षा हो सकती है। निम्नांकित पंक्तियों में गुरुकुल विद्या-पद्धति का समर्थन यों किया गया है -

"गुरुकुल विद्या पद्धति जग में कूलंकष-विज्ञान।

मनुज-मनुज में समता - गीता कर देगी-प्रज्ञान।

जाति-नाम लो जाते नहीं विद्यार्थी के वृन्द।

ऐसे विद्यालय - शिक्षार्थी बने वृन्द के वृन्द ।।"

पं. कर्ण वीर नागेश्वर राव जी ने दलितों की शिक्षा के साथ-साथ नारी- स्वातंत्र्य और नारी - शिक्षा का भी अत्यंत मनोयोग के साथ समर्थन किया । दक्षिण भारत में नारी - जागरण की अग्रदूत श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख की सेवाओं की प्रशंसा यों की है -

"दुर्गा जी की शिष्याएँ सब जानती नहीं जात।

उनको होती कहीं वेदना कहीं श्रवण कर जात।

मानव-जाति में फिर क्यों जाति? कीजै मनुजोद्धार।

जाति-पाँति की हानि बताकर कीजै - नीति- विचार ।।"

पं. राव जी ने राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल समर्थक होने के कारण अंग्रेज़ी शिक्षा का तथा उसे भारत में स्थायी बनाने वाले लार्ड मैकाले की कटु आलोचना की है –

"मैकाले की माया में सब फँसे बने हैं चित्र।

पर-भाषा अनिवार्य रूप का पद पा चुकी विचित्र।

'मैकाले' की नींव देश में पकड़ गई है तूल।

शिक्षा का सम्मान्य-मार्ग तो बना बनाया मूल ।। "

इस प्रकार हम देखते हैं कि पंडित कर्ण वीर नागेश्वर राव जी की मुक्तक कविता की विषयवस्तु में बड़ा वैविध्य है। उन्होंने मानव जीवन के कतिपय क्षेत्रों को अपने चिंतन का लक्ष्य बनाया है।

पं. राव जी की कविता में अनुभूति की तीव्रता, पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होती है । कवि ने दलितों के साथ तादात्म्य प्राप्त किया है और उनके पक्षधर होकर वकालत करने की चेष्टा की है। अपने इस कर्म के द्वारा कवि ने हिन्दू समाज में सर्वथा उपेक्षित बहुसंख्यक दलित जनों की पीड़ाओं को अत्यंत सहज अभिव्यक्ति दी है।

1.6. कला पक्ष

पं. कर्ण वीर नागेश्वर राव जी की कविता का बहिरंग पक्ष भी सशक्त है। 'दलितों की विनती' मुक्तक छंदों का संकलन है, जिसमें कवि ने अत्यंत प्रांजल भाषा का प्रयोग किया है। इसकी भाषा सरल, संस्कृत के तत्सम एवं तद्भव शब्दों से ओतप्रोत है । कहीं-कहीं इन्होंने अरबी-फारसी शब्दों का भी प्रयोग आवश्यकता के अनुसार किया है । कहीं-कहीं इनके क्रिया-प्रयोगों में ब्रजभाषा का प्रभाव लक्षित होता है जैसे ' दीजै, कीजै' आदि। इनकी भाषा विचार प्रधान एवं संदेश प्रधान कविता के अनुकूल अत्यंत सरल, सहज और अभिधा प्रधान है। उनकी भाषा की सरलता प्रत्येक पंक्ति में झलकती है -

"दया, धर्म का मूल मंत्र है, देह मूल अभिमान।
कहाँ गया? अब परम तत्त्व यह, नहीं ज्ञान विज्ञान।
क्रिया सिद्धि में मन लगाइये, देर न कीजै आप।
सुधा सूक्तियाँ, दूर करेंगी, विकल हृदय का ताप ।।"

इस काव्य में दलितों की दीन-हीन परिस्थितियों पर कवि की अपार सहानुभूति प्रकट हुई है। ऐसी दशा में करुण एवं शांत रसों का परिपाक पाया जाता है। दलितों की दयनीय दशा में कवि ने करुण रस का संचार किया है –

"विनती सुनकर, दया दिखाकर, हरें हमारा त्राण।
नियम-भयावन सुनें तुम्हारे, थर-थर कँपते प्राण।
इस कठघर में कब तक रहना ? आप हमें आधार।
गिड़गिड़ाना मन में लाइये, कीजै दलित-सुधार ।।"

पं. राव जी ने कहीं-कहीं निर्वेद प्रधान शांत रस का भी विधान अपनी कविता में किया है। गांधीजी के आदर्शों का साकार रूप सेवा समाज के संबंध में कवि यों कहते हैं, जिसमें शांत रस की प्रधानता है –

"गांधीजी के सु-स्वप्नों में सेवा समाज एक।
सेवा-समाज-दीक्षा में ही भरी हुई है टेक।
बिना टेक के कार्य-कुशल तो पाते निज अधिकार ?
अतः टेक की प्राप्ति के लिये पार करें उस पार ।।"

कवि की रचनाओं में व्यास शैली और समास शैली के दर्शन होते हैं। विचार और भाव के अनुरूप पं. राव जी ने दोनों शैलियों का समुचित प्रयोग किया है। उनकी सरलतम व्यास शैली का एक उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य है -

"प्रेमी शिष्य ने रामानंद, नाम सुना रैदास।

उसने गुरु की आज्ञा से ही त्यागा अपना त्रास।

भक्ति-भाव से भरे ग्रन्थ तो, उसने लिखे अपार।

उनके द्वारा शांति सिद्धि का, करते लोग प्रचार ॥"

कवि ने भाव के अनुकूल समास शैली का भी प्रयोग किया है। इनके समास सरल, अति मधुर तथा परिनिष्ठित हैं -

"विश्व-मानव-भ्रातृ-भावना विलसित होवें शीघ्र।

करुणा-वरुणालय- समर्चना घर - घर होवें शीघ्र ।

* * *

जन-हित-कार्य-कलाप - सिद्धि में सदैव होवे होड़।

भारत-जननी-भाग्य-मर्म का निर्मल होवे होड़ ॥"

कविवर पं. राव जी ने अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए अलंकारों का भी प्रयोग किया है। शब्दालंकार और अर्थालंकारों का प्रयोग आवश्यकता के अनुसार यत्र-तत्र किया है। निम्नांकित पंक्तियों में अनुप्रास की छटा द्रष्टव्य है –

"भारत पर जो भक्ति-भाव है कीजै उसे प्रयोग।

विश्व-मानव-भ्रातृ-सिद्धि की ज्योति का हो सुयोग।"

अर्थालंकार में कवि ने कहीं-कहीं साम्य मूलक अलंकारों का प्रयोग किया है, जिनमें रूपक की प्रधानता है। पं. राव जी की निम्नांकित पंक्तियों में रूपक का प्रयोग द्रष्टव्य है -

"विद्या सागर! बुद्धि विधातः सकल कामना स्थान।

भक्ति-भाव-रत्नों के उत्तम चित्र पाइये आप।"

कवि ने अपनी कविता में एक ही छन्द का प्रयोग किया है और वह है सरसी । इस छन्द की प्रत्येक पंकित में 27 मात्राएँ होती हैं और 16 मात्राओं के बाद यति स्थान है -

"चाकर जनको विरुद दिलाते / बड़ी कृपा के साथ। (16+11 मात्राएँ)

सभी चाहते साध्व बनाना / मत निंदा के साथ ॥"

अंत में इतना तो कहा जा सकता है कि पं. कर्ण वीर नागेश्वर राव एक सफल तेलुगु भाषी हिन्दी कवि हैं। उन्होंने 'दलितों की विनती' नामक काव्य के द्वारा हिन्दी की मुक्तक काव्य परंपरा को आगे बढ़ाकर अत्यंत सराहनीय कार्य किया

है। उनकी इस काव्य कृति पर हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि एवं समीक्षक श्री वियोगी हरि ने अपना अभिमत यों प्रकट किया ।

1.7. सारांश

श्री कर्ण वीर नागेश्वर राव की सुंदर पद्य रचना 'दलितों की विनती' मैंने बड़े उत्साह के साथ पढ़ी और वह मुझे सुंदर प्रतीत हुई है। इसके दो कारण हैं - एक तो यह कि अस्पृश्यता निवारण अथवा मानव- समता का विषय उदात्त और आकर्षक है। दूसरे आंध्र- निवासी प्रख्यात सुकवि हैं । मातृभाषा उनकी तेलुगु है। किन्तु राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति उनका जो निर्व्याज प्रेम है वह मुख्यतः प्रशंसनीय है।

अस्पृश्यता को वे हिन्दू धर्म पर कलंक रूप मानते हैं। हरिजन सेवा के अच्छे समर्थक हैं। गांधीजी के परम भक्त हैं । तब और क्या चाहिए । 'दलितों की विनती' में उन्होंने अपने हृदय के उद्गार पांडित्य और भावुकता के साथ व्यक्त किये हैं। मुझे आशा है कि आंध्रदेश के सुकवि श्री कर्ण वीर नागेश्वर राव की यह रचना साहित्य एवं समाज दोनों ही क्षेत्रों में आदर का स्थान पायेगी।

1.8. बोध प्रश्न

1. कर्ण वीरनागेश्वर राव – जीवनी के बारे में लिखिए।
2. कर्ण वीरनागेश्वर राव – काव्य के बारे में लिखिए।
3. कर्ण वीरनागेश्वर राव – भाव-पक्ष के बारे में लिखिए।
4. कर्ण वीरनागेश्वर राव – कला-पक्ष के बारे में लिखिए।
5. कर्ण वीरनागेश्वर राव – दलितों की विनती पद्य रचना पर विस्तृत व्याख्या लिखिए।

1.9. सहायक ग्रंथ

1.दलितों की विनती- कवि- श्री कर्ण वीरनागेश्वर राव-प्रकाशन- आंध्र भारती प्रकाशन मंदिर, वाल्तेर-आर्षा प्रेस, विशाख ।

डॉ. सूर्य कुमारी पी.

2. नदी का शोर

2.0. उद्देश्य

इस इकाई में हम तेलुगु भाषी हिन्दी के प्रमुख रचनाकार श्री आरिगपूडि रमेश चौधरी के बारे में जानेंगे। आरिगपूडि-व्यक्तित्व, कृतित्व एवं जीवनी के बारे में जानते हुए उन्होंने खुद की भावनाओं को उनकी रचनाओं में ही किस प्रकार समेकित किया इसके साथ-साथ समाज में उच्च वर्गों से आम जनता किस प्रकार कुचले जा रहे है इन सभी पहलुओं को इस इकाई में विस्तृत जानकारी प्राप्त करेंगे।

रूप रेखा

2.1. प्रस्तावना

2.2. आरिगपूडि -जीवनी

(अ) व्यक्तित्व

(आ) कृतित्व

2.3. आरिगपूडि- उपन्यास

(क) उपन्यास का महत्व

(ख) नदी का शोर- संक्षिप्त परिचय

(ग) नदी का शोर उपन्यास में संस्कृति के विशिष्ट पहलुओं का चित्रण

2.4. सारांश

2.5. बोध प्रश्न

2.6. सहायक ग्रंथ

2.1. प्रस्तावना

साहित्य मानव के विचार तथा अनुभूतियों को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है। साहित्य का सिंहावलोकन करने से ज्ञात होता है की भाषा व साहित्य के विविध आयामों से ही मानव की अभिव्यक्ति अधिक हुई है। कहानी, एकांकी, उपन्यास और कविता आदि के सहारे लेखक अपने अनुभवों को प्रस्तुत करता है। आधुनिक युग में ऐसे कई महान वह साहित्यकार हैं जिन्होंने अपनी लेखनी को सभी क्षेत्रों में चलकर अपनी मेधाशक्ति तथा प्रतिभा का परिचय दिया है।

2.2. आरिगपूडि -जीवनी

स्वतंत्रता के पश्चात हिंदी के समग्र साहित्य में परिवर्तन होता हुआ दिखाई देता है। कई लेखकों की रचना करके हिंदी साहित्य की श्रीवृद्धि करने का प्रयास कर रहे थे। ऐसे लेखकों में आर्य पुरी का नाम सर्वोपरि दिखाई देता है। जिन्होंने उपन्यास और कहानी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आधुनिक काल में नए कहानीकार के रूप में आरिगपूडि जी का एक विशिष्ट स्थान है। वे नई कहानी के प्रमुख सूत्रधाराओं में से एक है आर्य पुरी रमेश चौधरी उपन्यास और नई कहानी के एक महत्वपूर्ण और विशिष्ट रचनाकार है और साथ ही साथ एक संपादक भी है। हिंदी साहित्य का समग्र उन्नति ही आरिगपूडि जी के जीवन का प्रमुख लक्ष्य रहा है।

किसी लेखक की रचनाओं पर विचार करने से पूर्व उनके जीवन एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डालना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि लेखक के व्यक्तित्व का प्रभाव उसकी रचनाओं पर अवश्य पाया जाता है। लेखक सामाजिक प्राणी होने के कारण जीवन की तत्कालीन परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। आरिगपूडि की रचनाओं पर विचार करने से पूर्व उनकी जीवनी तथा उनके आकर्षक व्यक्तित्व पर प्रकाश डालना नितांत आवश्यक है।

आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के आयूरु नामक गांव में हुआ उनके माता-पिता माणिक्यंबर और वेंकटरमैया जी थे। बाल्यावस्था श्री आरिगपूडि के पिता राष्ट्राभिमानी होने के कारण उन्हें अपना बेटा विदेशी भाषा अंग्रेजी सीखे, यह उन्हें कतई पसंद नहीं था। आरिगपूडि बाल्यावस्था में ही हरिद्वार में स्थित गुरुकुल कांगडी में अध्ययन करने के लिए। वे 7 साल के बाद एक बार उन्हें गांव ले आये। 20 वर्ष तक वहीं रहकर विद्याभ्यास किया। आवश्यक के दिनों में वे उत्तर प्रदेश जाया करते थे उन्होंने गुरुकुल में हिंदी और संस्कृत के साथ-साथ वेदों का भी अध्ययन किया। वह हिमालय की तराई की ओर जाया करते थे। अपने विद्याभ्यास के समय तेलुगु प्रांत में ना रहने के कारण वे तेलुगु भाषा को अधिक नहीं जानते थे। वे हिंदी को ही अपनी मातृभाषा के रूप में अपनाया। तेलुगु तथा अंग्रेजी भाषाओं का ज्ञान तो उन्हें स्वाध्याय से ही प्राप्त किया था।

श्री आरिगपूडि अनेक वर्षों तक संस्कृत, हिंदी तथा वेद, उपनिषदों का अध्ययन किया। बाद में वे गुरुकुल कागंडी के 'स्नातक' भी बने। उस्मानिया विश्वविद्यालय के भूतपूर्व रीडर, डॉ. पी. विद्यासागर गुरुकुल कागंडी में आरूगपूडि के सहपाठी थे। अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त उन्हें अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत तथा दक्षिण की अन्य भाषाओं तमिल, कन्नड़ और मलयालम का भी अच्छा ज्ञान था।

(अ) व्यक्तित्व

संसार में हर व्यक्ति का व्यक्तित्व सूचना होता है। वैसे ही डॉ. अरिगपूडि रमेश चौधरी का व्यक्तित्व एक सहृदयी है। आरिगपूडि जी का स्थान आज के साहित्यिक क्षेत्र में विशिष्ट और महत्वपूर्ण है। जिनकी अपेक्षा नहीं की जा सकती। उनका व्यक्तित्व शालीन और प्रभावशाली था। उन पर विभिन्न प्रभाव पड़े हैं फिर भी उन्होंने उनके अनुरूप उनका व्यक्तित्व एक खाद खाने में ढला है। आरिगपूडि के व्यक्तित्व के बाह्य एवं आंतरिक पक्ष दोनों मिले-जुले थे। ऊपरी तौर पर वे सीधे सरल दिखाई देते थे, परंतु आंतरिक रूप से वे बड़े कोमल थे।

डॉ. रमेश चौधरी आरिगपूडि जी उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार, एकांकीकार, पत्रकार, इतिहासकार, ब्रॉडकास्ट होने के साथ-साथ एक अच्छे आलोचक भी हैं। रमेश चौधरी जी के बारे में उपेंद्रनाथ जी लिखते हैं - रमेश चौधरी जी ने अपने से बड़ीकुशलता पूर्वक उस समस्या के सब पहलुओं को छुआ है, अपने पात्रों से अपनी सहानिभूति या उपेक्षा देखकर बड़ी सफाई से वे पाठकों तक पहुँचा देते हैं और यही उनकी कला का सफलता है। रमेश चौधरी निरन्तर अपनी कला को माँझते रहें और उनका साहित्य हिन्दी में दक्षिण का सबल प्रतिनिधित्व करें।

(आ) कृतित्व

श्री रमेश चौधरी देखने में गंभीर व्यक्ति होते हुए भी सरलता, सहानुभूति, करुणा और भावनाओं का अवतार थे। उनकी भावुकता में सौहार्धता एवं हृदय कंपन परिलक्षित होता है। वे अपनी पीड़ा को अपनी कलम के द्वारा व्यक्त करके पीड़ा से मुक्त हो जाते थे। ग्रामीण लोगों के जीवन और प्राकृतिक सौंदर्य उपन्यासकार के व्यक्ति को काफी आकर्षित कर गये। अपने सम्पूर्ण साहित्य में ग्रामीण जीवन और वहाँ के वातावरण का जीव चित्रण करके अपनी भावुकता का परिचय दिया। बचपन से ही माँ- बाप का साधारण प्यार भी उन्हें नहीं मिला था।

वे जिस प्रेम और ममता से वंचित हुए थे। मानो उसे अपने औपन्यासिक पात्रों से प्राप्त करने की चेष्टा करते थे। इसी लिए उनके सभी पात्र उनके जीवन के ही एक अभिन्न अंग के रूप में दर्शन देते है। उनके हृदय के अनेक पक्षों की विविध रूपों में अभिव्यक्ति देते है। इस प्रकार अपने द्वारा रचे हुए पात्रों के सुख, दुःखों के साथ वे कमी कभी कभार भावुक हो जाते थे।

उनके जीवन की एक और रोचक घटना है। निधन तिथि के तीन चार दिन पहले वे गाँधी सिनेमा देखने गए थे जब वे घर पहुँचे तो पसीने से भीगा हुआ शरीर व्यथाभरित था। मुख मंडल से पूर्णा जी को दर्शन दिए। इसी प्रकार संबान्धियों के संस्मरण मात्र से उनकी आँखों मर जाती थी। इस प्रकार श्री आरिगपूडि के जीवन की कई घटनाओं से आँखों में आँसू आ जाते हैं। उन्होंने अपनी करुणा एवं भावुकता पूर्ण व्यक्तित्व द्वारा अपने हृदय की कोमलता एवं सहृदयता को प्रत्येक अवसर पर अभिव्यक्त किया।

उन्होंने हिंदी में पच्चीस उपन्यास, सात कहानी संग्रह, चार नाटक, चार अनूदित रचनाएँ, बाल साहित्य आदि लिखा है। उनके उपन्यासों में आदरणीय, पतितपावनी, धन्य भिक्षु, सारा संसार मेरा, नदी का शोर आदि प्रसिद्ध हैं। उनके उपन्यासों में वस्तु वैविध्य को लीक रहती है। उनके उपन्यासों में मुख्यतया परंपराओं एवं रूढ़िवादिता के प्रति सचेष्ट एवं जागरूक होने की पुकार तथा मानवीय मूल्यों व मानवता को बचाये रखने का आग्रह मिलता है।

2.3. आरिगपूडि-उपन्यास

डॉ. रमेश चौधरी आरिगपूडि ने सभी विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई हैं। कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, जीवनी साहित्य अनुसंधान एवं समीक्षात्मक साहित्य आदि सभी विधाओं में उनकी रचनाएँ मिलती हैं। वे एक महान पत्रकार होकर भी उपन्यासकार के रूप में उभकर सामने आते हैं। फिर भी एक सफल कथाकार के रूप में और स्वातंत्रोत्तर उपन्यासकारों में अपना नाम जोड़ लिया है। आज हिन्दी जगत में इनका नाम उल्लेखनी हैं। वैसे तो साहित्य क्षेत्र में

इनका आगमन 1953-57 के बाद ही हुआ है। इनका भूले भटके नामक सामाजिक उपन्यास 1956 में प्रकाशित हुआ था। इनके उपन्यास, संस्कृति परंपरा, इतिहास, मनोविज्ञान, प्रगति, चेतना, आधुनिक बोध, आस्था, अनास्था, कुंठा, निराशा आदि साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों के समस्त आयों को लेकर चलते हैं। इनकी प्रकाशित, उपलब्ध उपन्यास इस प्रकार हैं-

1.प्रथम उपन्यास 'भूले-भटके' सन् 1956 में प्रकाशित हुआ था।

2.'खरे खोटे' (1957)

3.'दूर के ढोल' राजनीतिक उपन्यास है।

4.'आदरणीय' (1958) भारतीय राजनीतिक उपन्यास है।

5.'धर्मभिक्षु' (1958) एक ऐतिहासिक उपन्यास है।

6.'अपनी करनी' (1959) श्रेष्ठ उपन्यास है।

7.'अपने-पराये' (1960) एक श्रेष्ठ राजनीतिक उपन्यास है।

8.'यह भी होता है' (1961) एक पारिवारिक उपन्यास है।

9.'सांठ-गांठ' (1962) एक श्रेष्ठ सामाजिक उपन्यास है।

10.'सारा संसार मेरा' (1962) एक और श्रेष्ठ सामाजिक उपन्यास है।

11.'झाड फानूस' (1964) एक और सशक्त सामाजिक उपन्यास है।

12.'निर्लज' (1965) नारी जीवन पर आधारित एक और सशक्त उपन्यास है।

13.'उल्टी गंगा' (1965) एक श्रेष्ठ राजनीतिक एवं सामाजिक उपन्यास है।

14.'चरित्रवान' (1966) एक और श्रेष्ठ मनोवैज्ञानिक उपन्यास है।

15.'उधार के पंख' (1967) एक और सशक्त सामाजिक उपन्यास है।

16.'उधार के पंख' (1967) एक और सशक्त सामाजिक उपन्यास है।

17.'नदी का शोर' (1975) एक ग्रामीण जीवन पर आधारित उपन्यास है।

18.'चमत्कार' (1976) एक और सामाजिक उपन्यास है।

19.'अभिशाप' (1981) एक और चर्चित अनुसूचित तथा अनुसूचित जनजातियों से संबंधित उपन्यास है।

20. 'ये छोटे बड़े लोग ' (1982) एक और श्रेष्ठ सामाजिक उपन्यास है।

21.'सरला' (1983) एक और सशक्त सामाजिक उपन्यास है।

22.'अंतिम अरण्य' (1984) एक यथार्थवादी सामाजिक उपन्यास है।

उपन्यास साहित्य में विषमताओं को लेकर चलते के साथ यथार्थ रूप में समस्याओं का समाधान खोजने का सही प्रयास हुआ है। बहुत ही मौलिक और यथार्थ है। वे समाज की कुसंगति और विषमताओं को अपने ही औपन्यासिक कला के द्वारा चित्रित करने में सक्षम है। उनकी उपन्यास कला सृजनात्मक कला है। इसलिए उनके औपन्यासिक कला को उपन्यास साहित्य में ऊँचा स्थान दिया जाता है। डॉ. आरिगपूडि जी की एक विशेषता यह रही है कि वे अपनी रचनाओं में अपने युग की हर समस्याओं को लेकर उपन्यास की रचना करते हैं। जैसे कि 'गागर में सागर' भरने की क्षमता उनमें दिखाई देती है। इसलिए उन्हें स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास के सफल उपन्यासकार रूप में माना जाता है। इस कारण उनके औपन्यासिक कृतित्व बहुत ही मौलिक है, तभी तो इन्हें दक्षिण भारत का सर्व श्रेष्ठ उपन्यासकार माना जाता है।

(क) उपन्यास का महत्व

हिन्दी गद्य में उपन्यास साहित्य का अपना विशेष स्थान है। उपन्यास एक ऐसी विधा है, जिसके माध्यम से समाज और व्यक्ति जीवन को अपनी कसौटी पर उतारकर निजी स्थिति को दर्शाया जाता है।

कथा साहित्य की इस विधा द्वारा लेखक अपनी वाणी को देने का प्रयास करता है। जीवन के अनेक आयामों को यथार्थ परिवेश में उजागर करने में ही लेखक का लक्ष्य बना हुआ होता है। उसी प्रकार लेखक भी प्रस्तुत जीवन की विविधताओं तथा वैशिष्ट्यताओं को अंकित करने के साथ उन्हे मानवीय धरातल पर लाने का प्रयास करता हैं।

इसी कारण रमेश चौधरी आरिगपूडि जी एक बहुमुखी प्रतिमा सम्पन्न साहित्य कार है। उन्होंने उपन्यास कहानी, नाटक, निबन्ध, जीवनी, बाल साहित्य, आदि की रचना की है।

विशेषकर आरिगपूडि अपने उपन्यास साहित्य में प्राचीन एवं नवीन तत्वों की सुंदर संयोजना की है। उनके उपन्यास तात्विक दृष्टि से सफल बन पड़े हैं। उपन्यासों की वस्तु योजना, वस्तु संगठन, संवाद कला, चरित्र चित्रण परिवेश चित्रण, उद्देश्य निरूपण, भाषा शैली आदि की दृष्टि से अभिनय है। साहित्य के लक्ष्य में मानव जीवन का ही चित्रण होता है। साहित्य की विभिन्न विधाओं में कथावस्तु का सीधा सम्बन्ध भी मानव जीवन से होता है।

कथावस्तु में मानव जीवन और उसमें होने वाले व्यवहार, समस्याएँ, द्वंद्व, अंतर्रहस्य स्वप्न आदि का उल्लेख होना चाहिए, कथावस्तु की योजना मौलिकता संभवता, सुसंगठितता, रोचकता सहजता को ध्यान में रखकर की जानी चाहिए।

उपन्यासों के संदर्भ में वस्तु योजना एक विशिष्ट पारिभाषिक शब्द के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। हिन्दी उपन्यासों के प्रारंभ काल में वस्तुयोजना पर इतना ध्यान नहीं दिया जाता रहा है। लेकिन धीरे-धीरे परिस्थितियाँ बदलती

गयी और कथा प्रकृति में भी परिवर्तन आया। आज वस्तु योजना उपन्यास का प्रधान और अनिवार्य तत्व बन गया है। वस्तु विन्यास के इस महत्व को सभी विद्वानों ने बहुमत से स्वीकार किया है।

आरिगपूडि जी के उपन्यास में कथा योजना बड़ी कलात्मक है। जो मानवी जीवन से संबंधित है। कहीं अपने स्वानुभावों का प्रस्तुतीकरण है तो कहीं जीवन की यथार्थता का साफ चित्र चित्रित है। घटनाओं की बहुलता के बावजूद भी उनकी श्रृंखलाबध्दता में कोई कमी नहीं है।

(ख) नदी का शोर- संक्षिप्त परिचय

आरिगपूडि रमेश चौधरी से लिखित इस उपन्यास का प्रकाशन 1975 में हुआ है। यह एक सामाजिक उपन्यास है। जिसमें दलित, पीड़ित, शोषित वर्ग के संयम और उनके मन में स्थित विद्रोह भाव के अंकन के साथ विशेषकर दलित चेतना के दर्शन होते है और यह उपन्यास आधुनिक राजनैतिक के दल में फंसे हुए आंध्र के एक ग्राम की कथा प्रस्तुत करता है। इसमें नगर जीवन की सुंदर झांकी भी और प्रस्तुत रचना की कहानी में समाज जागृत होनेवाली नई चेतना की कहानी भी है। जो प्रतीकात्मक संकेत के रूप में नगर और ग्राम के संबंध में चित्रित हुआ है।

लेखक का मानना है कि सहनशीलता का बांध टूटने पर उसे सम्हालना बहुत मुश्किल होता है। नदी के बांध के टूटने पर होनेवाला शोर जनता की सहनशीलता के टूटे बाँध के शोर को लेखक ने तुलनात्मक दृष्टि से जनशक्ति की महत्ता प्रतिपादित की है। जमींदार की भ्रष्ट राजनीति के कारण जो दुष्परिणाम सामने आते है, उससे सारे ग्रामीण लोग सजग होकर संगठित हो जाते है। जिस से गाँव में शांति और सुव्यवस्था का वातावरण निर्मित होता है।

आनंद राव की बदौलत ही कोटय्या आज ऊँचे स्थानतक पहुँचा हुआ है। इसके साथ-साथ 'नदी का शोर' उपन्यास में लेखक ने यह चित्रित किया है कि धर्म के नाम पर लोगों को धोखा देनेवाले ढोंगी पूजारियों की निंदा, करके अन्त में उनका पतन दिखाकर भारत के सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों को पुनर्जीवित करने का सफल प्रयास हुआ है। साथ ही साथ - लेखक ने अन्नपूर्णा के माध्यम से नारी समस्या का एवं राजगोपाल के माध्यम से नारी ही पुरुष के लिए कैसी समस्या बन जाती है, इसका यहाँ यथार्थ निरुपण किया है। अन्नपूर्णा कहती है- "हम पुरुषों को बढ़ावा देती है, उनको उस तरह नीचे नहीं घसीटती जिस तरह वह स्त्रियों को घसीटते है। जानते है, सार्वजनिक कार्य के लिए स्त्री को क्या कीमत देनी होती है? वह अपने पति के लिए ही परायी हो जाती है, उसकी पत्नी उससे अधिक बड़ी हुई नहीं कि वह खिझने लगता है" राजनीति के मुद्दे द्वारा इच्चुक नारी समस्या का निरूपण अन्नपूर्णा के द्वारा स्पष्ट करने में लेखक को सफलता मिली है।

राजगोपालराव और वेणुगोपलराव दोनों भाई है। गाँव के रहवासी है। सम्मिलित परिवार के सदस्य होने के कारण दोनों भाई मिलकर खेती करते है। परंतु राजगोपालराव निस्संतान होने के कारण वेणुगोपालराव की पाँच संतान को ही अपनी संतान सम्मान समझते थे। वे ज्यादा लिखे पड़े थे। शिक्षा के प्रति उनका लगाव था, मिलनसार थे, निःस्वार्थ भावना से ग्राम सेवा में जुटे तरुणों के नेता थे। बूढ़े बच्चे भी उन्हें दिलों से चाहते थे। फिर भी फूल तोड़ने का आरोप उनपर लगाने से वे नाराज नहीं हुए। बगावत करना उन्हें आया ही नहीं।

अपने गाँव की तरक्की के लिए वे जी मेहनत करते रहे, शिक्षा को अधिक आवश्यक समझकर गाँववालों को समझाने की कोशिश करते रहे।

पुराने आचार विचार छोड़कर नए आधार अपनाने के लिए प्रेरित करते रहे। स्वयं पर होते हुए शोषण स्वयं ही निपटालें। इस तरह वे लोग मानवतावादी के मसीहा बनकर ग्रामीण जनता की समस्याएँ, भ्रष्ट राजनीति जमींदारी प्रथा, शोषण राजनीति में ग्रामीण स्त्रियों का सहभागा आदि विषयों को लेकर जन जागृति करने में लग गये थे।

'नदी का शोर' एक यथार्थ वादी उपन्यास होने के कारण इसमें आँचलिकता को तत्व समाविष्ट हो पाये हैं। जमींदारी प्रथा, भलीभांति जनता का शोषण, जमींदारी को ही सर्वस्व मानकर चलने वाली ग्रामीण प्रथा, गोपालराव, कोटेश्वर राव द्वारा ग्रामीण जनता में जागृति स्त्रियों का भी राजनीति में प्रवेश आदि मुद्दों का विवेचन खूब हो पाया है।

'नदी का शोर' उपन्यास के राजगोपाल राव ने अपने निस्वार्थ सेवा से गाँव के - युवावर्ग को स्वस्थ राजनीति के लिए प्रेरित किया "इनकी राजनीति किसी विशेष वाद की न थी इनकी मातृभाषा तेलुगु थी, उसी में ये भाषण देते और ग्रामवासियों का प्रतिनिधित्व करते वे स्वार्थी न थे इसलिए ग्रामवासी उनका आदर करते थे। वे अपने क्षेत्र में प्रभावशाली थे। ईशुदास बाँध का एवं अछूतों का मुखियाथा। जमींदार को चिढ़ाने के लिए वह उसी का वेष पहनकर सभा में आ जाता था तथा है। बाँध की दुर्घटना का रहस्य मुख्य मंत्री तक पहुँचाने का भी कार्य करता था। मौका मिलन पर भरी सभा में सबका पोल खोलकर रखा देता था। जिसके बारे में लेखक का कथन स्पष्ट है कि वह अछूतों के नयी पीढ़ी का था जो अपनी स्थिति को चुपचाप सह लेना नहीं चाहता था। वह अपने पुरुषों की तरह गूंगा नहीं है। जो जिंदगी भर बिना चूँ चाँ किये हर तरह की मुसीबतों झेलते रहे। वह बोल सकता था और आत्म विश्वास के साथ बोला था। इस तरह प्रस्तुत रचना में ग्रामीण जनता की समस्याएँ, भ्रष्टराजनीति, शोषण पर लेखक द्वारा तीखा व्यंग्य कहा गया है। ग्रामीण स्त्रियों के भविष्य पर प्रकाश डालने के साथ-साथ नए मुध्दों को छेडने की परिकल्पना लेखक में हो पाई है।

(ग) नदी का शोर उपन्यास में संस्कृति के विशिष्ट पहलुओं का चित्रण

'नदी का शोर' उपन्यास ग्रामीण जनता की समस्याएँ भ्रष्ट राजनीति और जमींदारी प्रथा के कारण ग्रामीण जनता का शोषण राजनीति में, ग्रामीण स्त्रियों का सहभाग राजजाग्रति आदि अनेक विषयों का कथन इसमें चित्रित किया गया है।

'नदी का शोर' रमेश चौधरी आरिगपूडि जी का प्रसिद्ध सामाजिक उपन्यास है। यह उपन्यास आन्ध्र प्रदेश के ग्रामीण जीवन का दर्पण-सा लगता है। इसमें क्षेत्रीय संस्कृति के विशिष्ट पहलुओं का सुन्दर चित्रण पाया जाता है। इस रचना की भूमिका में आरिगपूडि ने स्वयं इस प्रकार लिखा था – "इस उपन्यास की कहानी, समाज में हो रही नई चेतना की कहानी है - बहुत कुछ प्रतीकात्मक है।" इस उपन्यास के रचना-काल को प्रभावित करनेवाले युगीन स्वरूप के सम्बन्ध में भी लेखक ने यों लिखा "पर इस थोड़े से काल में ही इतने सारे परिवर्तन हो गये हैं - कुछ औद्योगिक, कुछ उद्योगजनित सामाजिक, कुछ साहित्यक, कुछ विद्या सम्बन्धी, कुछ मूल्यगत।" इस से स्पष्ट होता है कि भारतीय समाज के प्रत्येक क्षेत्र में युग की नवीन स्थितियों का प्रभाव रहा है।

वैज्ञानिक साधनों के कारण जीवन मूल्य भी बदल गये हैं, तथा किसानों में, महिलाओं में, राजनीतिक क्षेत्र में जागृति इस तरह अनेक क्षेत्रों में जन जीवन सुखमय ही है और उनमें जागृति व्याप्त हो गई। आरिगपूडि का यह उपन्यास आधुनिक युग का वास्तविक दर्पण है। ऐसे उपन्यास ही यह प्रमाणित करते हैं कि साहित्य समाज का प्रतिबिंब है।

भारतीय सभ्यता व संस्कृति बहुत प्राचीन हैं। संस्कृति के अंतर्गत धर्म का भी समावेश होता है। मनुष्य का स्वभाव है धर्म-भीरु होना। किसी भी मनुष्य को हम धर्म की आड़ में अपनी इच्छानुसार मोड़ सकते हैं। साधु, सन्त, ढोंगी, फकीर, जोतिष्य और गृह दशा कहकर कुछ लोगों को अपनी ओर आकृष्ट करते हैं। यही भारतीय संस्कृति की एक कमजोरी है। इस भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत इस प्रकार के धार्मिक ढकोसले, अंध-विश्वास प्रचलित थे और अब भी है। इनका उल्लेख आरिगपूडि ने प्रस्तुत उपन्यास **'नदी का शोर'** में इस तरह किया है "जो भी कुछ कीमत हो, दीवान साहब से ले लेना। पूजा करो और ताबीज़ भी लाओ। कोई खास बात तो नहीं हुई है, मगर जिन्दगी का क्या भरोसा है।" भारतीय संस्कृति में यह विश्वास फैला हुआ था कि जो व्यक्ति जब कभी संकट में पड़ जाता है तब उसे किसी ज्योतिषी के पास जाने से कोई न कोई उपाय, प्राप्तकर उस कष्ट से मुक्ति दिलाने की संभावना है। ऐसे विश्वास छोटे से आदमी से लेकर देश के राजा, महाराजा, मंत्री ओहदेदार, प्रधानमंत्री आदि में भी मौजूद हैं। इसी बात का उल्लेख उपन्यासकार की निम्नलिखित पंक्तियों में किया गया है। "वे घर में न रह सकी', वे बाहर सड़क पर गयीं। एक बस आयी और वे उसमें सवार हो गयीं कस्बे में एक ज्योतिषी था। जब वे कभी दुविधा में होतीं या भविष्य अंधकारमय लगता तो वे उनके पास जातीं।" प्राचीन काल से साधु-सन्त और ज्योतिषी, लोगों को अपने इशारे पर नचाते थे, लेकिन लोगों में ज्यों-ज्यों शिक्षा का प्रचार बढ़ गया त्यों-त्यों उन में अंध विश्वास दूर होने लगे, साधु-सन्त और ज्योतिषियों पर लोगों में भक्ति और श्रद्धा कम होने लगी। आजकल लोग हर बात को हेतु वादी दृष्टि से परखते हैं और सम्यक निर्णय पर आ जाते हैं। लोगों में सामाजिक जागृति पनपने लगी है।

डॉ. रमेश चौधरी आरिगपूडि जी का 'नदी का शोर' उपन्यास प्रधानतः राजनीतिक उपन्यास है। आजादी के बाद चुनावों के कारण ग्रामीण जनता तथा नागरिक लोगों में काफी सुधार आया है। इसके पहले धर्म के प्रचारक, साधु-सन्त, ज्ञानी एवं ज्योतिषी, जमींदार तथा रईस समाज को धोखा देते थे और अपने उल्लू सीधा कर लेते थे। लेकिन आजादी के बाद आम जनता में काफी चेतना आई है, अपनी मलाई वह स्वयं सोचने लगी थी। समाज के उच्च वर्षों की सलाहों पर अनुसार अब लोग नहीं चलते। अपना निर्णय स्वयं कर लेते है। उसका प्रति- बिंब आरिगपूडि के 'नदी का शोर' उपन्यास में देखने को मिलता है।

महात्मा गांधी जी ने महसूस किया था, कि कुल आबादी की आधी संख्या में महिलाओं को आजादी की लड़ाई में शामिल किये बिना स्वतंत्रता की प्राप्ति असंभव है। इस विचार से गांधी जी ने महिलाओं को स्वतंत्र-संग्राम में शामिल होने की प्रेरणा दी थी। उन्हीं की प्रेरणा के फलस्वरूप विजयलक्ष्मि पंडित, सरोजिनी नायुडु, इन्दिरा गांधी इत्यादि महिलाओं ने राजनीतिक क्षेत्र में पदार्पण किया था। आजादी के बाद भी विधान सभा तथा संसद सभा आदि के चुनावों में महिलाओं को ही प्रधानता दी गई है। फलस्वरुप महिलाएँ भी चुनाव लड़ती रही, निर्वाचित होती रही, एम. एल. ए. मिनिस्टर आदि बनती रही। इस तरह घर के चार-दीवारों के अन्दर रहनेवाली महिलाएँ निर्वाचित होकर देश की राजधानी

दिल्ली तथा राज्यों की राजधानी में जाती है और कार्यभार संभालती है। यह सब तत्कालीन सामाजिक जीवन के फलस्वरुप ही संभव हुआ है।

'नदी का शोर' उपन्यास का प्रधान पात्र एम. एल. ए. श्रीमती अन्नपूर्णा है। एक जमींदार ने उन्हें चुनावों में खड़ा करवाया और उनकी हर तरह की सहायता की। इस तरह जमींदार की सहायता से श्रीमती अन्नपूर्णा एम. एल. ए. बन गयी। एम. एल. ए. बनने के बाद श्रीमती अन्नपूर्णा की अड़ में जमींदार कुटुम्बराव ठेकेदार बनकर तरह-तरह के बुरे अफवाहें से त्रस्त है। अन्नपूर्णा के पति भी पत्नी के व्यवहारों से ऊबकर एक हरिजन बालिका को रख लेता है।

अन्नपूर्णा को अचानक हैदराबाद जाना हुआ तो वह वहाँ के एक बड़े होटल में टहरी हुई है- इस बात को जानते हुए जमींदार साहब भी उससे मिलने उस होटल में गये जहाँ वह टहरी थी। यहाँ की एक घटना का वर्णन इस प्रकार है – "जमींदार कमरे में गये, और आन्नपूर्णा को अपनी बाहों में ले लिया और उनका चुम्बन करने लगे। ऐन्द्रिक लालस का इससे बढ़िया प्रदर्शन सम्भव न था। हो सकता है कि उनके संयम ने उनको बेबात कर दिया हो। अन्नपूर्णा को यह सब अखर रहा था। उन्हें जमींदार से इस प्रकार के दानवीय व्यवहार की आशा न थी। उनके कहने पर वे होटल आ तो गई थीं, पर जब से आयी थीं अपने को कोस रहीं थीं।"

अन्नपूर्णा एक साथ क्रोध और पश्चात्ताप में झुलसने लगीं। वे जानती थीं कि उनके पति उनसे संतुष्ट न थे, पर उन्होंने कभी कल्पना भी न की थी, कि वह इतनी दूर जायेगी।

भारतीय नारी, परम्परा को तोड़कर काफी आगे बढ़ तो गई है। घर की चार- दीवार पारकर वह विधान सभा तथा संसद सभा तथा संसद सभाओं के लिए निर्वाचित होती है। फिर कुछ महिलाएँ मंत्री पदों तक प्राप्त करती है और उन्हें सुचारु रूप में संभालती भी हैं। श्रीमती अन्नपूर्णा भी ऐसी प्रगतिशील महिलाओं में से एक है। अपने पति के पत्र को देखकर वह यों पछताती हैं अन्नपूर्णा सोचने लगी - गणेश का मेरे जीवन में क्यों इतना महत्व है, उन्होंने कुछ भी तो नहीं किया ..... घर का पालन पोषण भी तो नहीं करते थे। कभी ठीक तरह प्यार से बोले तक भी नहीं, यह एक विचित्र सम्बन्ध है। कितना पवित्र..... और यह मुझे तब मालूम हो रहा है जब बिना कहे वे घर से चले गये थे।

परम्परा, रीति-रिवाज, वातावरण, समाज सभी उन पर मार बने हुए थे, वे स्वतन्त्र थीं, पर पहली बार सोची कि उनके पति उनके लिए इतने मनोवैज्ञानिक संबंध रखते है, यह सम्बन्ध दुर्बल हो, अनिश्चित हो, पर वह उनके दुश्चरित्र से भी नहीं टूटा था।" इस संदर्भ में स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों, परस्पर आस्था एवं उनके बीच के मानसिक लगाव को रेखांकित किया गया है।

बम विस्फोट के कारण बांध खराब हो गया। उससे ग्रामीण जनता में सन्देह पैदा हुआ कि बांध खराब होने का कारण जमींदार ही है। इस प्रकार के सन्देह से उन्होंने अन्नपूर्णा के घर की दीवारों पर कुछ निन्दा जनक वाक्य लिखे। "कोटेश्वर राव ने अन्नपूर्णा के घर पर कुछ गन्दे पोस्टर लगे देखे थे। उनमें निन्दा की गई थी.... गाँव जल रहा है, और वह जमींदार के घर बीन बजा रही है, बिल्ली हज पर गयी हुई है जाने और क्या-क्या दीवारों पर लिखा गया था। उस आग ने, जिसने शक्तिशाली जमींदार को राख कर दिया था, अन्नपूर्णा को भी न छोड़ा था।"

बांध खराब होने के बाद एम. एल. ए. श्रीमती अन्नपूर्णा ने भी सन्देह किया था कि बान्ध तुड़वाने में जमींदार का हाथ था। इसी विचार को उसने एक सभा में व्यक्त किया। "मुझे भी एक कैफियत देनी है। मैंने भी एक सबक सीखा है, प्रजातन्त्र में हर कोई भले ही वे रोजी-रोटी के लिए कुछ भी करता हो, समाज में उसकी कुछ भी स्थिति हो, बराबर है। मैंने सोचा था कि जमींदार बड़े हैं, पर मैं उनके द्वारा ठगी गई, छली गई, मैं उनको दोष नहीं देती, अपने को दोष दे रही हूँ, सार्वजनिक जीवन में हर किसी को हमेशा होशियार रहना चाहिए।"

आजादी के बाद भारतीय समाज में जो प्रगति हुई है उसमें असंतुष्ट होकर 'नदी का शोर' उपन्यास का एक पात्र राजगोपाल राव ने अपना मत यों प्रकट किया- हम में कमियाँ बहुत हो सकती हैं, पर सबसे भंयकर कमी है, चरित्र की कमी। हमारे सार्वजनिक जीवन में आदर्श तो बहुत हैं पर आचरण की शक्ति और निष्ठा कम है। गलत मूल्य हैं। इसलिए जमींदार जैसे कुलीन व्यक्तियों की धांधली है।

हमारे समाज में उनकी तरह के व्यक्ति बहुत से हैं, वे ऐसे सामन्ती वर्ग का एक नमूना है, जो औद्योगिक मूल्यों को अपना रहा है। हमें इनसे बचना होगा। बांध बनाने और बांध तोड़ने के दो अलग वर्ग हैं। उनको जोड़ना मुश्किल है, पर हम उनसे सतर्क हो सकते हैं और होना ही चाहिए और हम सतर्क तभी हो सकते हैं, जब हम में राजनैतिक व सामाजिक जीवन होगा।

मैं फिर दुहराना चाहता हूँ, हमें आवश्यकता है, चरित्र की और नैतिक जीवन की- बिना इनके कुछ भी प्रगति नहीं हो सकती और वह बान्ध हमें सचेत करता है, संभलकर रहो - आँखें मूंदकर न चलो। दूसरों का पेट काटकर अपना पेट न भरो।" उक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है मानव-जीवन के विविध पक्षों तथा समकालीन जिन्दगी के विविध आयामों का यथार्थ परक चित्रण प्रस्तुत करते हुए अलोच्य उपन्यातकार ने वर्तमान युग के समग्र चित्रण को अत्यन्त कुशलता के साथ प्रस्तुत किया है। इसमें तत्युगीन राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक विदूपताओं का मर्मस्पर्शी चित्रण करके युग-स्वरूप के दुर्बल पक्ष को रेखांकित करने के प्रयत्न में डॉ. रमेश चौधरी आरिगपूडि को आशातीत सफलता प्राप्त हुई है और आन्ध्र प्रदेश के ग्राम- प्रान्तों की जीवन शैली तथा वहाँ के रीति-रिवाज, आचार-व्यवहारों का भी अंकन सशक्त रूप में किया गया है।

2.4. सारांश

उपर्युक्त उद्रण से यह स्पष्ट होता जाता है कि जमींदार जैसे लोग अन्नपूर्ण जैसे प्रजा प्रतिनिधियों का तन, मन, धन लूट लेते हैं। एम. एल. ए. श्रीमती अन्नपूर्णा के पति गणेश अपनी पत्नी तथा जमींदार पर सन्देह करके एक दिन एक पत्र लिखकर टेबिल पर रखकर घर छोड़कर चला जाता है। उस पत्र को पढ़कर श्रीमती अन्नपूर्णा चिंताग्रस्त होती है। उसमें ये लिखा गया है। मेरे लिए न खोजना, हम जिस तरह अपना जीवन बिता रहे हैं, उस तरह हमेशा नहीं बिता सकते। राष्ट्र को बनाने के लिए घर को फूंक देना जरूरी नहीं है। मैंने काफी भुगत लिया है। आरिगपूडि रमेश चौधरी ने समाज में सदियों से चलते आनेवाली राजनीतिक शोषण को नदी का शोर नाम से उनकी सारी भावनाओं को चित्रित किया गया है।

2.5. बोध प्रश्न

1. आरिगपूडि-व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में लिखिए।

2. आरिगपूडि- नदी का शोर का परिचय दीजिए।

3. नदी का शोर में चित्रित पहलुओं के बारे में लिखिए।

4. नदी का शोर उपन्यास का महत्व के बारे में विस्तृत रूप में लिखिए।

2.6. सहायक ग्रंथ

1. नदी का शोर-आरिगपूडि।

2. हिन्दी साहित्य का इतिहास एवं युग प्रवृत्तियाँ- डॉ. शिवकुमार शर्मा

3. हिन्दी उपन्यास एक सर्वेक्षण- महेन्द्रर चतुर्वेदी।

4. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य और ग्राम जीवन- विवेकी रॉय।

5. हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद- डॉ. त्रिभुवन सिंह।

6. हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन- डॉ. गणेशन

7. उपन्यास शिल्प और प्रवृत्तियाँ – डॉ. सुरेश सिन्हा।

8. हिन्दी उपन्यास सामाजिक चेतना- डॉ. कुँवरलाल सिंह।

9. हिन्दी उपन्यास सिध्दांत और समीक्षा – डॉ. मक्खनलाल शर्मा।

10. हिन्दी उपन्यास की शिल्पविधि का विकास – श्रीमती ओम शुक्ल।

डॉ. सूर्य कुमारी पी.

3. बैसाखी

3.0. उद्देश्य

इस इकाई में हम तेलुगु भाषी हिन्दी के प्रख्यात रचनाकार श्री बालशौरि रेड्डी बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। श्री बालशौरि रेड्डी के व्यक्तित्व, कृतित्व और जीवनी के बारे में जानते हुए उनकी कहानी संग्रह बैसाखी के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करेंगे।

रूपरेखा

3.1. प्रस्तावना

3.2. बालशौरि रेड्डी

3.3. बालशौरि रेड्डी -व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.4. बालशौरि रेड्डी -बैसाखी

3.5. सारांश

3.6. बोध प्रश्न

3.7. सहायक ग्रंथ

3.1. प्रस्तावना

दक्षिण भारत में अपनी मूल भाषा के साथ-साथ हिन्दी लिखने वालों में मोटूरि सत्यनारायण, बालकृष्णय्या, श्री आलूरि बैरागी आदि रचनाकारों के क्रम में श्री बालशौरि रेड्डी का नाम भी बहुत प्रचलित है। वे मूलतः तेलुगु भाषा-भाषी साहित्यकार थे, लेकिन राष्ट्रभाषा हिन्दी की निरंतर साधना करते-करते हिन्दी भाषा पर उनकी गहरी पकड़ बन गई। वे दक्षिण भारत के पहले हिन्दी साहित्यकार है, जो सच्चे अर्थ में साहित्य-कृषक कहे कह सकते हैं।

हिन्दी, तमिल, तेलुगु और अंग्रेजी भाषाओं में उन्होंने बाल साहित्य की रचना की। वे साहित्यकार, उपन्यासकार, निबंधकार, एकांकीकार, अनुवादक, पत्रिका संपादक के रूप में प्रसिद्ध हैं। इतना ही नहीं बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार थे, साहित्य में लेखक का व्यक्तित्व के रूप में परिलक्षित होता है।

3.2. बालशौरि रेड्डी

डॉ. बालशौरि रेड्डी का जन्म आन्ध्र प्रदेश में हुआ। मातृभाषा तेलुगु है। 1946 में हिंदी प्रचारिणी सभा की रजत जयंती के मौके पर इनकी मुलाकात गांधी जी से हुई. गांधीजी के राष्ट्रीय आंदोलन के 14 सूत्रीय रचनात्मक कार्यक्रमों में हरिजन उद्धार, नारी शिक्षा, कुटीर उद्योग के साथ हिंदी सीखना भी शामिल था।

गांधीजी के कहने पर बालशौरि ने हिंदी सीखना शुरू किया। आगे चलकर उन्होंने विशारद, साहित्यरत्न और साहित्यालंकार की परीक्षाएं उत्तीर्ण की हिंदी सीखने के लिए काशी और प्रयाग गए जहां उनका परिचय निराला, महादेवी वर्मा, बच्चन जैसे बड़े साहित्यकारों से परिचय हुआ।

3.3. बालशौरि रेड्डी -व्यक्तित्व एवं कृतित्व

बाल शौरि रेड्डी हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक और बाल साहित्यकार हैं। उनका जन्म ग्राम मोल्लर गुडर, जिला कण्ण गुडर आंध्र प्रदेश में हुआ। वे मूल रूप से तेलुगु भाषी हैं। उन्होंने दक्षिण भारत की हिन्दी प्रचार सभा मद्रास में लेखन एवं संपादन कार्य किया।

बालशौरि रेड्डी ने काफ़ी दिनों तक मासिक बाल पत्रिका चंदामामा के संपादक रहे। इसके पश्छात वे भारतीय भाषा परिषद कलकत्ता में नियुक्त हुए। संप्रति स्वतंत्र लेखन में संलग्न हैं। मौलिक लेखन के अतिरिक्त उन्होंने हिन्दी से तेलुगु और तेलुगु से हिन्दी में अनुवाद भी किया है।

रेड्डी जी ने निबंध लेखन के प्रति रूचि दिखाई। फिर गगम्भीर अधअययन मनन के उपरान्त क्या साहित्य को अपना प्रिय विषय बन लिया था। रेड्डी जी अपनी रचनाओं के लिए अक्सर अपने प्रादेशिक परिवेश एवं इतिवृत्ति को अपना लेते हैं।

प्रादेशिक संसक्ति, आचार-विचार, इतिहास को अपनी शैलीगत प्रतिभा के साथ उनन्यासों में पिराकर हिन्दी पाठकों के सम्मुख एक अनौखा और मौलिक रंग-रूप प्रस्तुत करते हैं। इसके प्रकार उनको रचनाओं के माध्यम के तेलुगु भाषियों का जीवन-यापन, तौर-तरीके, समाज और इतिहास का परिचय का परिचय हिन्दी पाठकों को मिल जाता है।

• कृतित्व

हिन्दी साहित्य के साथ तेलुगु के प्राचीन एवं आधुनिक साहित्य, इतिहास एवं संस्कृति का गहन अध्ययन ही नहीं किया, अपितु उन रचनाओं एवं रचनाकारों पर हिन्दी में सफलतापूर्वक ठीका टिप्पणी भी की थी। इस सन्दर्भ में इनका यह वक्तव्य उल्लेखनीय है- पुस्तक रूप में प्रकाशित मेरी पहली कृति 'पंचामृत' है।

इसमें तेलुगु साहित्य की धारा का संक्षिप्त परिचय तथा छंद, अलंकार आदि का विवेचन भी किया है। अंत में शब्दार्थ भी परिशिष्ट में जोड़ दिये गये है। हिन्दी की प्रमुख पत्रिकाओं में इसकी अच्छी समाहित हुई। विद्वानों की भी प्रशंसाएँ प्राप्त हुई। यह कृति सन् 1954 में प्रकाशित हुई और 1955 में सरकार द्वारा पुस्तकाकृत भी हुई थी।

इसी सिलसिले में श्री रेड्डी जी ने सन् 1964 में 'तेलुगु साहित्य का इतिहास' नामक महत्वपूर्ण एवं मौलिक रचना का प्रण्यन किया था। इसको ग्रंथ के लिखने में इनको काफी परिश्रम करना पड़ा। इस संदर्भ में रेड्डी जी ने कहा- मैं ने गत दस-बारह वर्षों में तेलुगु साहित्य का जो अध्ययन एवं अनुशीलन किया, उसका सुन्दर पल यह ग्रंथ है।

साढ़े तीन सौ पृष्ठों में प्रकाशित यह ग्रंथ हिन्दी समिति, सूचना-विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रकाशित है। इस ग्रंथ के प्रणयन में मैं ने जितना श्रम किया, उतना शायद अन्य किसी भी ग्रंथ कि लिए नहीं किया।

3.4. बैसाखी

अमावस्या की संध्या। भयंकर उमस। मद्रास महानगर के नागरिक इस तरह अपने-अपने निवासों से बाहर निकलकर आ रहे थे, जैसे चींटियाँ अपनी बॉबी से कतार बाँधकर निकल पड़ती हैं।

इस त्यागराम नगर का पांड़ी बाजार खचाखच भरा हुआ था। लोग धीमी चाल से तरह चल रहे थे, मानो जल्दी घर पहुँचना नहीं चाहते हों। अचानक सड़क की बिजली की सारी बत्तियाँ जल उठीं। लग रहा था, जैसे नीले आसमान के तारे एक साथ जलकर जगमगा रहे हों।

रोज की भाँति 'शांता भवन' में चाय पीकर मैं अपने चुने गिने मित्रों के साथ गपशप करते सड़क की पटरी पर चलने लगा। आज पानगल पार्क में छोटी-सी बैठक थी। रामकृष्ण मिशन हाईस्कूल से होकर गुजरने लगा। बैठक में अभी आधा घंटा की देरी थी।

हमारी मंडली की अगली पंक्ति में चलनेवाले सुब्रह्मण्यम सहसा रुक गए। पटरी पर लोगों की भीड़ थी। अगर हमें आगे बढ़ना था तो सड़क पर उतरकर पटरी को पार करना जरूरी था। पर पटरी पर भीड़ देख सहज ही हम लोगों में कुतूहल जाग उठा। हमारी मंडली के सदस्य एक-एक कर भीड़ में घुस गए। मेरे पैर उस भीड़ को देख कर ठिठक गए। मैं भी किनारे हो तमाशा देखने लगा।

एक अधेड़ उम्र की महिला अंग्रेजी में धड़ाधड़ किसी के भविष्य का रहस्योद्घाटन कर रही थी। उसके हाथ में चार सेल वाला एक लंबा टॉर्चलाइट था। हाईस्कूल के अहाते - की दीवार पर हस्त रेखाओं वाला एक रंगीन चित्र टँगा हुआ था। वह महिला एक युवक के दाएँ हाथ की उँगलियाँ पकड़कर टॉर्च की रोशनी में हस्त रेखाओं का अध्ययन करते हुए युवक के भूत, वर्तमान और भविष्य की गुत्थियाँ सुलझा रही थीं।

महिला ने सहसा गंभीर चेहरा बनाकर पूछा -"हाँ भाई, यह तो बताओ, तुमने अपनी नौकरी से त्याग-पत्र क्यों दिया? तुम्हारी रेखाएँ तो बताती हैं कि इस वक्त तुम्हें मासिक हजारों की आमदनी है।"

अपना सच्चा हाल सुनकर युवक का चेहरा खिल उठा, वह तड़ाक से बोला- आखिर मैं क्या कर सकता था? मेरी शादी पक्की हो गई थी। मैं जिस लड़की से प्यार करता था, उस लड़की के माँ-बाप मेरे साथ अपनी कन्या का विवाह करने को तैयार न थे। पर अल्जीरिया में मेरे नौकरी लगने की बात सुनकर दो साल बाद वह तैयार हो गए।

उस लड़की ने भी जिद पकड़ रखी थी कि वह किसी अन्य युवक के साथ शादी नहीं करेगी। हालाँकि उसके पिता ने दो-चार रिश्ते ठीक कर रखे थे। आखिर लाचार होकर लड़की के माँ-बाप ने अपनी सम्मति दी। मेकैनिकल इंजीनियरिंग पास करने के बाद पाँच-छह महीने तक बेकार रहा। आखिर एक कंपनी में नौकरी भी लगी तो मासिक मुश्किल से पाँच-छह सौ रुपए हाथ लग रहे थे।

उस कन्या के पिता तो चार संख्या का वेतन पाने वाले के साथ ही रिश्ता कायम करना चाहते थे, हॉल में ही जब उन्हें मालूम हुआ कि मैं विदेश में छह हजार रुपए मासिक वेतन पाता हूँ और दस हजार रुपए तक पहुँच जाऊँगा, वे लोभ में पड़ गए। पर शर्त रखी कि लड़का दो महीने के अंदर शादी करने को तैयार हो जाए तो हम मान लेंगे, वरना एक चार्टेड अकाउंटेंट के साथ रिश्ता पक्का कर लेंगे।

मैंने एक महीने की छुट्टी के लिए अर्जी दी, लेकिन तीन साल के लिए मेरा कॉन्ट्रेक्ट था जब छुट्टी न मिली, मैं इस्तीफा देकर चला आया। युवक से कैफियत जाहिर हुई।

ज्योतिषी महिला ने ढ़ाढ़स बँधाते हुए कहा – "तुम्हें निराश होने की कोई बात नहीं, आज से 80 दिनों के अंदर तुम्हें लिबिया से बुलावा आएगा। आठ हजार रुपए की नौकरी मिल जाएगी।"

ये शब्द सुनकर युवक मारे खुशी के उछल पड़ा। झट से अपना हाथ खींच लिया। पैंट की जेब में हाथ डालकर बटुआ निकाला।

एक सौ रुपया का नया नोट उस महिला के हाथ में थमाते हुए बोला – "मामी जी ! (आन्टी) अपनी तीस वर्ष की आयु में मैंने पहली बार सच्ची बात सुनी। आज सुबह की डाक से ही मुझे एक चिट्ठी मिली है। वह मेरे एक दोस्त ने

लीबिया से भेजी है। उसमें उसने लिखा है कि मेरे वास्ते आठ हजार रुपए मासिक की नौकरी ठीक कर रखी है। एक महीने के अंदर चले आने को बताया है। लेकिन वह नौकरी मुझे जरूर मिल जाएगी न। "

क्यों नहीं? यह बात तो तुम्हारी हथेली पर स्पष्ट अंकित है। वरना हमें कैसे मालूम होता?" महिला ने दृढ़ स्वर में उत्तर दिया।

अब युवक की प्रसन्नता की सीमा न रहीं। वह दस का एक नोट और बख्शीश के रूप में देकर उसी वक्त वहाँ से चल दिया, मानो वह यह खबर अपनी प्रेमिका को तत्काल देना चाहता हो।

फिर क्या था, एक साथ अनेक हाथ महिला की ओर बढ़े। उस महिला ने विजय-गर्व में आकर एक बार सबके चेहरों को परखा। एक का हाथ अपने हाथ में ले बड़ी देर तक जांचती रही, फिर गहरी सांस लेकर बोली- सुनो भाई, आज ग्राहकों की बड़ी भीड़ लगी है।

मैं विस्तार से तो बता नहीं सकती, पर सूत्र - रूप में सारी बातें संक्षेप में बताऊँगी। बुरा न मानो तुम्हारा योग बहुत ही बढ़िया है। तुम्हें संपत्ति की कमी नहीं है। तुम्हारी पत्नी बड़ी सुशील है। किफायत से काम चला लेती है। चार बच्चे हैं, स्वस्थ हैं।

निजी मकान है, मोटी तनख्वाह वाली नौकरी भी है। पर तुम बैसाखी के बल पर चलना चाहते हो। अपने पैरों की ताकत पर तुम्हें विश्वास नहीं है !" ये शब्द कहकर वह महिला चुप हो गई।

अधेड़ उम्र का वह व्यक्ति कौतूहल से भर उठा। अपनी शंका का समाधान पाने के ख्याल से बोला- " बहन जी, तुम्हारी बात मेरी समझ में न आई ! साफ-साफ क्यों नहीं बता देती? यह बैसाखी क्या है?"

महिला मंद-मंद मुस्कुराकरा बोली – "मैं इन सबके सामने सच्ची बात कह दूँ तो बुरा न मानोगे न?"

"इसमें बुरा मानने की क्या बात है? ये लोग आखिर मेरे परिवार वाले नहीं, रिश्तेदार तो बिल्कुल नहीं, अजनबियों के सामने मेरा रहस्य खुल भी जाए तो लज्जित होने की कोई बात नहीं है। आखिर मैं सच्ची बात जानने के लिए ही इतनी देर से यहाँ पर खड़ा हूँ।"

"अच्छा, सुनो ! बैसाखी का मतलब है कि तुम स्थायी नौकरी के द्वारा प्राप्त होने वाले वेतन पर विश्वास न करके भाग्य के भरोसे प्राप्त होनेवाली मोटी रकम रूपी सड़क पर दौड़ना चाहते हो।"

"जी हाँ! बात सही है। मैं यही जानना चाहता हूँ कि आखिर मेरा लक कैसा है?"

"तुम 'लॉटरी' और रेस में पैसे बनाना चाहते हो। एक बार एक नंबर में तुम लॉटरी से पाँच लाख से वंचित रह गए। रेस में पिछली बार तुम तीन लाख का जैकपॉट खो बैठे। बोलो, यह बात सच है कि नहीं?"

"जी हाँ, हाँ! तुम सच कहती हो। पर ये सब तुम्हें कैसे मालूम हो गई?"

"तुम्हारी रेखाएँ बताती हैं।" इन शब्दों के साथ उक्त महिला ने उस व्यक्ति की हथेली पलट दी, उँगलियों की।

गाँठों को परखकर संख्याएँ गुनकर बोली – "पिछली बार जैकपॉट में तुम्हारा फोर्थ लेग गलत निकला। सात नंबर के बदले तुमने नौ नंबर लगाया होता तो तुम्हें साढ़े तीन लाख का जैकपॉट हाथ लग जाता! क्योंकि न्यूरोनलॉजी के मुताबिक तुम्हारे भाग्य में नौ का योग था। तुमने नौ नंबर लिखकर काट डाला, फिर सात नंबर लिखा, वरना तुम्हें जरूर वह मोटी रकम हाथ लगती। वेरी बैड लक !" महिला हाथ ढीला करते हँस पड़ी।

"बहन जी, तुम्हारी बात पर मुझे पूरा भरोसा है। मैं अपने भविष्य के बारे में और ज्यादा नहीं जानना चाहता। मुझे सिर्फ पाँच नंबर लिखकर दो, मगर किसी पर प्रकट न हो! गुप्त रूप से लिखकर दो।"

वह महिला ज्यादा तर्क करके अपना वक्त बरबाद करना नहीं चाहती थी। उसे कई ग्राहकों को संतुष्ट करना था। मन में थोड़ी देर गुनगुनाती रही, तब एक कागज पर पांच नंबर लिखकर उस व्यक्ति के हाथ में दिया। उस चिट को जेब में रखकर उस पुरुष ने गिनकर पचास रुपए अपनी भाग्य-विधात्री के हाथ पर रखा और भीड़ को चीर कर चल पड़ा।

उस भीड़ में घुड़दौड़ के प्रेमियों की भारी संख्या थी। सब लोग जैकपॉट के नंबर जानने के लिए उस महिला की ओर लपक पड़े। उस धक्का-मुक्की से घबराकर हम लोग एक किनारे हो गए।

ज्योतिषणी ने शांत स्वर में समझाया - भाइयों ! सबका भाग्य एक सा नहीं होता और न मैं आप लोगों की भाग्य-विधात्री हूँ कि आप लोगों की किस्मत का फल बाँट दूँ। आप लोग जानते ही हैं कि किसी की भी हस्तरेखाएँ दूसरों की रेखाओं से नहीं मिलती।

इसके अलाव मैंने गुप्त रूप से जो नंबर उस व्यक्ति को बताए, वे नंबर दूसरों को बता नहीं सकती। आप लोग कृपया कतार बाँधकर एक-एक करके अपना हाथ दिखावें।

उस महिला के निवेदन के बावजूद लोग एक-दूसरे को धक्का देने लगे। मैं घबराकर एक ओर जा खड़ा हुआ। मेरे दोस्त भी मुझसे आ मिले। हमारा समय हो चुका था, अतः हम पार्क की ओर चल दिए।

सात-आठ दिन गुजर गए। मुझे पांडी बाजार की ओर जाने का मौका न मिला। एक दिन साढ़े आठ बजे के करीब मैं दंडायुधपाणी स्ट्रीट से होकर गुजर रहा था। सड़क की सारी बत्तियाँ बुझ चुकी थीं। सर्वत्र अँधेरा छाया हुआ था।

सहसा काल की तरह वर्षा आ धमकी, देखते-देखते जोर पकड़ने लगी। पानी में भीगने के डर से मैं थोड़ी दूर दौड़कर एक पेड़ की घनी छाया में जा खड़ा हुआ।

पेड़ का तना एक मकान के अहाते के अंदर था, पर उसकी शाखाएं सड़क पर दूर तक फैली हुई थीं। उस मकान की खिड़कियों से होकर रोशनी छन-छन कर फूट रही थी। मकान के भीतर से किसी की डाँट फटकार की स्पष्ट आवाज मेरे कानों में टकराने लगी। मेरे कान इस तरह खड़े हो गए जैसे रोमांच होने पर बदन के रोंगटे खड़े हो जाते हैं !

एक पुरुष अपना रोब जमाते गरज रहा था - " हरामजादी ! कुतिया ! तूने नागराजन को जैकपॉट के नंबर बताए, मुझे नहीं बताए ! तुझे यह इन्फॉर्मेशन पहले ही मिल गई थी, तो मुझे क्यों नहीं बताया? तू तो जानती है कि मैं रेस कोर्स का रेग्यूलर ग्राहक हूँ। क्या मुझे वह पाँच लाख का जैकपॉट मिल नहीं जाता ? पाँच रुपए का एक टिकट खरीदकर मैं भी लखपति बन गया होता, तुझे विलायती मोटरकार में सैर कराता।"

"कौन था वह नागराजन?" महिला का कंठ - स्वर सुनाई दिया।

"वही नागराजन, जिसने तुम्हें हाथ दिखाया था। तूने पाँच नम्बर लिख कर दिये थे।"

"उफ्फ्! मुझे क्या पता था कि वे ही नंबर वाले घोड़े जीतेंगे? उसने जैकपॉट के पाँच नम्बर लिखकर देने को कहा, मैंने पचास रुपए देकर पाँच नम्बर लिखकर दे दिए। मेरे भाग्य में पचास रुपए लिखे थे और उसके भाग्य में पाँच लाख। यह तो अपना-अपना भाग्य है?"

"तेरा सर! तू तो ज्योतिषिणी बनकर ऐंठती है तो क्या तू सबको दगा देती है !"

इसमें दगा देने की बात ही क्या है ! हस्तरेखा - विज्ञान में जो फल बताए गए हैं, वे ही बता देती हूँ। मैं किसी के भाग्य को थोड़े ही बना या बिगाड़ सकती हूँ !

"हाँ, तू किसी की किस्मत बना या बिगाड़ नहीं सकती, पर किसी के दिल और दिमाग को जरूर बिगाड़ देती है। हरामजादी ! नौजवानों के हाथ छू-छूकर तू गुदगुदी का अनुभव करती है न ! उनके साथ हँस-हँसकर बात करती है। सब की आँखें तुझ पर गड़ी रहती हैं।

तुझे मर्दों के हाथों का स्पर्श करते शर्म नहीं आती ! जानती है, बारे में क्या-क्या बक रहा था? कोई ओर होता तो अपनी बीबी के बारे में ऐसी फब्तियाँ कसते सुन चूल्लू भर पानी में डूब मरता। मैं बेशर्म ठहरा, वरना मैं भी यही काम करता।"

"तुम्हें तो शर्म ही कहाँ रही जो चुल्लू भर पानी में डूब मरते ! वरना बीबी-बच्चों को अपनी किस्मत पर छोड़ तुम ताश खेलने, शराब पीने और रेस में रुपए फूँक देते !"

"क्या कहा ? मुझे बेशर्म बताती है। ऐसी हिम्मत ! सूअर की बच्ची !" यों गाली देकर खींचकर उसने अपनी बीबी के गाल पर थप्पड़ मारा।

महिला की आँखें चकरा गई। वह सिंहनी बनकर उसी स्वर में गरज उठी- "तुम भी कोई मर्द हो ? बीबी पर हाथ चलाते तुम्हें शर्म न आई ? जब से तुमने शादी की, मेरे पीछे एक पाई भी खर्च किया। उल्टे मेरी आमदनी पर ऐश करते हो ! अपनी सारी ख्वाहिशों की पूर्ति करते हो।

तुम्हारे अंदर सब तरह के अवगुण भरे हुए हैं। तुमने मेरे बटुए से कई बार पैसे चुराए। बच्चों ने खुद अपनी आँखों से देखा, मुझे बताया। तुम्हारी देखादेखी बच्चे भी बिगड़ जाते तो हमारी जिंदगी के सारे सपने टूट जाते। मैं उन्हीं को काबिल बनाने की लालसा में जिंदा हूँ। तुम्हारे सारे ऐब छुपाकर रखती हूँ।"

"वाह, तू तो सती सावित्री और अनसूया की कोई साक्षात् अवतार है। इसीलिए अपनी पति-भक्ति का प्रदर्शन करती है। तू तो टेलीफोन में काम करती है, कॉल गर्ल है न।"

अपने पति के इस अंतिम वाक्य में जहर- भरा व्यंग्य देखकर वह महिला तिलमिला उठी। तड़पकर बोली- तुम पीते हो तो अंट-संट बक जाते हो।

कोई सुने तो हमारे परिवार की सारी इज्जत मिट्टी में मिल जाएगी। मैं तुम्हारे सारे अत्याचारों को आँसू पीकर चुपके सहन कर जाती हूँ। इसलिए तुम्हारा हौसला बढ़ जाता है।

तुमने एक औरत का हाथ पकड़ा, उसे खाना कपड़ा देना तुम्हारी जिम्मेदारी है। तुमने मुझे अपनी वासना की भूख मिटाने का यंत्र-मात्र समझा। कभी यह नहीं सोचा कि मैं भी एक प्राणी हूँ। इस देश की एक प्रतिष्ठित नागरिक हूँ। मेरे भी इस बदन के भीतर दिल धड़कता है, उस दिल को लेकर मैं भी महान् बन सकती हूँ। खैर, अब वाद-विवाद करना नहीं चाहती।

तुम्हारे दिमाग के भीतर इस वक्त मेरी बातें घुसती भी नहीं। पर आखिरी बार साफ-साफ बता देती हूँ कि आइंदा तुमने मेरे शील पर शंका प्रकट की तो मैं पल भर के लिए भी इस घर में नहीं रहूँगी।

तुम्हारे आँखों में गिरकर मैं और किसके लिए जीऊँ? आज तक यही सोचकर सहन कर जाती हूँ कि कभी-न-कभी तुम्हारे भीतर परिवर्तन आएगा।

बच्चे बड़े होते जा रहे हैं, हमारी जिम्मेदारियाँ भी बढ़ती जा रही हैं। उनके भविष्य को बनाने के दायित्व से मुँह मोड़कर अपनी इच्छाओं की पूर्ति करने के लिए दुराचारों के गुलाम बने रहोगे, हमारी संतान बरबाद होगी। दुनिया तुम पर थूकेगी।

"चुप रह ! आज तुझे मुझे उपदेश देने की हिम्मत कहाँ से आ गई ! तू तो सबका भविष्य बताती है न, तेरे बच्चों का भविष्य अब तक तुझे मालूम हुआ होगा ! उसे बनाने - बिगाड़ने की ताकत हमारे हाथों में थोड़े ही है। तूने किसी की नौकरी की मिलने की बात सच कह दी, किसी को जैकपॉट मारने को नंबर बताए।

मुझे भी एक बार बता देती और मेरे हाथों लाखों रुपये लग जाते तो मैं अपनी उन सारी बुरी आदतों को छोड़ देता। फूलों में रखकर तेरी पूजा करता। समाज में हमारी प्रतिष्ठा होती। मकान, मोटरगाड़ी, नौकर-चाकर होते। तब हमारे दिल में और कोई ख्वाहिश न होती ! यह बात मत भूल, हम भी आदमी हैं।

हमारे मन में भी सुख-वैभव की जिंदगी जीने की लालसा होती है। औरों को इस समाज में आगे बढ़ते देख हमारी भी सुप्त कामनाएँ जाग उठती हैं। आखिर हम देवता थोड़े ही है। आदमी है। आदमी होने के नाते हमारे दिलों में भी महत्त्वाकांक्षाएँ होती हैं। महत्त्वकांक्षाओं का होना कोई बुरी बात नहीं है !

"अपनी सीमा के भीतर रहकर कामना करना बुरी बात नहीं है। पर अपनी जिम्मेदारी का विस्मरण कर, बीवी-बच्चों का पेट काटकर तुम गुलछर्रे उड़ाना चाहते हो यह बहुत ज्यादती है। तुम हमारा ख्याल नहीं करते, इसीलिए मुझे अपने बच्चों के भविष्य की चिंता की कामना से दूसरों के भविष्य के साथ खिलवाड़ करना पड़ता है। मैं जानती हूँ कि मैं कुछ करती हूँ, उचित नहीं है, मगर इसके जिम्मेदार तुम हो ! समझे?"

"हाँ-हाँ समझा ! तुम इसी तरह बकती जाओगी तो तुम्हारी जीभ काट डालूँगा ! यों धमकी देकर वह चाकू लाने को दौड़ा। ज्योतिषिणी डरकर किवाड़ की ओर दौड़ पड़ी। वर्षा थम चुकी थी। मैंने अपने एड़ियों के बल खड़े हो मकान के अंदर झांका। मेरे आश्चर्य की कोई सीमा न रही, वह वही महिला थी, जिसे मैं रोज पांडी बाजार के नुक्कड़ पर देखा करता था।

वह पियक्कड़ पति चाकू न पाकर लौट आया, तब तक उसका नशा उतर चुका था। अपनी बीबी को मनाकर वह घर के अंदर ले गया। वह महिला इस ख्याल से चुपचाप घर के भीतर चली गई कि ज्यादा चीख - चिल्लाहट होने से उसकी नाक कट जाएगी और घर का भेद खुलने से वह कल प्रातः काल से लोगों को अपना चेहरा दिखा न सकेगी।

वर्षा की बूँदे पत्तियों से झरकर मेरे सर पर गिर चुकी थीं। मैंने जेब से रूमाल निकाला। सर और मुँह पोंछते उत्सुकता के साथ सुनता रहा कि आखिर इन नाटक की युवनिका का पतन कब और कैसे होता है।

शायद वर्षा की रिमझिम के कम होने से पड़ोसी महिलाएँ खिड़कियों से झाँक रही थीं। अपनी झूठी इज्जत बचाने के लिए शराबी पति नरम पड़ चुका था। उसके जोश और आवेश का उफान भी थम चुका था। धीमी आवाज में पति-पत्नी के बीच समझौते का प्रकरण प्रारंभ हुआ।

अपने पति को लज्जित और पिघलते देख वह महिला भी आर्द्र हो उठी। उसने कहा- देखो, मैं तुमसे लड़ना - झगड़ना नहीं चाहती हूँ। मेरी कमजोरी और प्यार से लाभ उठाकर तुम मुझे आए दिन सताते हो ! मेरी आखिरी शर्त यही

है कि हम दोनों ऊपरी आमदनी रूपी-उप-जीविका की बैसाखी को तोड़कर आत्मविश्वास के साथ अपनी ईमानदारी और मेहनत की कमाई पर अपनी गृहस्थी की इमारत को दृढ़तर बनाने की कोशिश करेंगे .....।

उस महिला के कंठ में दृढ़ता थी। उसके आत्मविश्वास और आस्था की मैं मन-ही-मन प्रशंसा करता रहा, सहसा अपने घर पर अपने को पाकर चकित रह गया कि कब मेरे पैर मुझे घर तक खींच लाए !

आज भी पांडी बाजार से गुजरता हूँ तो उसा महिला का चित्र मेरी आँखों के सामने घूम जाता है। किंतु वह भौतिक रूप से वहाँ दिखाई नहीं देती। उस स्थान पर एक बूढ़े ज्योतिषी ने कब्जा कर लिया है, लेकिन अंतर इतना ही है कि उसके ग्राहकों में बूढ़े और महिलाएँ ज्यादा हैं।

3.5. सारांश

बालशौरि रेड्डी ने पौराणिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक, पारिवारिक, दांपत्य जीवन, माँ-पुत्र और मूल्यवादी सभी प्रकार की समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। इन तमाम समस्याओं को मध्यनजर रखते हुए कहानी और उपन्यासों के माध्यम से उन्होंने भारतीय समाज में फैली हुई अनेक समस्याओं पर प्रकाश ही नहीं डाला, बल्कि उनके निवारण के लिए समुचित मार्गदर्शन किया है। इनके अलावा बाल साहित्य और पत्र-पत्रिकाओं में भी सक्रिय रूप में प्रकाश डाला गया है।

भारतीय संस्कृति जड़ न होकर प्रगतिशील रही है और इसका एक सुनिश्चित इतिहास है। भारतीय संस्कृति असांप्रदायिक है और इसमें अखिल भारतीय भावना निहित है। किसी राष्ट्र अथवा देश के सांस्कृतिक विकास में उस राष्ट्र या देश की भाषा, वहाँ का वाङमय, वहाँ का दर्शन तथा वहाँ की ललित कलाएँ अपनी अहम भूमिका निभाति हैं. भारत की संस्कृति तथा सभ्यता अतिप्राचीन है। आवश्यकता इस बात की है कि इसे किशोर बालकों तक अवश्य पहुँचाया जाए, साथ ही नव शिक्षित प्रौढ़ों को भी इससे परिचित कराया जाए ताकि वे अपने वर्तमान और भविष्य को सुखद बनाने के लिए दिशा प्राप्त कर सकें।

रेड्डी जी ने आंध्र, तमिलनाडु तथा कर्नाटक राज्यों से संबंधित संस्कृति, सभ्यता आदि की चर्चा अपनी कृतियों में की है। पाश्चात्य देशों की तुलना में भारत में आज भी बाल साहित्य की कमी है। इस क्षेत्र में बालशौरि रेड्डी का प्रयास सराहनीय है। 'चंदामामा' पत्रिका के माध्यम से उन्होंने बाल साहित्य लेखन को आगे बढ़ाया। उनकी मान्यता है कि देश का भविष्य बच्चों के बौद्धिक एवं मानसिक विकास पर ही निर्भर होता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए उन्होंने हिंदी पाठकों के लिए तेलुगु की लोक कथाएँ, 'आँध्र के महापुरुष', 'तेनाली राम के लतीफ़े', 'तेनाली राम के नए लतीफ़े', 'बुद्ध से बुद्धिमान', 'न्याय की कहानियाँ', 'तेनाली राम की हास्य कथाएँ', 'आदर्श जीवनियाँ' और 'आमुक्त माल्यदा' जैसे बालोपयोगी रचनाएँ कलात्मक रूप से प्रस्तुत की।

3.6. बोध प्रश्न

1. बालशौरि रेड्डी पर टिप्पणी लिखिए।

2. बालशौरि रेड्डी -व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर टिप्पणी लिखिए।

3. बालशौरि रेड्डी -बैसाखी कहानी पर सोदाहरण रूप में व्याख्या लिखिए।

4. बालशौरि रेड्डी -बैसाखी पर टिप्पणी लिखिए।

3.7. सहायक ग्रंथ

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास एवं युग प्रवृत्तियाँ- डॉ. शिवकुमार शर्मा

2. हिन्दी उपन्यास एक सर्वेक्षण- महेन्द्रर चतुर्वेदी।

3. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य और ग्राम जीवन- विवेकी रॉय।

4. हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद- डॉ. त्रिभुवन सिंह।

5. हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन- डॉ. गणेशन

6. उपन्यास शिल्प और प्रवृत्तियाँ – डॉ. सुरेश सिन्हा।

7. हिन्दी उपन्यास सामाजिक चेतना- डॉ. कुँवरलाल सिंह।

8. हिन्दी उपन्यास सिध्दांत और समीक्षा – डॉ. मक्खनलाल शर्मा।

9. हिन्दी उपन्यास की शिल्पविधि का विकास – श्रीमती ओम शुक्ल।

डॉ. एम. मंजुला

4. प्रो. पी. आदेश्वार राव-एक परिचय

4. 0. उद्देश्य

प्रो. पी. आदेश्वर राव एक और उच्चशिक्षा प्राप्त तेलुगु भाषी हिन्दी के रचनाकार, आलोचक, निबंधकार, शोधार्थी के साथ-साथ तुलनात्मक भाषा विज्ञान के क्षेत्र में भी काम किया है। अब हम इस इकाई में प्रो. पी. आदेश्वर राव- उनके जीवनी, काव्य-वस्तु के बारे में विस्तृत रूप में जानकारी प्राप्त करेंगे।

रूपरेखा

4.1.प्रस्तावना

4.2. जीवनी

4.3. काव्य-वस्तु

4.4. भाव एवं रस

4.5. विचार

4.6. कल्पना

4.7. अभिव्यंजना-शिल्प

4.8. सारांश

4.1. प्रस्तावना

प्रो. पी. आदेश्वर राव सफल कवि के रूप में ही नहीं, अपितु साहित्य के प्रौढ़ आलोचक के रूप में भी आचार्य जी ने अपना विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है। आलोचनात्मक ग्रंथ में कवि पंत और उनकी छायावादी कविताएँ, तुलनात्मक शोध और समीक्षा, स्वच्छंदतावादी काव्य का तुलनात्मक अध्ययन आदि अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इनके बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करेंगे।

4.2.जीवनी

कविवर डॉ. पी. आदेश्वर राव का जन्म सन् 1936 में आंध्र के गुंटूर शहर हुआ । छुटपन से ही हिन्दी साहित्य के प्रति उनका अत्यधिक आकर्षण रहा है। उन्होंने हिन्दी और तेलुगु के प्रख्यात कवि श्री आलूरि बैरागी चौधरी के यहाँ हिन्दी का अध्ययन किया। आंध्र विश्वविद्यालय की बी. ए. की उपाधि प्राप्त करने के बाद उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में दो वर्षों तक अध्ययन कर सन् 1961 में एम.ए. (हिन्दी) की परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर सर्व द्वितीय भी ठहरे। तदुपरांत श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय में तीन वर्षों तक शोध कर 1965 में पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास के स्नातकोत्तर अध्ययन एवं अनुसंधान विभाग में पाँच वर्षों तक प्राध्यापक का कार्य किया है। उसके बाद आंध्र विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक बने । बाद में वहीं पर प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष भी बने ।

कवि, आलोचक, भाषा-वैज्ञानिक तथा अनुवादक के रूप में उन्होंने आधुनिक हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अपना एक विशिष्ट स्थान प्राप्त कर लिया है। इनकी सैकड़ों हिन्दी कविताएँ, अनुवाद और आलोचनात्मक निबंध उत्तर और

दक्षिण की अनेक हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। डॉ.आदेश्वर राव मूलतः एक भावुक एवं कल्पनाशील कवि हैं। शैशव में ही उन्होंने हिन्दी में कविताएँ लिखना आरंभ कर दिया। लेकिन, इनकी कविताओं को पुस्तकाकार में निकलने में काफी समय लगा। सन् 1969 में उनका पहला काव्य संग्रह 'अंतराल' का प्रकाशन हुआ । इसमें उनकी 1957 से 1965 तक की लिखी हुई कविताएँ संगृहीत हैं। सन् 1971 में भारत सरकार ने उसे 'उत्तम सृजनात्मक कृति' मानकर उसके लिए उन्हें पुरस्कार प्रदान किया।

4.3. काव्य-वस्तु

डॉ. आदेश्वर राव प्रेम और सौन्दर्य के कवि हैं। उन्होंने प्रेम और प्रकृति को अपनी कविता की वस्तु के रूप में स्वीकार किया है। प्रकृति के अनेक सुरम्य चित्रों का अंकन कवि ने बड़ी सफलता के साथ किया है। उन्होंने प्रकृति के विभिन्न रूपों का अत्यंत सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है। उषा, संध्या, रजनी, सागर, सरोवर, भ्रमर, हंस आदि प्रकृति के शोभावर्धक विषयों का बिम्ब-ग्रहण उन्होंने कराया। कवि ने निम्नांकित पंक्तियों में प्रभातकालीन प्राकृतिक शोभा का बिम्ब-ग्रहण कराया है-

"कोकिल के मृदु मधुर कूक से मुखरित अरुण रसाल
उषा - सुन्दरी के ललाट पर शोभित नव रवि-बाल
कमलिनि के मृदु उर पर बिखरे नील- भ्रमर-कच-चाल
सिहर उठी है नवल स्फूर्ति से लघु लहरों की ताल
अरुण मेघ-खण्डों से बिम्बित हिलता गगन विशाल
सरसी के मृदु मन्दहास-से लगत समुद्र मराल
चूम रहे हैं चंचल मधुकर कलिकाओं के गाल
उन कलियों के कपोल चुम्बित हुए लाल तत्काल।"

इसमें प्रकृति के आलंबन रूप का अंकन हुआ है । कविवर डॉ. राव ने प्रकृति की पृष्ठभूमि के रूप को भी चित्रित किया है। निशीध में शय्या पर सोने वाली अपनी प्रेयसी के चारों ओर फैली प्राकृतिक पृष्ठभूमि का चित्र उन्होंने निम्नांकित पंक्तियों में खींचा है-

"अम्बर में कितने दीप जले
पातों पर कितने सीप ढले
अपना झिलमिल रजत-रश्मियाँ
फैलाते खद्योत चले।"

X X X X X

तुम सो जाओ सजनी! निशि की अँधियाली में
खिल जाते हैं फूल यहाँ, मेरे मन की डाली में।"

कवि ने प्रकृति को मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में चित्रित किया है। प्रकृति का यह रूप कवि की प्रेयसी के सौन्दर्यांकन का माध्यम बन गया है। यथा-

"उषा - सरसिज-प्रभा-वेष्ठित
बदन जिसका है सुशोभित
नयन जिसके प्रेमं- संचित
आज उसके रूप-जाल में गगन मेरा गल चुका है।

X X X X X

लता - यौवन- भार वह तो
फुल्ल शतदल-हास वह तो
प्रेम- जलधि-विलास वह तो।
आज उसके सीप उर में बिन्दु - जीवन ढल चुका है।"

कवि ने प्रकृति को अलंकार के रूप में, मानवीकरण करते हुए प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है। निम्नांकित पंक्तियों में कवि ने प्रकृति को किसी अप्राप्य के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है -

"गगन- कुसुम को पाने की आशा क्यों मैं रखता हूँ?

X X X X X

वह तो रहता नील व्योम में
बन कर मृदुता ही साकार,
अपने में वह परवश होता
भर अंतर में मधु का भोर,
कितने ही मधुपों के दल भी
गये वहाँ पर उसे न पाये,
वह तो एक अचुंबित शतदल
पावनता जिसका आधार
उर के उपवन में खिल जाये सदियों तक वह सुमन अकेला।"

कविवर डॉ. राव ने प्रकृति का मानवीकरण अत्यधिक कविताओं में किया है। प्रकृति के नारी रूप का चित्रण कई स्थानों पर चित्रित किया गया है। उदाहरण के लिए 'सपनों में कोई आती है' शीर्षक कविता में रजनी बाला के आलिंगन में बन्दी विश्व का चित्र निम्नांकित पंक्तियों में द्रष्टव्य है -

"वसुंधरा के रूप-रंग हर

अंधकार जब छा जाता है,

जब रजनी के बाहु-वलय में

विपुल विश्व भी खो जाता है।"

इस प्रकार कवि ने अपनी कविताओं के लिए प्रकृति को वस्तु के रूप में स्वीकार किया हैं तथा उसके नानाविध रूपों का अंकन बड़े मनोयोग के साथ किया है।

डॉ. राव मूलतः प्रेम और श्रृंगार के कवि हैं। उन्होंने प्रेम के उदात्तीकृत रूप का चित्रण उनकी प्रायः सभी कविताओं में किया। प्रेम की सभी अंतर्दर्शों का बड़ा सुंदर चित्रण उनकी कविता में मिलता है। यह प्रेम अधिकतर आदर्श प्रेम के मार्ग में विकसित हुआ है, यद्यपि कहीं-कहीं आलंबन के इंद्रीयग्राह्य बाह्य सौन्दर्य का मनोरम चित्रण किया गया है। यही प्रेम विकसित होकर अंत में आदर्श प्रेम (फ्लासोनिक लव) के रूप को धारण कर लेता है । 'अंतराल' की आरंभिक कविताओं में बिखरे प्रेम का यह रूप 'अप्सरि' और 'अंतिम स्वप्न' शीर्षक कविताओं में एक निश्चित आकार-प्रकार को ग्रहण कर लेता है । 'अप्सरि' में कवि ने अनेक युगों से कवियों को कल्पना जगत में रिझाने वाली एक आदर्श प्रेयसी के रूप में अप्सरि को चित्रित कर उनकी चिर- प्रेरणा- प्रदायिनी शक्ति का चित्रण किया है। निम्नांकित पंक्तियों में वह स्वयं अपने सम्मोहन तथा बंधन - विहीन स्वरूप पर प्रकाश डालती है -

"युग-युग की मैं चंचल अप्सरि कोमल सुंदर नित्य नवीन

मेरी छवि तो पावन उज्ज्वल कभी न होती कान्ति-विहीन ।

X X X X X

कालिदास से ठाकुर तक सब रीझ उठे थे मेरे ऊपर

उनकी निर्मल सुन्दरता पर आयी मैं भी मोहित होकर ।

X X X X X

कितने कविवर तो चले गये किन्तु हुई क्या रिक्त मही?

मधुर कल्पना के कवि तुमको पुलकित हो मैं देख रही ।

X X X X X

किन्तु मुझे तो होकर जाना अपने अनन्त पथ पर से

स्पर्श करो तुम मेरी छवि को सूक्ष्म कल्पना के कर से।"

'अंतिम स्वप्न' में कवि ने नारी के शारीरिक सौन्दर्य की अपेक्षा चरित्रगत सौन्दर्य को प्रधानता देते हुए प्रेमी के हृदय में स्थित रहने वाले उसके उस उज्ज्वल मानसिक चित्र को उभारकर उसे विश्व व्यापी चित्रपट प्रदान किया है। अंग्रेज़ी कवि कीट्स के जीवन-वृत्त पर आधारित इस लंबी कविता में प्रेम के इस उदात्त तथा मनोमय रूप का अंकन किया गया है -

"किन्तु जान लो गात नहीं स्त्री

विधि ने जिसको जन्म दिया।

नारी कोई होती है तो

वह मन की सुन्दरता से

दिव्य गात की कोमलता से

औ' उर की पावनता से।"

इसमें नारी के विश्व व्यापी रूप को कवि ने दर्शाकर, रूपाश्रित प्रेम को सूक्ष्म एवं मानसिक बनाकर उसे प्रेमियों के जन्म-मरण से मुक्त बनाया है -

"हम दोनों का सहज प्रेम तुम

इसी जन्म का मत समझो

जन्म-मरण के बन्धन से हम

मुक्त सदा से हैं समझो।"

संक्षेप में यही कवि के प्रेम-दर्शन का रूप है। डॉ. राव ने इनके अतिरिक्त कला तथा कलाकारों के प्रति प्रशस्ति की कतिपय कविताएँ लिखी हैं, जिनमें 'तुलसी के प्रति' तथा 'महाप्राण निराला के प्रति' उल्लेखनीय हैं।

4.4. भाव एवं रस

कविवर डॉ. राव की कविताओं में मुख्य रूप से श्रृंगार, करुण तथा वीर रसों की सुंदर व्यवस्था हुई है। श्रृंगार रस का प्रतिपादन उनकी अधिकांश कविताओं में है। श्रृंगार के दोनों पक्षों का अत्यंत सुंदर चित्रण उनकी कविता में प्राप्त होता हुआ है। श्रृंगार के मुख्य आलंबन नारी सौन्दर्य का अत्यंत विशद एवं प्रभावशाली चित्रण उनकी कविताओं में दर्शनीय है । वास्तव में प्रेम रूपाश्रित है और रूप का आस्वादन मन, इन्द्रियों के माध्यम से करता है। ऐसे नारी सौन्दर्य के भव्य रूप के दर्शन निम्नांकित पंक्तियों में होते हैं-

"मैंने देखा छवि का प्रवाह

उसी तरुणि की आँखों में भी अनुराग भरी वह मधुर चाह

छिपी उसी के मन्दहास में व्याकुल अधरों की प्रेम-दाह

चंचल चितवन में छलक रहा जीवन- विद्युत का तरल हास

अरुण कपोलों में उमड़ रहा नव उषा - सुन्दरी का विलास

काली अलकों को मलयानिल कोमल परसों से हिला रहा

सुन्दरी के जीवन- बसन्त में यौवन- पिक - कलरव गूँज रहा

आकर्षण के बन्द- कमल में मन-मधुकर था करता कराह

मैं खोज रहा निज मुक्ति-राह।"

डॉ. राव ने श्रृंगार के दोनों पक्षों संयोग और वियोग का चित्रण बड़े कौशल के साथ किया है। संयोग श्रृंगार के अनेक मादक चित्र उनकी कविताओं में प्राप्त होते हैं । 'तुम सो जाओ सजनी' शीर्षक कविता में कवि ने अपने बंगाल में ही लेटी हुई प्रेयसी की शोभा पर रीझते हुए कहा-

"मुख पर अलकें डोल रहीं
पावन छवि अमृत घोल रहीं
पलकों में छायी नीरवता
सपनों की माला मोल रही।
तुम सो जाओ सजनी! निशि की अँधियाली में
मेरा मानस उलझ रहा अलकों की घन जाली में !"

कवि ने मिलन के और भी मादक चित्र 'अंतिम स्वप्न' शीर्षक कविता में मिलनातुर प्रेमी-प्रेयसी के चित्र को निम्नांकित पंक्तियों में अंकित किया है -

"लिया अचानक बाहु-वलय में
उसका कंपित कोमल तन
और किया था अंकित मैंने
अधरों पर दाहक चुम्बन।"

डॉ. राव ने वियोग श्रृंगार का भी चित्रण अत्यंत गहराई के साथ किया है। विरहानुभूति की मर्म व्यथा कवि की अधिकांश कविताओं में प्राप्त होता है। 'विरह गीत' शीर्षक कविता में कवि ने प्रेयसी के विरह में हृदय में व्याप्त मादक पीड़ा का सजीव चित्रण निम्नांकित पंक्तियों में किया है -

"मनसिज का टूटा मोह- जाल
इस उर में जलती मधुर ज्वाल
रह-रह कर हँसता विरह - ब्याल
चढ़ जाता तन में विष कराल।"

X X X X X

कौन सुनेगा करुणा - क्रंदन
मेरे उर का नीरव स्पंदन
आ टकरा कर विरह-प्रभंजन
भरता तन में तीव्र प्रकंपन।"

विरहानुभूति को व्यक्त करने वाली अनेक कविताएँ 'अंतराल' में प्राप्त होती हैं, जिनमें कवि की गहरी संवेदना अभिव्यक्ति प्राप्त करती है ।

डॉ. राव की कतिपय कविताओं में करुण रस का चित्रण मिलता है। 'जीवन मेरा भार बन गया' शीर्षक कविता में कवि ने करुण रस का संचार किया है –

"रोना ही पड़ता है मुझको
जीवन भर रोना, रोना ही
दुख के उमड़े अश्रु कणों से
मन की रज धोना, धोना ही,
फट जायेगा हदय भार से
और इसी कारण मुझको तो
रुदन भव्य वरदान बन गया।"

कविवर डॉ. राव ने अपनी कतिपय कविताओं में वीर रस का संचार कराया है। 'उद्बोधन' शीर्षक कविता में कवि ने अन्याय और अत्याचार से भरे हुए इस संसार को नष्ट करने के लिए प्रलयंकर शंकर को उद्बोधित किया है -

"जाग उठो तप-जप से शंकर!
ध्यान तजो हे! शतृ-भयंकर
प्रलय-नाट्य कर जाग यतीश्वर ।
अन्याय, पाप के विविध-व्याल
वसुधा में भरते विष कराल
निरुपाक्ष ! दृग में भरो ज्वाल
भू-ध्वंस करो हे ! महाकाल !"

इस तरह राव की भावानुभूति ने अनेक स्थानों पर रस के स्वरूप को धारण किया और वह पाठक को अपने रस में निमज्जित करने में सफल हुई है।

4.5. विचार

कविवर डॉ. राव ने अपनी कतिपय कविताओं में जीवन और जगत पर विचार किया है। ऐसी कविताओं में उनका चिन्तन पक्ष मुखर हो उठा है। मानव जीवन पर विचार करते हुए उसकी आशा-निराशा तथा मानवता को अपने ही मार्ग पर ले जाने वाले पथ-भ्रांत पैगंबरों पर कवि ने व्यंग्य किया है। मानव जीवन में अनेक असफलताओं के बाद भी आश्वस्त होकर जीवन-यापन करना चाहता है। डॉ. राव ने यथार्थ जीवन की कारा से मुक्त होने की आकांक्षा रखने वाले मनुष्य की आशा का अंकन निम्नांकित पंक्तियों में किया है-

"बन्दी है कितनों के सपने
जीवन की पाहन - कारा में
कितनों की अभिलाषाएँ भी

बड़ी निराशा की धारा में,

हर कोई फिर भी तैर रहा

तिनके के अवलंब लिए।"

कभी-कभी कवि ने जीवन और जगत के संबंध में कुछ दार्शनिक विचार भी व्यक्त किए हैं। 'अखिल विश्व यह पागलखाना' शीर्षक कविता में सारे संसार को पागलखाने के रूप में चित्रित किया गया है, जिसमें हर कोई किसी न किसी वस्तु के पीछे पागल है-

"कोई यश के पीछे पागल

कोई स्वर के पीछे पागल

कोई रस के पीछे पागल

कोई कविता का ही पागल

X X X X X

अखिल विश्व यह पागलखाना

पाप-पुण्य का ताना-बाना

यहाँ सभी के सब हैं पागल।"

इस कविता के अतिरिक्त डॉ. राव ने 'तुलसी के प्रति', 'महाप्राण निराला के प्रति', 'लालबहादुर शास्त्री', 'लोकनायक के प्रति' शीर्षक कविताओं में अपने सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवहार संबंधी विचार व्यक्त किये हैं।

4.6. कल्पना

डॉ. राव की कविताओं में सर्जनात्मक कल्पना ने अनेक भव्य बिम्बों का निर्माण कर सौन्दर्य की सृष्टि की है। कवि की कल्पना ने अधिकतर आदर्शमूलक प्राकृतिक बिम्बों को रूपायित करने में बड़ी सफलता प्राप्त की है। उनके कल्पना- प्रसूत बिम्ब एक सौन्दर्यमय जगत की सृष्टि करते हुए दिखाई देते हैं। इनके अधिकांश बिम्बों का आधार प्रेम और प्रकृति हैं । कवि ने अनेक काल्पनिक नारी मूर्तियों के चित्रों को अपनी कल्पना के सहारे चित्रित किया है। ऐसे कल्पना प्रसूत दो बिम्ब निम्नांकित पंक्तियों में क्रमशः द्रष्टव्य हैं -

"मृदुल कवि के स्वप्न- जग में

नाचती नभ की परी-सी

स्वर्ण जीवन की तरी-सी

आ गयी अभिमानिनी बह

कौन थी वह।"

X X X X X

"ज्योत्स्ना के जब महासिंध में

मेघ - तिमिंगल विचरण करते,

उनसे डरकर नखत - मीन जब

सिन्धु-गर्भ में छिप रह जाते,

क्षीर- पयोनिधि की लहरों से

तब कोई ऊवैशि आती है।"

दूसरे बिम्ब में प्रकृति के संश्लिष्ट चित्रण के द्वारा कवि ने एक विशाल चित्र-पट पर बिम्ब को अंकित करने की चेष्टा की है। इस चित्र की पृष्ठभूमि में काल्पनिक नारी - प्रतिमा का अनावरण किया गया है । कवि ने अनेक स्थानों पर प्रेयसी के सौन्दर्य का चित्रण अनेक प्राकृतिक उपकरणों के माध्यम से किया है। यहाँ कवि की कल्पना अत्यंत सरस, मधुर एवं बिम्ब - विधायिनी बन पड़ी है। निम्नांकित पंक्तियों में कवि की कल्पना अनुभूति के साथ मिलकर अत्यंत प्रभावशालिनी बन गई है -

"उषा - सरसिज-प्रभा- वेष्ठित

वदन जिसका है सुशोभित

नयन जिसके प्रेम-संचित

आज उसके रूप- जाल में गगन मेरा गल चुका है

लता-यौवन- भार वह तो

फुल्ल शतदल -हास वह तो

प्रेम-जलधि-विलास वह तो

आज उसके सीप उर में बिन्दु-जीवन ढल चुका है।"

कवि की कल्पना ने प्रकृति के सुरम्य-चित्रों को उनके रूप-रंग के साथ अंकित किया है। कल्पनाप्रसूत प्राकृतिक चित्रों में बादल, इन्द्र धनुष, तारे, रजनी, उषा आदि के चित्र अत्यंत मनोज्ञ बन पड़े हैं। डॉ. राव ने उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा तथा मानवीकरण अलंकारों के द्वारा इन प्राकृतिक बिम्बों को चित्रित कर हृदयंगम बनाया है। उदाहरण के लिए 'अंतिम स्वप्न' शीर्षक कविता की निम्नांकित पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं, जिनमें नक्षत्रों के सुंदर चित्र प्रस्तुत किए गए हैं -

"धीरे-धीरे चलकर कवि तब

देख रहा था वातायन से

स्नेहहीन नभ- दीपक उसको

ताक रहे निस्तब्ध गगन से। "

प्रभात के अवसर पर कवि के द्वारा चित्रित प्रकृति का कल्पना प्रसूत बिम्ब निम्नांकित पंक्तियों में मुखर हो उठा है -

"कोकिल के मृदु मधुर कूक से मुखरित अरुण रसाल

उषा - सुन्दरी के ललाट पर शोभित नव रवि-बाल

कमलिनि के मृदु उर पर बिखरे नील- भ्रमर- कच - जाल

सिहर उठी है नवल स्फूर्ति से लघु लहरों की ताल।"

कविवर डॉ. राव ने अपनी सशक्त कल्पना के द्वारा कविता का सौन्दर्य वर्णन किया है। उनकी संपूर्ण कविता में कल्पनाप्रसूत बिम्बों की भरमार है।

4.7. अभिव्यंजना-शिल्प

कविवर डॉ. राव की कविता का अभिव्यंजना - शिल्प अत्यंत प्रौढ़ है। उन्होंने गीत और प्रगीत को मुख्य काव्य-रूपों में चुन लिया है। इन काव्य-रूपों के अतिरिक्त उन्होंने संक्षिप्त इतिवृत्त को लेकर दो लंबी कविताओं की रचना की। कवि का हिन्दी काव्य-भाषा तथा काव्य-शैली पर अच्छा अधिकार है। उन्होंने अपनी काव्य-भाषा के लिए संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ-साथ ठेठ हिन्दी के शब्दों का भी प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है। उनकी काव्य-भाषा प्रवाहमय तथा सजीव बन पड़ी है। उन्होंने संस्कृत के प्रचलित शब्दों का ही प्रयोग किया है। इनकी काव्य-भाषा में अभिधा के साथ-साथ लक्षणा और व्यंजना का भी प्रयोग किया गया है। कहीं-कहीं इनकी काव्य-शैली विषय के अनुरूप ढलती दिखाई देती है।

डॉ. राव ने अपनी अधिकांश कविताओं को व्यास शैली में लिखा है। फिर भी समास शैली के भी उदाहरण कहीं-कहीं प्राप्त होते हैं। उनकी व्यास- शैली निम्नांकित पंक्तियों में द्रष्टव्य है -

"तुम सो जाओ सजनी! निशि की अँधियाली में

मैं लिखता हूँ गीत यहाँ भर मधु उर की प्याली में।"

कवि की समास - शैली निम्नांकित पंक्तियों में द्रष्टव्य है –

"नवल सौरभ-गात जिसका

भाव - गुंजित हृदय-कलिका

मन्द, मुखरित गान जिसका

आज उसकी मधुर स्मृति में प्राण मेरा तप चुका है।"

डॉ. राव ने अपनी कविता में ओज, प्रसाद और माधुर्य गुणों की सुंदर योजना की है। उन्होंने इन गुणों का प्रयोग भाव एवं रस के अनुकूल किया है। निम्नांकित पंक्तियों में कवि के ओज गुण का सफल प्रयोग प्राप्त होता है -

"आज जगत् का रूप भयानक

जलती उसमें विष की ज्वाला

हे शंकर ! मत जाओ पीने

यह प्रणयांतक विष का प्याला ।

X X X X X

इस काल विश्व के महानगर

बन गये नीचता के आलय

त्रिपुरारि ! पुरों का नाश करो

जग काँप उठे तज नाट्य प्रलय ।"

कवि ने अपनी प्रेम और सौन्दर्य प्रधान कविता को संप्रेषणीय बनाने के लिए माधुर्य गुण का प्रयोग किया है। इस माधुर्य गुण के प्रतिपादन के लिए कोमल एवं ललित शब्दों की योजना की है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है -

"अधरों में मादक प्यास लिए

अन्तर में मधुमय राग लिए

विरह-ताप को हरने वाली

शीतलता की धार लिए,

तुम सो जाओ सजनी! निशि की अँधियाली में

खिल उठते हैं दीप यहाँ जीवन की दीवाली में ।"

कवि ने अत्यंत आह्लादमयी सुलभ ग्राह्य कविताओं में किया है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है -

"मैंने अपने ही हारों को

जीत समझकर सुख पाया,

मैंने अपनी दुर्बलता को

शक्ति मानकर सुख पाया ।"

कविवर डॉ. राव ने अपनी कविता में अलंकारों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया है। उन्होंने अलंकारों का प्रयोग केवल काव्य-सौन्दर्य को बढ़ाने के लिए किया है। उन्होंने शब्दालंकारों तथा अर्थालंकारों का प्रयोग औचित्य के साथ किया है । शब्दालंकारों में उन्होंने अनुप्रास का प्रयोग किया है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है –

"बहता है यह वासन्ती का गंध-अंध-मधुवात

पुलकित होते प्रति पल हिल-हिल लतिकाओं के गात ।"

कविवर डॉ. राव ने अर्थालंकारों में अधिकतर उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, संदेह, श्लेष, मानवीकरण, दृष्टांत, विशेषण विपर्यय आदि अलंकारों का प्रयोग किया है। रूपक कवि का प्रिय अलंकार-सा लगता है। निम्नांकित पंक्तियों में उनकी उपमाओं की छटा दर्शनीय है-

"त्रिभुवन की सौन्दर्य - राशि - सी

किसलय की नव कोमलता- सी

नील गगन की नीरवता- सी

नूतन कवि की भावुकता- सी
आओ कविते! मम जीवन में
लाओ स्पंदन मम अंतर में।
नव यौवन की मधु लहरी-सी
मद्यपान की मादकता- सी
भग्न- हृदय की मधु पीड़ा-सी
विरही-मन की व्याकुलता-सी
आओ कविते! मम जीवन में
लाओ स्पंदन मम अंतर में।"

डॉ. राव की कविता में रूपकों का भव्य संसार निर्मित हुआ है । कवि किसी सूक्ष्म भावना को रूपक के माध्यम से बड़ी आसानी से व्यक्त करने में समर्थ हैं। वास्तव में कवि की सर्जनात्मक प्रतिभा के लिए मापदंड रूपक ही है। डॉ. राव की 'कवि की निराशा' शीर्षक कविता की निम्नांकित पंक्तियों में रूपकों की शोभा द्रष्टव्य है -

"कसक, वेदना और निराशा चुभते हैं बनकर विषम शूल
इस जीवन - तक की शाखा पर मुरझाए सुख के तरुण फूल
मेरी मृदु मानस- लहरों पर छायी दुख- नीरद की छाया
जीवन- सर के अन्तस्तल में दुख-नीरज ही मैंने पाया
मेरे श्रांत-क्लांत जीवन की यह कैसी प्राणों की पुकार ?"

उपर्युक्त अलंकारों के अतिरिक्त कवि ने मानवीकरण तथा प्रतीक का भी प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है। निम्नांकित पंक्तियों में इनका उदाहरण द्रष्टव्य है –

"जब रजनी के बाहु-वलय में
विपुल विश्व भी खो जाता है,
तब छिपकर मेरी पलकों में
कोई रूपसि घुस आती है।" (मानवीकरण)
"ध्रुवतारा अपनाने की आशा क्यों मैं रखता हूँ
वह स्नेह भरा एकाकी दीपक
अन्तरिक्ष में जलता है,
निज प्रकाश से आलोकित कर
अन्यों के तम को हरता है,

वह बदलेगा कभी नहीं, पर

परिवर्तन सबका लखता है,

नित धरकर दुख के तम से

औरों में आशा भरता है,

मेरे हृदय-गगन में बस जाये स्नेह-भरा वह ध्रुवतारा।" (प्रतीक)

दूसरे उदाहरण की पंक्तियों में ध्रुवतारा को प्रेयसी के प्रतीक के रूप में चित्रित किया गया है। विरोधाभास तथा विशेषण - विपर्यय का भी प्रयोग उनकी कविता में अनेक स्थानों पर मिलता है ।

कविवर डॉ. राव का हिन्दी छन्दों पर असाधारण अधिकार है। उनकी कविता में एकाध स्थानों को छोड़कर अन्य सभी कविताओं में मात्रिक छन्दों का ही प्रयोग मिलता है । संस्कृत के एक वर्णिक छन्द 'तरल नयन' का प्रयोग 'ऊषा के प्रति' शीर्षक कविता में किया है। उदाहरण द्रष्टव्य है -

"किसलय सम मृदुल चरण

धर कर नव अरुण वसन

ऋतुपति - छवि गुरुतर कर

भुवि पर रख चरण युगल " (6+6 मात्राएँ)

मात्रिक छन्दों में उन्होंने चौपाई, मानव, सरसी, इड़ा आदि छन्दों का प्रयोग किया है। इन छन्दों के प्रयोग में कवि को असाधारण सफलता मिली है। क्रमशः निम्नांकित पंक्तियों में ये छन्द द्रष्टव्य हैं -

"अम्बर में कितने दीप जले

पातों पर कितने सीप ढले।" (16 मात्राएँ) (चौपाई)

"नापते विस्तार को क्यों

हृदय पारावार कवि का।" (14 मात्राएँ) (मानव)

"मानव है यह वासन्ती का / गन्ध - अन्ध- मधुवात

पुलकित होते प्रति पल हिल-हिल / लतिकाओं के गात।"

(16+11 मात्राएँ) (सारसी)

महाकवि श्री जयशंकर प्रसाद के द्वारा 'कामायनी' के इड़ा सर्ग में प्रयुक्त 'इड़ा' छन्द, छन्द-शास्त्र के लिए उनकी अनुपम देन है। इनके प्रत्येक छन्द में नौ पंक्तियाँ होती हैं। प्रथम, द्वितीय, अष्टम तथा नवम पंक्तियों के लिए एक ही तुक की व्यवस्था इस छन्द में होती है। चौथी और पाँचवीं तथा छठी और सातवीं पंक्तियों में दो-दो के लिए एक ही तुक का निर्वाह होता है।

प्रथम और नवम पंक्तियों में सोलह मात्राएँ होती हैं । अन्य पंक्तियों में 16+16 मात्राएँ होती हैं । जहाँ तक मेरे अध्ययन का क्षेत्र है उसमें इस छन्द का प्रयोग प्रसाद जी के पश्चात् डॉ. राव ने ही किया । 'कवि की निराशा' शीर्षक कविता में इस छन्द का निर्वाह अत्यंत कौशल के साथ किया गया है जो निम्नांकित पंक्तियों में द्रष्टव्य है -

"यह जीवन - जलनिधि की तरंग
उठती है जो विकल भाव से कर मानव का अभिमान भंग
आँसू की छींटें उड़ती हैं छूकर वारिद के तुंग श्रृंग
मेरे मानस की करुण पुकारें दिक् दिगन्त को रहीं चीर
उर में पीड़ा जगती है ज्यों चुभ गया अचानक प्रखर तीर
प्रेम-सद्यम का वास छोड़ कर क्या मैंने इस जग में पाया ?
भ्रान्त- पथिक-सा भटक भटक कर क्या मैंने जीवन-पथ खोया ?
औरों के जैसे मैं भी क्या बदलूँ नित कितने नये रंग?
पर रिक्त हुआ जीवन-निषंग ।"

डॉ. राव के सभी छन्दों में गति की सहजता तथा प्रवाहमयता सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। डॉ. राव के संबंध में यह कहा जा सकता है कि गीतों और प्रगीतों के माध्यम से उन्होंने प्रेम और सौन्दर्य को अनुभूति के रंग में रंग कर व्यक्त किया है। इसमें उनको बड़ी सफलता प्राप्त हुई है।

प्रो. पी. आदेश्वर राव एक और उच्चशिक्षा प्राप्त तेलुगु भाषी हिंदी आलोचक हैं। सफल कवि के रूप में ही नहीं, अपितु साहित्य के प्रौढ़ आलोचक के रूप में भी आचार्य जी ने अपना विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है। उनके आलोचनात्मक ग्रंथों में कवि पंत और उनकी छायावादी कविताएँ, तुलनात्मक शोध और समीक्षा, स्वच्छंदतावादी काव्य का तुलनात्मक अध्ययन आदि अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। 'कवि पंत और उनकी छायावादी कविताएँ' शीर्षक आलोचनात्मक ग्रंथ में डॉ. राव जी ने महाकवि सुमित्रानंदन पंत की भावना की रमणीयता, कल्पना की विशदता एवं संश्लिष्टता, शिल्प एवं शैली की सुंदरता का मूल्यांकन अत्यंत विश्लेषणात्मक ढंग से किया है। इस में पंतजी को एक स्वच्छंदतावादी कवि के रूप में चित्रित करते हुए उनकी तुलना वर्ड्सवर्थ, शेली, बायरन और कीट्स जैसे विशिष्ट विख्यात अंग्रेजी स्वच्छंदतावादी कवियों के साथ की है। 'तुलनात्मक शोध और समीक्षा' इनके दस शोध परक निबंधों का संग्रह है। जिसमें आलोचना के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्षों का समान रूप से निर्वाह किया गया है। तुलनात्मक अध्ययन की प्रक्रिया तथा उनकी उपादेयता, काव्य बिंब, कल्पना और बिंब, रूपक और बिंब आदि सैद्धांतिक आलोचना के निबंध हैं तो 'जयशंकर प्रसाद और विश्वनाथ सत्यनारायण', 'निराला और बसवराजु अप्पाराव', 'महादेवी वर्मा और चावलि बंगारम्मा' तथा 'भारतीय काव्य साहित्य में ऊर्वशी की परिकल्पना' आदि व्यावहारिक निबंधों का संग्रह है।

4.8. सारांश

प्रो. पी. आदेश्वर राव जी ने तुलनात्मक भाषा विज्ञान के क्षेत्र में भी काम किया है। प्रो. जी. सुन्दर रेड्डी जी तथा प्रो. एस.एम. इकबाल जी के साथ मिलकर 'हिन्दी तथा द्रविड़ भाषाओं के समानरूपी भिन्नर्थी शब्द' शीर्षक एक

अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ की रचना की है। इस में हिन्दी तथा द्रविड़ भाषाओं में रूप की समानता रखते हुए अर्थ में भिन्नता रखनेवाले शब्दों का अर्थपरक विवेचन प्रस्तुत किया है। यह अध्ययन हिन्दी तथा द्रविड़ भाषाओं के समानरूपी भिन्नर्थी शब्दों के समग्र अध्ययन का सर्वप्रथम प्रयास है।

4.9. बोध प्रश्न

1. आदेश्वर राव- जीवनी पर टिप्पणी लिखिए।

2. आदेश्वर राव जी का काव्य-वस्तु पर टिप्पणी लिखिए।

3. आदेश्वर राव-भाव एवं रस और विचारों पर टिप्पणी लिखिए।

4. आदेश्वर राव- अभिव्यंजना शिल्प के बारे में लिखिए।

5. आदेश्वर राव-काव्य रचनाओं के पक्षों पर सोदाहरण रूप में लिखिए।

4.10. सहायक ग्रंथ

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास एवं युग प्रवृत्तियाँ- डॉ. शिवकुमार शर्मा।

2. हिन्दी उपन्यास एक सर्वेक्षण- महेन्द्रर चतुर्वेदी।

3. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य और ग्राम जीवन- विवेकी रॉय।

4. हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद- डॉ. त्रिभुवन सिंह।

5. हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन- डॉ. गणेशन

6. उपन्यास शिल्प और प्रवृत्तियाँ – डॉ. सुरेश सिन्हा।

7. हिन्दी उपन्यास सामाजिक चेतना- डॉ. कुँवरलाल सिंह।

8. हिन्दी उपन्यास सिध्दांत और समीक्षा – डॉ. मक्खनलाल शर्मा।

9. हिन्दी उपन्यास की शिल्पविधि का विकास – श्रीमती ओम शुक्ल।

डॉ. सूर्य कुमारी पी.

5. तेलुगु रचनाकार-साहित्य-संक्षिप्त परिचय

(डॉ. भीमसेन 'निर्मल', डॉ. यार्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद,

प्रो. जी. सुंदर रेड्डी और प्रो. एस.ए. सूर्यनारायण वर्मा)

5. 0.उद्देश्य

पिछले इकाइयों में हम ने तेलुगु के श्री कर्ण वीरनागेश्वर राव, श्री आरिगपूडि रमेश चौधरी, श्री बालशौरि रेड्डी और प्रो. आदेश्वर राव रचनाकारों के जीवनी, काव्य वस्तु, विचार, कल्पना और अभिव्यंजना- शिल्पों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। अब इस इकाई में डॉ. भीमसेन निर्मल, डॉ. यार्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद, प्रो. जी. सुंदर रेड्डी और प्रो. एस.ए. सूर्यनारायण आदि रचनाकारों के साहित्यिक रचनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

रूपरेखा

5. 1. प्रस्तावना

5.2. डॉ. भीमसेन निर्मल-जीवनी

5.3. प्रो. यार्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद

5.4. प्रो. जी. सुन्दर रेड्डी

5.5. प्रो. एस. ए.सूर्यनारायण वर्मा

5.6. सारांश

5.7. बोध प्रश्न

5.8. सहायक ग्रंथ

5. 1. प्रस्तावना

डॉ. भीमसेन 'निर्मल' का पूरा नाम डॉ. भण्डाराम भीमसेन जोस्युलु है। आपका जन्म 13 नवंबर 1930 को मेदक में हुआ । इन्होंने 'साहित्यरत्न', एम.ए. (हिन्दी), एम.ए. (तेलुगु) पीएच. डी. (हिन्दी) की उपाधियाँ प्राप्त कर लीं। आप उस्मानिया विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष रहे।

हिन्दी और तेलुगु के सफल अनुवादक अध्ययन के क्षेत्र में मूर्धन्य विद्वान डॉ. भीमसेन निर्मल (भंडारम् भीममेन जोस्युलु) हिन्दी और साहित्य-जगत के जानेमाने व्यक्ति है। उनका जन्म आध्र प्रदेश वर्तमान तेलंगाना मेदक में 30-11-1930 को हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा उर्दू माध्यम से हुई थी।

रजाकर आन्दोलन के समय उन्हें परिवार के साथ गुन्टूर जाना पड़ा। वहां अकथनीय आर्थिक कठिनाइयों के कारण हाई स्कूल के बाद कालेज नहीं जा सके और महात्मा गान्धी जी की प्रेरणा से हिन्दी क्षेत्र में आ गए। 'हिन्दी प्रचारक' और 'राष्ट्रभाषा प्रयोग' की परीक्षाएँ उत्तीर्ण होने पर पुनः वे अपने पिताजी के साथ हैदराबाद आ गए और हिन्दी अध्यापन के क्षेत्र में प्रवेश किया।

2. भीमसेन निर्मल-जीवनी

1951-52 में वेस्ली बाइस हाई स्कूल, सिकन्दराबाद, 1952-60 तक हैदराबाद पब्लिक स्कूल, बेगमपेट में काम करने के बाद 1960 में उस्मानिया विश्वविद्यालय में हिन्दी प्राध्यापक के रूप में नियुक्त हुए। 1969 में रीडर, 1983 में प्रोफेसर के रूप में पदोन्नति प्राप्त करके, 1990 के नवंबर में सेवा निवृत्त हुए हिन्दी विभाग के अध्यक्ष के रूप में और हिन्दी विभाग की सारस्वत परिषद् के चेयरमैन के रूप में निर्मल जी की सेवाएं अविस्मरणीय है।

अपनी विद्वत्ता और शोध प्रवृत्ति द्वारा उन्होंने उस्मानिया विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग को अखिल भारतीय स्तर पर गौरवान्वित किया है। कई विश्वविद्यालयों की सारस्वत परिषदों एवं अनुसंधान समितियों के सदस्य एवं चेयरमैन, तथा कई संस्थाओं की पुरस्कार समितियों के सदस्य के रूप में प्रशंसनीय कार्य किया और करते आ रहे हैं। इनके मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन में कई शोधार्थियों ने तुलनात्मक शोध कार्य किये हैं।

डॉ. निर्मल अनुवाद एवं तुलनात्मक अध्ययन के क्षेत्र में प्रामाणिक विद्वान माने जाते हैं और देश के नाना भागों से शोधार्थी उनकी शरण लेते हैं। तत्संबंधी अनेक लेख देश की स्तरीय पत्रिकाओं, मानक ग्रंथों में प्रकाशित हुए हैं तथा आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित हुए हैं और राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठियों में प्रस्तुत किये गये हैं। उनको तत्वान्वेषी शोध दृष्टि ने कई अप्राप्य पांडुलिपियों का उद्धार किया है।

भारत सरकार तथा हिन्दी प्रचार सभा के तत्वावधान में हिन्दी-तेलगु द्विभाषा कोश के संपादन में उनकी मुख्य भूमिका रही है। दक्षिणांचलीय साहित्य समिति के संस्थापक अध्यक्ष के रूप में संस्था द्वारा प्रकाशित दो दर्जन से अधिक रचनाओं के प्रकाशन में उनकी निष्ठा एवं कर्मठता का परिचय मिलता है।

संप्रति डॉ. निर्मल पूर्ववत अनुवाद तुलनात्मक अध्ययन तथा पांडुलिपियों की खोज में स्वयं संलग्न हैं तथा दूसरे शोधार्थियों को इन दिशाओं में प्रोत्साहित करते आ रहे हैं।

- **काव्य-रचना**

डॉ. निर्मल हिन्दी के एक सफल आलोचक तथा अनुवादक हैं। 'तिरुपति वेंकट कवुलु', 'काटूरि-पिंगलि कवुलु', 'पद्माकर भाग-दो', 'तेलुगु का उपन्यास साहित्य' आदि का गद्यानुवाद उन्होंने प्रस्तुत किया है, जिसकी भूमिका के रूप में व्यवस्थित आलोचना लिखी गयी है। तेलुगु से हिन्दी में अनूदित उनकी अन्य कृतियों में 'नखरे हीरे', 'दीक्षितुलु', 'नदी सुंदरी', 'राजमन्नार के सात एकांकी', 'तेलुगु की श्रेष्ठ कहानियाँ' आदि भी उल्लेखनीय हैं।

'तेलुगु भाषी हिन्दी नाटककार पं. पुरुषोत्तम कवि' आपका शोध प्रबंध है । 'नदी सुंदरी' शीर्षक उनके अनुवाद ग्रंथ को आंध्र विश्व साहित्य की ओर से 1964 में उन्हें पुरस्कार प्राप्त हुआ । 'कवि श्री आरुद्रा' उनका प्रसिद्ध काव्यानुवाद है, जिसमें तेलुगु के ख्यातिप्राप्त प्रगतिवादी प्रयोगवादी कवि श्री आरुद्रा की प्रतिनिधि कविताओं का सुंदर काव्य रूपांतर प्रस्तुत किया गया है।

काव्य रूपांतर के पूर्व डॉ. निर्मल जी ने आरुद्रा की कविताओं की समालोचना विवरणात्मक रूप से दे दी है। इसमें एकत्रित अनूदित कविताएँ आरुद्रा की 'त्वमेवाहम' और 'सिनीवाली' शीर्षक काव्य संकलनों से ली गई हैं। डॉ. निर्मल का अनुवाद कवि की कविताओं के अनुरूप ही मुक्त छन्द में किया गया है। इसमें हिन्दी भाषा की स्वाभाविक. अभिव्यक्ति की रक्षा की गई है। विषय एवं भाव के अनुकूल उन्होंने व्यास शैली का उपयोग किया है। जहाँ तक हो सका अनुवादक ने ठेठ हिन्दी शब्दों का अधिक प्रयोग किया है, जिससे भाषा में सजीवता एवं प्रवाहमयता आ गई है । उदाहरण के रूप में 'पानी की घड़ी' शीर्षक कविता की कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं –

"जिस रेल पर तुम चढ़ना चाहते हो
वह सदा एक जन्म की देरी से आती है!
वर्षों और युगों की प्रतीक्षा न कर
चढ़ जाते हो किसी भी गाड़ में।
टिकट कलेक्टर 'एकसेस' बताता है
तुम्हारे आदर्शों के 'लगेज' को,
और
ब्रेक-वान में डाल देना पड़ेगा तुम्हें
अपनी इच्छाओं की पेटियों को!
साथ लाये सामान को
चढ़ाने से पहले ही
निकल जाती है गाड़ी।"

आधुनिक जीवन की असंगति एवं असफलता को व्यक्त करने के लिए अनुवाद में भी अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग किया गया है और यही शैली 'सिनेवाली' की 'नगर वर्णन' शीर्षक कविता की निम्नांकित पंक्तियों में और भी स्पष्ट रूप से प्रकट हुई है -

"शानदान होटल के पाँचवें मंज़िल पर
सुसज्जित फलवारी में
कम रोशनी के निओन लाइटों की नीली रोशनी में
आधी रात के बाद
आलिंगन नृत्य में लीन
'ग्लो-फक्स-ट्राट'
संगीत को सुनती -सुनाती
सुधबुध खो देती है! आँखें मूँद लेती है !

'डान्स फ्लोर' के कोने में पहुँच

तुम्हें छाती से लगा लेती है।

'टैग डान्स' में

दूसरे पुरुष पर भी

ऐसा ही प्रेम दरसाती है।

अकारण ही

अकाम ही

तुम पर प्रेम बरसाने वाली

कुलटा है नगरी।"

इसमें नगरी का मानवीकरण किया गया है और उसे आधुनिका के रूप में चित्रित किया गया है। यह समसामयिक उच्च वर्ग के जीवन का एक सजीव चित्र होने के साथ-साथ उस पर किया गया अद्भुत व्यंग्य है। डॉ. निर्मल जी का अनुवाद - कौशल ऐसे आधुनिक जीवन को हिन्दी भाषा में साकार करने में है।

निर्मल जी के अनुवादों में हिन्दी के प्रचलित मुहावरे बिखरे हुए हैं। उनकी सभी अनूदित कविताओं के अध्ययन से यह पता चलता है कि अनुवादक ने आरुद्रा की कविताओं का पुनः सृजन किया है और पाठक पर उनका प्रभाव मौलिक कविता पढ़ने के समान है। इस दिशा में उनके हिन्दी और तेलुगु साहित्यों के गहन अध्ययन ने बड़ा सहयोग दिया है। इस तरह डॉ. निर्मल जी हिन्दी के सफल काव्यानुवादकों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं।

5.3. डॉ. यार्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद

सन् 1981 में यार्लगड्डा लक्ष्मीप्रसाद के 'तेलुगु के आधुनिक कवि बैरागी' शीर्षक हिन्दी काव्य रूपांतर का प्रकाशन हुआ है, जिसमें हिन्दी और तेलुगु के महान आधुनिक कवि श्री आलूरि बैरागी चौधरी की प्रतिनिधि तेलुगु कविताओं का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया गया है।

लक्ष्मीप्रसाद का जन्म 24 नवंबर 1953 को कृष्णा ज़िले के गुडिवाडा शहर में हुआ। आपने आंध्र विश्वविद्यालय से एम.ए. (हिन्दी) की उपाधि प्रथम श्रेणी में प्राप्त की है। उन्होंने आंध्र विश्वविद्यालय से पीएच. डी. (हिन्दी), पीएच. डी. (तेलुगु) की उपाधियाँ प्राप्त कीं ।

श्री यार्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद जी का कृत 'हिन्दी कविता को आन्ध्रों की देन' आन्ध्र प्रदेश के समग्र रचनाकारों का समग्र कृतियों का परिचय प्राप्त करता है।

प्रस्तुत काव्य रूपांतर में लक्ष्मी प्रसाद ने बैरागी जी की कविताओं का सुबोध तथा व्यवस्थित अनुवाद, हिन्दी काव्य- शैली की प्रकृति के अनुरूप किया है। उन्होंने कविताओं के संपादन के साथ-साथ उसकी काव्यालोचना भी प्रस्तुत की है। अनुवाद में इनको बड़ी सफलता प्राप्त हुई है। उदाहरण के लिए 'मुझे दो थोड़ा विश्वास' शीर्षक कविता की कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं -

"मुझे दो थोड़ा विश्वास !

मैं पहाड़ों को भस्म करूँगा।

फटे टोमाटो जैसे सूरज को,

ठंड़े पापड़ से चाँद को

आकाश की जूठी थाली से हटाऊँगा ।

मेरे बाहु- बंधन में बाहु-बंधन

इस विशाल ब्रह्माण्ड को

चटाई - सा समेट लूँगा ।

असहाय मानव की भाग्य - रेखा को

एक कलम की लकीर से मिटाऊँगा

जीवन के सभा भवन से

अन्याय और अत्याचार को

गर्दन पकड़कर हटाऊँगा

मैं जाने क्या-क्या कर सकता !

लेकिन एक बात ....

मुझे थोड़ा विश्वास दो !"

लक्ष्मी प्रसाद की ओज- प्रधान काव्य- शैली 'भूख' शीर्षक कविता में निखर उठी है। उस कविता की निम्नांकित पंक्तियों में ओज-प्रधान शैली द्रष्टव्य है –

"भूख ! अपने शिशुओं की

हत्यारी माताओं की भूख

सूखी रोटी के बदले अपनी

शील बेचती कन्याओं की भूख !

क्या कभी तुमने देखा है

जूठन हेतु सड़कों पर

कुत्तों से जूझते प्रेतों को ?

क्या सुना है कभी तुमने

बोझिल समीर में

भूख से भरे मृतकों की

आत्माओं का आक्रन्दन

क्या सुना है कभी तुमने

दूध रहित माता की

सूखी छाती से लिपटे

अबोध शिशुओं का रोदन ?"

इस तरह लक्ष्मी प्रसाद ने तेलुगु के लब्ध प्रतिष्ठित महाकवि श्री बैरागी की सुंदर कविताओं का हिन्दी काव्य - रूपांतर कर हिन्दी काव्य-क्षेत्र को विस्तृति प्रदान की है।

उपर्युक्त प्रतिभा संपन्न काव्यानुवादकों के अतिरिक्त कुछ ऐसे भी सफल रूपांतरकार हैं जिन्होंने किसी काव्य-ग्रंथ अथवा काव्य-संग्रह का अनुवाद न प्रस्तुत करके फुटकल रूप से कविताओं का हिन्दी में अनुवाद कर उन्हें पत्र-पत्रिकाओं में अथवा दूसरों के संग्रहों में प्रकाशित किया है।

अनुवादकों में श्री रापति सूर्यनारायण, अयाचित हनुमच्छास्त्री, कोट सुंदर राम शर्मा, डॉ. कर्णराज शेषगिरि राव, दुव्वूरि रामकृष्ण मूर्ति, के. वी. अप्पाराव, एम. संगमेश्वर, श्री बालशौरि रेड्डी, डॉ. पी. ए. राजू, वेमूरि राधाकृष्ण मूर्ति, दोनेपूडि राजाराव, डॉ. के. रामानायडु आदि प्रमुख हैं।

श्री रापति सूर्यनारायण जी ने तेलुगु के विख्यात आधुनिक कवि रायप्रोलु के 'तृण कंकण' के एक बड़े अंश का सुंदर काव्यानुवाद किया है। इस काव्यानुवाद में हिन्दी की काव्य-शैली की स्वाभाविकता की रक्षा की गई है-

"बाल्य नेह ने हमें मिलाया। मुग्ध हुए हम, छायी माया।

नहीं जानते थे तब कुछ भी। क्या था हृदयों का घाव सभी।

हुआ रसोदय स्निग्ध कंदलित। प्रेम पाश अब वियोग विदलित।

निरुत्साह होकर अब मानस। तृण खाता है सखि ! जड़तावश।"

डॉ.कर्ण राजशेषगिरि राव की अनूदित कविताओं में विख्यात तेलुगु कवि दुव्वूरि रामि रेड्डी की 'दूब' एक है। डॉ. राव ने इसका सुंदर काव्यानुवाद प्रस्तुत किया है। उसकी कुछ पंक्तयाँ यहाँ द्रष्टव्य हैं -

"रास्ते के दोनों ओर खड़ी

जग में तू दूब! विलसती है

कितनी कोमल कितनी गरिमा

नयापन ले तू विलसती है।

परसों हुई मोती-झड़ी में

सुन्दरतर बन तू बढ़ती है।

तुझ पर मेरा स्नेह अनुपम

स्थिति मेरी जग में महती है ।"

इस प्रकार अनेक प्रतिभा संपन्न आंध्र भाषा-भाषी हिन्दी कवियों ने तेलुगु के काव्य - साहित्य (प्राचीन एवं अर्वाचीन) का हिन्दी काव्यानुवाद प्रस्तुत किया है। इसमें अधिकांश अनुवादकों को अच्छी सफलता प्राप्त हुई है।

5.4. प्रो. जी. सुंदर रेड्डी- जीवन परिचय

प्रो. जी. सुन्दर रेड्डी का जन्म सन् 1919 में आन्ध्र प्रदेश में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा संस्कृत एवं तेलुगु भाषा में हुई व उच्च शिक्षा हिन्दी में। श्रेष्ठ विचारक, समालोचनक एवं उत्कृष्ट निबंधकार प्रो. सुन्दर रेड्डी लगभग 30 वर्षों तक आन्ध्र विश्विद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्ययक्ष रहे। इन्होंने हिन्दी औऱ तेलुगु साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन पर पर्याप्त काम किया। 30 मार्च, 2005 में इनका स्वर्गवास हो गया।

प्रो. जी. सुन्दर रेड्डी एक श्रेष्ठ विचारक, समालोचक एवं निबन्धकार हैं। ये दक्षिण भारतीय हिन्दी विद्वान हैं। इनका व्यक्तित्व तथा कृतित्व अति प्रभावशाली है। श्री रेड्डी जी की हिन्दी साहित्य-सेवा, साधना एवं निष्ठा सराहनीय है। इन्होंने हिन्दी और तेलुगु साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन पर प्रभूत कार्य किया है। हिन्दी को विकसित तथा प्रगतिशील बनाने के लिए साहित्य में इनका योगदान सराहनीय है। इनकी भाषा-शैली किसी भी हिन्दी लेखक के समतुल्य रखी जा सकती है।

प्रो. जी. सुंदर रेड्डी का जीवन परिचय, साहित्यिक परिचय, रचनाएं एवं कृतियां, भाषा शैली एवं साहित्य में स्थान और सुंदर रेड्डी किस युग के लेखक हैं? को भी विस्तार पूर्वक सरल भाषा में समझाया गया है, ताकि आप परीक्षाओं में ज्यादा अंक प्राप्त कर सकें।

• सुन्दर रेड्डी-साहित्यिक परिचय

प्रो. जी. सुन्दर रेड्डी जी ने दक्षिण भारत की चारों भाषाओं तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम तथा उनके साहित्य का इतिहास प्रस्तुत करते हुए उनकी आधुनिक गतिविधियों का सूक्ष्म विवेचन प्रस्तुत किया है। इनके साहित्य में इनका मानवतावादी दृष्टिकोण स्पष्ट झलकता है। तेलुगु भाषी होते हुए भी हिन्दी-भाषा में रचना करके इन्होंने एक श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया है। ऐसा करके आपने दक्षिण भारतीयों को हिन्दी और उत्तर भारतीयों को दक्षिण भारतीय भाषाओं के अध्ययन की प्रेरणा दी है।

सुन्दर रेड्डी के निबन्ध हिन्दी, तेलुगु और अंग्रेजी भाषा की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। भाषा की समस्याओं पर अनेक विद्वानों ने बहुत कुछ लिखा है, किन्तु भाषा और आधुनिकता पर वैज्ञानिक दृष्टि से विचार करने वालों में प्रोफेसर रेड्डी सर्वप्रमुख हैं।

प्रो. जी. सुन्दर रेड्डी का हिन्दी के विकाश और प्रगति में अमूल्य योगदान है। हिन्दी के प्रसिध्द लेखक के रूप में प्रो. जी. सुन्दर रेड्डी कई ग्रंथों की रचना करके हिन्दी भाषा पर अपने अधिकार का प्रमाण दिया है। सुन्दर रेड्डी के अनेक निबंध हिन्दी, अंग्रेजी एवं तेलुगु पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।

इन्होंने दक्षिण भारतीयों के लिए हिन्दी और उत्तर भारतीयों के अध्ययन की प्रेरणा दी। इन्होंने हिन्दी भाषियों के लिए तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम साहित्य की रचना की है। सुन्दर रेड्डी जी के तेलुगु भाषी होते हुए भी हिन्दी भाषा में रचना करके एक श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया है।

• कृतियाँ

सुन्दर रेड्डी के उपलब्ध ग्रंथ निम्न लिखित हैं-

1. साहित्य और समाज
2. वैचारिक शोध और बोध
3. मेरे विचार
4. हिन्दी और तेलुगु-एक तुलनात्मक अध्ययन
5. दक्षिण भारत की भाषाएँ और उनका साहित्य
6. तेलुगु दारुल (तेलुगु ग्रंथ)
7. लैंग्वेज प्राब्लम इन इन्डिया (सम्पादित अंग्रेजी ग्रंथ)
8. वैचारिकी

• सुन्दर रेड्डी- प्रमुख रचनाएँ

अब तक रेड्डी जी के आठ ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं जो इस प्रकार से हैं- 1. साहित्य और समाज, 2. मेरे विचार, 3. हिन्दी और तेलुगु : एक तुलनात्मक अध्ययन, 4. दक्षिण की भाषाएँ और उनका साहित्य, 5. वैचारिकी, शोध और बोध, 6. वेलुगु दारुल (तेलुगु), 7. लांग्वेज प्रोबलम इन इंडिया (संपादित अंग्रेजी ग्रंथ) आदि कृतियों से साहित्य संसार सुपरिचित है। इनके अतिरिक्त हिन्दी, तेलुगु तथा अंग्रेजी पत्र-पत्रिकाओं में कई निबंध प्रकाशित हुए इनके प्रत्येक निबंध में इनका मानवतावादी दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

(1) हिन्दी और तेलुगु एक तुलनात्मक अध्ययन

इसमें रेड्डी जी ने दोनों साहित्यों की प्रमुख प्रवृत्तियों तथा प्रमुख साहित्यकारों का अध्ययन प्रस्तुत किया है। इस कृति की उपादेयता के सम्बन्ध में उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व राज्यपाल डॉ. वी. गोपाल रेड्डी जी ने लिखा है, "यह ग्रंथ तुलनात्मक अध्ययन के क्षेत्र का पथ-प्रदर्शक है।"

(2) दक्षिण की भाषाएँ और उनका साहित्य

इसमें इन्होंने दक्षिण भारत की चारों भाषाओं (तमिल, तेलुगु, कन्नड़ तथा मलयालम) तथा उनके साहित्यों का इतिहास प्रस्तुत करते हुए उनकी आधुनिक गतिविधियों का सूक्ष्म विवेचन प्रस्तुत किया है। सभी ग्रन्थों में इनकी भाषा शैली भाव और विषय के सर्वथा अनुकूल बन पड़ी है, जिसमें इनका साहित्यिक व्यक्तित्व पूर्ण रूप से मुखरित हुआ है।

• भाषा का स्वरूप

सुन्दर रेड्डी की भाषा परिमार्जित है। संस्कृत प्रधान शब्दावली का प्रयोग इनकी रचनाओं में हुआ है। कठिन से कठिन विषय को सरल और सुबोध बनाकर प्रस्तुत किया है। व्यावहारिकता की दृष्टि से इनका सुझाव प्रशंसनीय है। अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग भी कहीं-कहीं हुआ है।

• सुन्दर रेड्डी- भाषा-शैली

प्रो. रेड्डी जी की भाषा परिमार्जित भाषा है। इन्होंने अपनी रचनाओं में सर्वत्र साहित्यिक एवं परिमार्जित भाषा का ही प्रयोग किया है। इनकी रचनाओं में संस्कृत बहुलता है। कठिन से कठिन विषय को सरल एवं सुबोध भाषा में प्रस्तुत करना इनकी विशेषता है। इन्होंने वैज्ञानिक दृष्टि से भाषा और आधुनिकता पर विचार किया है।

"भाषा परिवर्तनशील होती है। इसका यह अभिप्राय है कि भाषा में नये भाव, नये शब्द, नये मुहावरों तथा नयी लोकोक्तियों का प्रयोग होता रहता है। इन सबका प्रयोग ही भाषा को व्यावहारिकता प्रदान करता हुआ भाषा में आधुनिकता लाता है"-व्यावहारिकता की दृष्टि से प्रो. रेड्डी जी का यह सुझाव विचारणीय है। इन्होंने अपनी रचनाओं में यत्र-तत्र अँग्रेजी भाषा के शब्दों का भी प्रयोग किया है।

प्रोफेसर रेड्डी जी की विविध लेखन शैली के रूप निम्नलिखित हैं-

(अ) विचारात्मक शैली

किसी विषयक पर अपने विचार प्रस्तुत करते समय इन्होंने इसी शैली का प्रयोग किया है। इस शैली की भाषा सरल तथा वाक्य लघु एवं दीर्घ दोनों प्रकार के हैं। इनकी विचारात्मक शैली की भाषा विषयानुकूल परिवर्तित होती रहती हैं।

(आ) समीक्षात्मक शैली

साहित्यिक विषयों पर अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए तथा भाषा विषयक रूढ़ियों को इंगित करते हुए इनकी शैली का रूप समीक्षात्मक हो गया है। समीक्षण के रूप में इनका गम्भीर विचारक तथा सजग चिन्तक का रूप व्यक्त होता है।

(ग) सूत्रपरक शैली

प्रो. रेड्डी जी अपने निष्कर्षों तथा अभिमतों को सूत्र वाक्यों में प्रस्तुत किया है। इन सूत्र वाक्यों से कथ्य की रोचकता तथा प्रभाव में वृद्धि हुई है।

- **शैली के विविध रूप**

सुन्दर रेड्डी- भाषा-शैली को चार प्रकार से विभाजित किया गया है। 1. विचारात्मक शैली, 2. समीक्षात्मक शैली, 3. गवेशणात्मक शैली और 4. सूत्रात्मक शैली। इनका विश्लेषण निम्न प्रकार हैं-

- **विचारात्मक शैली**

किसी विषय पर विचार प्रस्तुत करते समय इस शैली का प्रयोग हुआ है। इस शैली की भाषा सरल है और लघु और दीर्घ दोनों प्रकार के वाक्य लिखे गए हैं। भाषा में विषयानुकूल परिवर्तन भी दिखाई देता है। इस शैली का एक उदाहरण अग्र पंक्तियों में जा सकता है। उदाहरण के लिए- भाषा स्वयं संस्कृति का एक अटूट अंग है। संस्कृति परंपरा से निःसृत होने पर भी, परिवर्तनशील और गतिशील है। उसकी गति विज्ञान की प्रगति के साथ जोड़ी जाती है।

- **समीक्षात्मक शैली**

इस शैली का प्रयोग प्रो. जी. सुन्दर रेड्डी ने साहित्यिक विषयों का विश्लेषण करते हुए किया है। वे एक सजग समीक्षक हैं जिनके चिन्तन में गम्भीरता है। अपने विचारों को स्पष्टता से व्यक्त करने वाले प्रो. रेड्डी ने इस शैली में संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग किया है तथा अनकी वाक्य रचना आवश्यकतानुसार छोटे-छोटे वाक्यों तथा लम्बे वाक्यों वाली हो गई है। केवल आधुनिक युगीन विचारधाराओं के अनुरूप नए शब्दों के गढ़ने मात्र सेही भाषा का विकास नहीं होता, वरन नए पारिभाषिक शब्दों को एवं नूतन शैली प्रणालियों को व्यवहार में लाना ही भाषा को आधुनिकता प्रदान करना हैं।

- **गवेषणात्मक शैली**

इस शैली का प्रयोग प्रो. जी. सुन्दर रेड्डी अपने शोधपरक निबंधों में करते दिखाई पड़ते हैं। भाषा विषय के अनुकूल गम्भीर परिमार्जित है जिसमें नवीन एवं मौलिक विचारों को प्रतिपादित किया गया है। तथा 'नवीनीकरण द्वारा कितना ही प्रशस्त कार्य क्यों न हुआ हो उस प्रक्रिया में यह भूलना नहीं चाहिए कि भाषा का मुख्य कार्य सुस्पष्ट अभिव्यक्ति है। यदि सुस्पष्टता एवं निर्दिष्टता से कोई भी भाषा वंचित रहे तो वह षा चिरकाल तक जीवित नहीं रह सकेगी।'

- **सूत्रात्मक शैली**

प्रो. सुन्दर रेड्डी के निबंधों में सूत्र शैली का प्रयोग वहाँ हुआ है जहाँ वे अपना अभिमत एवं निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं। कम से कम शब्दों में बात को व्यक्त करने में वे कुशल हैं। ऐसे कुछ सूत्र वाक्य हैं-

1. रमणीयता और नित्य नूतनता अन्योन्याश्रित हैं।
2. भाषा समूची युग चेतना की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है।
3. भाषा स्वयं संस्कृति का एक अटूट अंग है।

5.5. एस.ए. सूर्यनारायण वर्मा

तेलुगु भाषी होते हुए भी हिन्दी में मौलिक लेखन, अनुवाद, समीक्षा ओर हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में आंध्र प्रदेश के जिन लेखकों ने अपनी कृतियों से हिंदी भाषा और साहित्य की श्रीवृद्ध के लिए महत्वपूर्ण कार्य संपन्न किया है। उनमें प्रो. एस. ए. सूर्यनारयण वर्मा का नाम विशेष है। इन्होंने अनुसंधान और अनुवाद के क्षेत्र में अपने कर्तव्य एवं दायित्वों को समझा और निष्ठापूर्वक उनका निर्वाह किया।

'छायावादी कविता और भाव कविता में प्रकृति चित्रण' प्रो. वर्मा जी का शोध विषय रहा। सन् 1979 से 1982 तक महाराज कलाशाला, विजयनगरम में हिंदी प्राध्यापक के रुप में इन्होंने काम किया। सन् 1983 से 1988 तक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के रिसर्च असोसिएट के रुप में आंध्र विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में अनुसंधान कार्य किया गया। द्विवेदी युगीन निबंध साहित्य और हिंदी और तेलुगु के स्वच्छंदतावादी काव्य पर इनके ग्रंथ इस अवधि में प्रकाशित हुए।

सन् 1993 में वैज्ञानिक (प्रोफेसर) के रुप में इन्हें पदोन्नति मिली। तब से ये प्रोफेसर की श्रेणी में आंध्र विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में अध्यापन, अनुसंधान, निर्देशन, शोध परियोजनओं का संचालन, तेलुगु से हिंदी में अनुवाद-कार्य, हिंदी पत्रिका का संपादन, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में प्रपत्र-वाचन, आंध्र प्रदेश के उत्तर तटवर्ति जिलों में हिंदी का प्रचार-प्रसार आदि कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लेकर अपनी उपलब्धियों से राष्ट्रवाणी को संबोधित करते रहे हैं।

राष्ट्रीय एकता, धर्म निरपेक्षता एवं भारतीयता के विशेष संदर्भ में हिंदी और तेलुगु की आधुनिक कविता का तुलनात्मक अध्ययन परियोजना का विषय रहा है। उनकी उपलब्धियों में प्रकाशित समीक्षात्मक कृतियाँ, प्रतिनिधि रचनाओं का अनुवाद, कई पुस्तकों के भूमिका-लेखन और निर्देशन के क्षेत्र में इनकी प्रशंसा अगणनीय है।

अब हम यहाँ हम प्रो. सूर्यनारायण वर्मा के 15 समीक्षात्मक ग्रंथ और 5 अनूदित ग्रंथ उपलब्ध हुए हैं। वे इस प्रकार है-

1. छायावादी कविता में युग-चेतना।
2. द्विवेदी युगीन निबंध-साहित्य में आधुनिक विचारधारा।
3. नई कविता की काव्यसंवेदना।
4. नई कविता: पुराखयानों की समकालीनता।
5. हिंदी और तेलुगु की आधुनिक कविता में राष्ट्रीयता।
6. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता का वस्तुगत अनुशीलन।
7. साठोत्तर हिंदी और तेलुगु कविता में सामाजिक क्राँति,
8. प्रेरक वाक्य।
9.आधुनिक तेलुगु नाटक।
10. पाश्चात्य रंग-दर्शन।
11.आधुनिक हिंदी साहित्यः मनन और मूल्यांकन।
12. आधुनिक तेलुगु साहित्यः विविध परिदृश्य।
13. कविता-कुसुम, अद्वैतवादःएक परिशीलन,
14. सितायन।
15.तेलुगु भाषा का इतिहास।

• अनूदित ग्रंथ

1. जब मैंने तिरुपति बालाजी को देखा।
2. श्री सत्य साई सत्संवाद।
3. दैनंदिन जीवन में मान चित्रों का उपयोग।
4. लर्निंग हिंदी आदि।

इन तमाम कृतियों के आधार पर प्रो. वर्मा की विद्वत्ता एवं अनवरत साधना के ज्वलंत प्रमाण हैं। इन कृतियों में लगभग 215 लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। इन तमाम कृतियों में इनकी कृतित्व एवं व्यक्तित्व का परिचय का व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा से अलंकृत है। आप में विद्या, प्रतिभा, साधना, लक्ष्योन्मुखता और सृजन का अद्भुत समन्वय है।

हिंदी और तेलुगु भाषाओं पर समान अधिकार होने के कारण तुलनात्मक अध्ययन के क्षेत्र में इनका कार्य महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ है। छायावादी कविता और भाव कविता में प्रकृति चित्रण शीर्षक शोध-प्रबंध प्रकाशित हुआ है, जिसमें आलंबन, उद्दीपन, मानवीकरण आदि रुपों में प्रकृति का वर्णन करने, परमतत्व के आभास को पाने, संदेशवाहक के रुप में प्रकृति के अंग-प्रत्यंगों को चित्रित करने में हिंदी और तेलुगु के स्वत्छंदतावादी काव्यकारों की कुशलता का निरूपण किया गया है।

'छायावादी कविता और भाव कविता में युग-चेतना'शीर्षक को और पुस्तक में युग-चेतना की अभिव्यक्ति की दृष्टि से आलोच्य कविताओं के वैशिष्ट्य को उजागर करने का सफल प्रयास परिलक्षित हुआ है। युगीन आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवेश के प्रति अपनी प्रतिक्रिया को व्यक्त करते हुए द्विवेदी युगीन निबंधकारों ने जो विचार प्रकट किये, उनकी प्रासंगिकता के साथ-साथ निबंध-लेखन की दृष्टि से इस युग के निबंधकारों की उपलब्धियों को 'द्विवेदी युगीन निबंध साहित्य में आधुनिक विचारधारा' शीर्षक ग्रंथ में मूल्यांकन किया गया है।

'हिंदी और तेलुगु कविता में राष्ट्रीयता' शीर्षक ग्रंथ में प्रो. वर्मा ने संस्कृति-प्रेम और देशभक्ति, प्रगतिशील विरासत के प्रति श्रद्धा, पतनोन्मुख जीवन-मूल्यों का निरूपण, राष्ट्रीय जागरण की प्रबल आकांक्षा की अभिव्यक्ति, नेताओं की त्यागनिरति एवं कर्म-निष्ठा की प्रशंसा आदि शीर्षकों के अंतर्गत हिंदी और तेलुगु की आधुनिक कविता का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

प्रो. वर्मा ने इस युग की कविता की वस्तु-चेतना के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए विचार-दर्शन और संस्कृति के विभिन्न पक्षों की अभिव्यक्ति की दृष्टि से इस अवधि की हिंदी कविता का समग्र अनुशीलम 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविताः वस्तुगत परिशीलन' शीर्षक ग्रंथ में प्रस्तुत किया है। प्रो. वर्मा ने सामाजिक चेतना, राजनीतिक विद्रोह का समर्थन, वर्ण-व्यवस्था और सांप्रदायिकता का विरोध, नारी स्वतंत्रता का समर्थन आदि कई शीर्षकों के अंतर्गत इस युग की हिंदी और तेलुगु कविता का तुलनात्मक अनुशीलन को 'साठोत्तर हिंदी और तेलुगु कविता में सामाजिक क्रांति' शीर्षक ग्रंथ में प्रस्तुत किया है।

प्रो. वर्मा ने मिथकीय कथा-वस्तु को लेकर रचे गए नयी कविता के प्रबंध काव्यों में चर्चित युगीन समस्याओं का समग्र विश्लेषण 'नयी कविताः पुराख्यानों की प्रासंगिकता शीर्षक पुस्तक में प्रस्तुत किया है। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों की उपलब्धियों का वस्तुगत वैविध्य और विचारतत्व की दृष्टि से 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकः वस्तुगत अध्ययन, शीर्षक ग्रंथ में मूल्यांकन किया गया है।

'साठोत्तर तेलुगु नाटक व रंगमंचः पाश्चात्य प्रभाव और प्रयोग शीर्षक ग्रंथ में सातवें, आठवें और नवें दशक के तेलुगु नाटकों का समग्र परिचय देते हुए वीदि नाटक (नुक्कड़ नाटक), असंगत नाटक, प्रतीकात्मक नाटक, अभिव्यंजनावादी नाटक, महाकाव्यात्मक रंगमंच, सिद्धांत-प्रचार-अभियान के नाटक, समीक्षा नाटक, अस्तित्ववादी नाटक, त्रि-आयामी नाटक, मूकाभिनयप्रधान माटक, परिवेशगत नाटक, वृत्त रूपक, निश्चल अभिनयप्रधान नाटक, छाया नाटक, नीरव दृश्यांकन, मनोविश्लेषणात्मक नाटक आदि रुपों में इस युग में रचे गये तेलुगु नाटकों पर पाश्चात्य प्रभाव को दर्शाने की चेष्टा हुई है।

हिंदी साहित्यः मनन और मूल्यांकन, और तेलुगु साहित्यः विविध परिदृश्य आदि ग्रंथों के रुप में अमन प्रकाशन, कानपुर ने प्रकाशित किया है। प्रो. वर्मा जी के निबंध-लेखन के पीछे साहित्य, संस्कृति और इतिहास से संबंधित प्रश्नों के प्रति इनकी गहरी चिंता निहित है। ऊँची चिंतनशीलता अनके व्यापक अनुभवों और गहन अध्ययन का फल है। समीक्षा-लेखन और भूमिका-लेखन के क्षेत्र में भी इनकी उपलब्धियाँ विशिष्ट रही है। अनुवादक अपनी योग्यता, ज्ञान व अभ्यास के कारण अच्छा अनुवादक बन सकता है। एक अनुवादक के रुप में इनका मन कला के गुणें से ओतप्रोत है तथा मूलभाषा व लक्ष्य भाषा पर इनका पूर्ण अधिकार है।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री पी. वी. नरसिंहाराव के अपर सचिव और भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी 'राष्ट्र रत्न' श्री पी. वी. आर. के. प्रसाद ने तिरुमला तिरुपति देवस्थानम् के कार्यकारी अधिकारी के रुप में अपने कार्यकाल के दौरान अपने तथा दूसरों के अनुभवों को, सर्वसंभवाम (नाहं कर्ता, हरिः कर्त्ता) शीर्षक से स्वाति साम्ताहिक तेलुगु पत्रिका में धारावाहिक के रुप में प्रकाशित किया। तदनंतर सर्वसंभवाम् शीर्षक से यह रचना पुस्तक के रुप में प्रकाशित हुई।

प्रो. एस ए. सूर्यनारायण वर्मा जी ने जब मैनें तिरुपति बालाजी को देखा शीर्षक ग्रंथ के रुप में हिंदी में रुपांतरित किया। इस रचना में अलौकिक अनुभूति संपन्न रचनाकार के अनुभव तीस अध्यायों के अंतर्गत परोक्षतःश्री बालाजी की महिमाओं का नर्णन करने वाले और पाठकों को अलौकिक आनंद देने वाले हैं। इस अनूदित रचना का प्रकाशन ज्ञान पब्लिशिंग हाऊस.23 मैन अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली की ओर से हुआ है। तिरुमला में कलियुग दैव के रुप में प्रतिष्ठित बालाजी (श्री वेंकटेश्वर स्वामी) की लीलाओं को अनेक अद्भुत घटनाओं में अनुभूत कर भक्त लोग परवश होते हैं। रचनाकार ने अपने जीवन की कुछ ऐसी महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण दिया है, जो असंभव को संभव बनानेवाली ईश्वरीय शक्ति के स्पष्ट प्रमाण देती हैं और विश्वात्मा के प्रति भक्तजनों की आस्था को सुदृढ़ बना देती है।

इस रचना का बोल-चाल की भाषा में लिखा गया है। यज्ञ को समाप्त कराने में, ध्वजस्तंभ को प्रतिष्ठित करने में तथा दास साहित्य परियोजना और अन्नमाचार्य परियोजना को लागू करने में लेखक अपनी सफलता का श्रेय परमात्मा श्रीनिवास को ही देते हैं। इन अध्यायों में भावना के धरातल पर अनुभूतियों को अभिव्यक्त किया है। इन अध्यायों का अनुवाद करते समय भावनाओं की तीव्रतम अभिव्यक्ति में सहायक तत्व के रुप में भाषा का प्रयोग करने को प्राथमिकता दी गई है।

श्री वेलुवोलु बसवपुन्नय्या ने मानवीय सदाशयता, सामाजिक प्रतिबद्धता और मूल्य-दृष्टि को अपनी कृतियों द्वारा स्पष्ट कर वर्तमान तेलुगु साहित्य संसार में अपना विशिष्ट स्थान बनाया है। सीतायनम उनका नवीनतम तेलुगु उपम्यास है, जिसमें बसनपुन्नय्या ने, राष्ट्र-धर्म और मानव - धर्म के प्रश्न के नेपथ्य में दशरथ पुत्र श्रीराम ने अपनी धर्म पत्नी को जो दंड दिए उनकी समीक्षा की है। प्रो. वर्मा ने इस रचना हिंदी रूपांतर को 'सीतायन' शीर्षक से प्रस्तुत किया है। इसका प्रकाशन अमन प्रकाशन, कानपुर की और से हुआ है। इस रचना में सीता के चरित्र के कई आयामों का उद्घाटन हुआ है। महर्षि जनक की पुत्री, भूसुता, वीर्य शुल्का, अयोनिजा, दशरथ की बहू और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम

की धर्मपत्नी सीता कारणजन्मा है। उसका चरित्र दिव्य है। इस उपन्यास में राम-कथा के प्रसंगों की मौलिकता को अक्षुण्ण बनाये रखते हुए बसवपुन्नय्या जी ने चरित्र को विकास के नये आयाम दिए।

संस्कृतनिष्ठ शब्दों की बहुलता, कई संदर्भों में प्रकृति सौंदर्य का विस्तारपूर्वक वर्णन, लंका नगरी की शोभा का विस्तृत वर्णन, नारी-सौंदर्य का नख-शिक वर्णन, लंबे-लंबे कथनों द्वारा कथा-प्रसंगों को मार्मिक बनाने का प्रयास, नारी-अस्तित्व और उसकी स्वतंत्रता से जुड़े कई प्रश्नों को उठाने के संदर्भ में दीर्घ संवादों का प्रयोग, विरह-वेदना की अभिव्यक्ति के अवसर पर भावनाओं की तीव्रता को प्राथमिकता देना, युद्ध-वर्णन के प्रसंगों में लेखक की ओर से लंबी पृष्ठभूमि बाँधने का प्रयास, भारतीय संस्कृति व धार्मिक आस्थाओं के नेपथ्य में विभिन्न पात्रों की मनोवृत्तियों और क्रिया-प्रतिक्रियाओं का अंकन करने की अद्भुत क्षमता आदि के कारण यह उपन्यास अत्यंत लोकप्रिय बन पड़ा है।

आंध्र विश्वविद्यालय के तेलुगु विभाग के आचार्य वेलमल सिम्मन्ना ने तेलुगु भाषा चरित्र ग्रंथ प्रकाशित किया। तेलुगु भाषा का इतिहास शीर्षक ग्रंथ के रुप में584 पृष्ठों में प्रो. वर्मा जी ने इसे हिंदी में रूपांतरित किया। इसका प्रकाशन आंध्र प्रदेश हिंदी अकादमी, हैदराबाद की ओर से हुआ है। 32 अध्यायों में यह प्रस्तुत हुआ है। तेलुगु भाषा के इतिहास को इस रचना में सरल शैली में स्पष्ट किया गया है।

इण्डो-यूरोपियन भाषा-परिवार का परिचय देते हुए इण्डो-आर्यन भाषा-परिवार की विभिन्न भाषाओं का समग्र अनुशीलन किया है। भारतीय भाषाएँ शीर्षक अध्याय में विभिन्न भारतीय भाषाओं का परिचय देते हुए उनके वर्गीकरण को प्रस्तुत किया है । प्राचीन लिपियों का परिचय देते हुए तेलुगु लिपि के सामान्य लक्षणों और तेलुगु भाषा के इतिहासकारों के अध्ययनों की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया है। इस महत्वपूर्ण ग्रंथ को हिंदी में रूपांतरित कर प्रो. सूर्यनारायण वर्मा जी ने तेलुगु भाषा के समृद्ध इतिहास से हिंदी पाठकों को अवगत कराने का स्तुत्य प्रयास किया है। समीक्षा,निबंध, अनुवाद, संपादन आदि क्षेत्रों से प्रो. वर्मा जी पूरी तरह से जुड़े रहे हैं। इनके साथ ही हिंदी तथा दक्षिण की भाषाओं और उनके साहित्य को भी निकट लाने की वे निरंतर कोशिश कर रहे हैं। यही कारण है कि वे हिंदी तथा हिंदीतर सभी मंचों पर सम्मान भाजन बने है।

जीवन में कई रुकावटें, कठिनाइयाँ, बाधाएँ और समस्याएँ ऐसी भी आती हैं जिनसे डरकर साधारण व्यक्ति चुनौतियों से मुँह फेर लेता है. लेकिन प्रो. वर्मा चुनौती से पंजे मिलाते है, भीड़ का हिस्सा न बनकर वे अपने अलग अस्तित्व को प्रकट करना चाहते हैं। 70 से 80 प्रतिशत विकलांगता के बावजूद प्रो.वर्मा ने साहित्य-सृजन, अनुवाद, अध्यापन और अनुसंधान के क्षेत्र में अपनी सक्रियता एवं क्षमता का परिचय दिया है। इनके निदेशन में अब तक 30 शोधार्थियों को पीएच.डी., उपाधियाँ मिलीं और 10 शोधार्थियों को एम. फिल., की उपाधियाँ। इन पंक्तियों के लेखक का भी यह परम सौभाग्य रहा कि प्रो. वर्मा जी के निर्देशन में पीएच.डी., उपाधि के लिए शोध करने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ है।

5.6. सारांश

काव्यानुवाद के इस दुष्कर एवं श्रमसाध्य कार्य को इन साधकों ने अत्यंत आत्म-निष्ठा के साथ निभाया है । विगत तीन दशकों से तेलुगु भाषी हिन्दी साहित्यकारों ने अपने हिन्दी काव्यानुवादों के द्वारा, हिन्दी के माध्यम से भारतीय काव्य - साहित्य के भण्डार को सुसंपन्न बनाया है। तेलुगु-कवियों को राष्ट्र के विशाल रंगमंच पर लाकर उन्हें अत्यधिक जन-समुदाय के सम्पर्क में आने का अवसर प्रदान किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने हिन्दी काव्य-भण्डार को आंध्र की काव्य- प्रतिभा से भर दिया है।

हिन्दी साहित्य में सुन्दर रेड्डी अत्यन्त मुख स्थान पाये है। श्री सुन्दर रेड्डी ने हिन्दी की सेवा करके अहिन्दी भाषी व्यक्तियों के समक्ष एक आद्रश प्रस्तुत किया है। भारत की राष्ट्रभाषा के प्रति अपनी कृतियों के माध्यम से अपने कर्तव्य का निर्वाहन किया है। वे एक श्रेष्ठ विचारक, कुशल निबंधकार एवं विद्वान समीक्षक के रूप में हिन्दी जगत में सम्मानित रहे हैं। तेलुगु भआषी होते हुए भी प्रो. जी. सुन्दर रेड्डी ने हिन्दी भाषा के विकास हेतु अपना जीवन समर्पित कर सभी हिन्दी प्रेमियों को प्रेरणा प्रदान की है। निश्चित रूप से उनका योगदान हिन्दी जगत में अविस्मरणीय रहेगा।

विशाखा हिंदी परिषद के उपाध्यक्ष एवं विशाखा भारती के संपादक के रुप में प्रो. वर्मा ने व्यापक तौर पर हिंदी का प्रचार-प्रसार किया और कई युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहन दिया। कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगेष्ठियों में इन्होंने भाग लिया। योजना तथा कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय और रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली की हिंदी सलाहकार समितियों के सदस्य के रुप में प्रो. वर्मा ने राजभाषा के रुप में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका निभाई है। सलाहकार समितियों के सदस्य के रुप में हिंदी को राजभाषा के रुप में सार्थक व सिद्ध करने में आपका निष्ठापूर्ण पुरुषार्थ अन्य लोगों को भी निरंतर अनुप्रेरित कर रहा है।

तुलनात्मक अध्ययन एवं अनुसंधान के क्षेत्र में इनकी उपलब्धियाँ राष्ट्रीय महत्व की हैं। अपनी साहित्य-साधना द्वारा उत्तर और दक्षिण भारत के बीच सांस्कृतिक संवाद को गतिशील बनाने में इन्हें आशातीत सफलता मिली है। प्रो. वर्मा ने कहा था 'मेरा जीवन दूसरों के लिए है। 'अध्यापन, अनुसंधान, शोध-निर्देशन, अनुवाद, हिंदी का प्रचार-प्रसार और संपादन के क्षेत्र में प्रो. सूर्यनारायण वर्मा जी की उपलब्दियों को दृष्टि में रखकर केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने वर्ष 2010 के लिए 'गंगाशरण सिंह पुरस्कार' देने की घोषणा भी दी गयी है।

5.7. बोध प्रश्न

1. भीमसेन निर्मल की काव्य रचनाओं पर विस्तृत व्याख्या लिखिए।

2. प्रो. यार्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद की कृतियों के बारे में लिखिए।

3. प्रो. पी. सुन्दर रेड्डी के बारे में विस्तृत व्याख्या लिखिए।

4. प्रो. सूर्यनारायण वर्मा के बारे में विस्तृत व्याख्या लिखिए।

5.8. सहायक ग्रंथ

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास एवं युग प्रवृत्तियाँ- डॉ. शिवकुमार शर्मा

2. हिन्दी कविता को आन्ध्रों की देन- डॉ. यार्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद।

3. आन्ध्रों में हिन्दी लेखन और शिक्षण की स्थिति और गति – प्रो. आई. एन. चन्द्रशेखर रेड्डी, आन्ध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी – हैदराबाद।

डॉ. एम. मंजुला

6. आन्ध्रों का अनुवाद साहित्य : तेलुगु से हिन्दी और हिन्दी से तेलुगु

6.0. उद्देश्य

भारत में हिन्दी के बाद अत्यधिक लोग बोलने वाली भाषा तेलुगु है, तेलुगु का साहित्य हिन्दी साहित्य के समान सभी अंशों में पूर्ण और उच्छ स्थिति में खड़े होते हैं। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक तेलुगु में विभिन्न साहित्यिक प्रक्रियाओं में महान साहित्यकारों ने साहित्य लिखे थे। हिन्दी में भी विभिन्न प्रक्रियाओं में साहित्य लेखन हुए हैं। तेलुगु में लिखे गए साहित्य को हिन्दी में हिन्दी में लिखे गए साहित्य को तेलुगु में अनुवाद किए गए हैं। इस इकाई में हम -

- अनुवाद की उपयोगिता,
- तेलुगु - हिन्दी और हिन्दी-तेलुगु अनुवाद की समस्याएँ,
- तेलुगु से हिन्दी और हिन्दी से तेलुगु में अनुवाद की परंपरा के बारे में जानेंगे।

रूपरेखा

6.1. प्रस्तावना

6.2. अनुवाद की उपयोगिता

6.3. तेलुगु - हिन्दी - साहित्य के अनुवाद

6.4. सारांश

6.5. बोध प्रश्न

6.6. सहायक ग्रंथ

6.1. प्रस्तावना

साहित्य मानव की सृजनात्मक शक्ति का रूप है। किसी सुंदर दृष्य को देखने से मन में अनुभूति होती है। अनुभूति प्रकट करना सामान्य विषय नहीं होता। कुछ ही लोग उसे सुंदर ढंग से प्रकट कर सकते है। अनुभूति को प्रकट करने की विधाएँ भिन्न-भिन्न होती है। जैसे कि साहित्य, चित्रकला, संगीत आदि। साहित्य तथा ललित कलाएँ मानव को आनंद ही नहीं देते बल्कि अच्छे बुरे का ज्ञान लौकिक तत्वों की पहचान आदि प्रदान करते है। प्राचीन साहित्य में मानवीय मूल्यों को समुन्नत स्थान दिया जाता था। परंतु आधुनिक काल की साहित्य में सामाजिक चेतना, मनोविज्ञान त्यांस्कृतिक चेतना आदि का प्रमुख स्थान दिया जा रहा है।

प्राचीन काल में साहित्य का अर्थ सीमित रूप में लिया जाता था। काव्य को ही साहित्य के रूप में देखते थे। लेकिन आधुनिक काल में साहित्य का अर्थ व्यापक रूप में लिया जा रहा है। इस में कहानी, उपन्यास, खण्डकाव्य, महाकाव्य, जीवनी, रेखाचित्र, आंचलिक उपन्यास आदि सम्मिलित है। विविध भाषाओं में लिखे गए साहित्य को दूसरी भाषा में अनुवाद करने से मूल भाषा के साहित्य में बताए गए अंश स्तोत भाषा पाठकों तक पहुंचाने में अनुवाद की सहायता लेनी पड़ती है।

6.2. अनुवाद की उपयोगिता

अनुवाद के द्वारा ज्ञान, विज्ञान, संस्कृति, सभ्यता, रीति रिवाज का आदान- प्रदान होता है। साहित्य दो साहित्यकारों, व्यक्तियों तथा दो समुदायों के बीच सन्निकटता बढ़ता है। दो समाजों को या वर्गों को जोड़ता है। समाज में साहित्य का बड़प्पन समझना है या अर्थात् सामाजिक प्रवृत्तियों की जानकारी लेनी है तो अनुवाद की आवश्यकता है। यह बात कह सकते है कि इतिहास की दो आँखों के समान है, साहित्य और अनुवाद।

21वीं सदी को अनुवाद का युग कहा जाता है। क्योंकि इस सदी में औद्योगिक विकास और यातायात के साधनों के विकास के साथ-साथ राष्ट्र की भी और अंतरराष्ट्रीय सीमाओं की भी भौगोलिक मिट गई है। आदान-प्रदान के अवसर बढ़े है। विभिन्न संस्कृतियों और साहित्यों को एक दूसरे के निकट आने का अवसर मिला है। भावात्मक तथा एकता में इन कारणों से प्रबलता आई है। इस दृष्टि से हम साहित्य का आज दो रूपों में देख रहे हैं। मौलिक साहित्य, और अनूदित साहित्य।

साहित्य के क्षेत्र को सीमित रूप में ले सकते हैं और उसके विस्तृत रूप को अनुवाद रूप में देख सकते हैं। जैसे - तेलुगु साहित्य में देखा जाए तो तेलुगु में लिखी गई प्रमुख रचनाएँ तेलुगु प्राँत तक ही सीमित है। इसलिए अनुवाद के कारण साहित्य का क्षेत्र विस्तृत एवं व्यापक बनता है। ज्ञान विज्ञान का विस्तार अनुवाद के द्वार ही संभव हैं। भगवान ने अपने ज्ञान के विस्तार के लिए साहित्य का निर्माण किया। वेद-ज्ञान का भण्डार है। उसके द्वारा हमें उस समय की परिस्थितियों, समाज और प्रवृत्तियों के बारे में जानकारी मिल रही है।

भारतीयों के पवित्र ग्रंथ भगद्गीता का परिचय पूरे, संसार को मिला। इस प्रकार के आदान-प्रदान के दुवारा ज्ञान का विस्तार होता था, होता है, और होता रहेगा। इस के लिए एक मात्र साधन अनुवाद द्वारा ही ज्ञान की वृद्धि हुई है और समाज 'अनेकता में एकता' की बात को तथा भगवान भी एक ही हैं को समझने लगा है। इसका, तात्पर्य है कि अनुवाद के द्वारा ज्ञान द्वारा ज्ञान का विस्तार होता है। आज अनुवाद क्षेत्र से कोई भी क्षेत्र अछूत नहीं है। आज अनुवाद व्यक्ति की सामाजिक आवश्यकता बन गया है।

संसार में संप्रेषण माध्यम के रूप में अनुवाद नई तकनीक है। कंम्प्यूटर की सहायता से आज हम मशीनी अनुवाद के बारे में भी सोच रहे हैं। साहित्यिक क्षेत्र की सारी विधाएँ हर भारतीय भाषाओं और विदेशी भाषाओं में समानता दिखाई देती है। इसका मुख्य कारण अनुवाद है।

6.3. तेलुगु - हिन्दी साहित्य के अनुवाद की परंपरा

हिन्दी साहित्य को आन्ध्रों की ट्रेन की दृष्टि से यह अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र है। अनुवाद के लिए दो भाषाओं (स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा) पर अधिकार का होना आवश्यक है। ऐसा अधिकार हिंदीतर भाषी ही रख सकते हैं। जिन को हिन्दी के साथ-साथ अपनी एक हिंदीतर भाषा या मात्रु भाषा पर भी अधिकार रहता है। इसलिए इस क्षेत्र में आध्रों का योगदान अधिक महत्व रखता है।

आन्ध्र के अनुवादकों ने तेलुगु से हिंदी तथा हिन्दी से तेलुगु में बराबर अनुवाद किए हैं। तेलुगु और हिन्दी भाषाओं में कई स्तरों पर समानताएँ हैं। इसलिए अनुवाद प्रक्रिया में कठिनाई कम हैं। इसलिए ही तेलुगु से हिन्दी में अनेक श्रेष्ठ अनुवाद किया गए हैं। तेलुगु के अनुवादकों ने साहित्य के सभी विधाओं मॅ रचे गए साहित्य को सफलता पूर्वक अनुवाद किए हैं। वर्तमान साहित्यिक समाज में तेलुगु भाषी हिन्दी लेखक और अनुवादक अधिक संख्या में

देखने को मिलते हैं। खास कर आधुनिक युग के साहित्य में मौलिक रचनाओं के बराबर अनूदित रचनाएँ भी प्रचलित हो रही है। इस तरह का काम साहित्य की विभिन्न विधाओं में हमें देखने को मिलता है। साहित्यिक विधाओं के अनुसार इन लेखकों का विभाजन नहीं किया जा सकता क्यों कि अधिकांश लेखकों ने अनुवाद भी किया है तथा मौलिक रचनाओं का सृजन भी किया है।

आन्ध्र प्रांत में हिन्दी और तेलुगु के साहित्यिक आदान-प्रदान का कार्य तेलुगु भाषियों ने ही किया है। वास्तव में दक्षिण भारत में खास कर आंध्र प्रांत में हिन्दी लेखन का क्रमिक विकास दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना के अनंतर ही हुआ है। सन् 1921 में गांधी जी का आदेश या कर दक्षिण में हिन्दी प्रचार करने के लिए पं. द्रषीकोश शर्मा मध्य भारत से आये थे। ऐसी ही हिन्दी प्राचार्य आन्ध्र में बिहार से आये हुए पं. व्रजनंदन शर्मा ने तेलुगु सीखी थी। आपने तेलुगु के प्रसिद्ध एकांकी नाटककार मुद्दुकृष्णा के 'अशोक वन' और 'अनार्कली' के हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किये थे। इस अनुवाद परंपरा को दो वर्गों में बाँट कर देख सकते हैं- गयानुवाद कलिला पद्यानुवाद।

कविता या काव्य या काव्य संकलनों का अनुवाद, संख्या की दृष्टि से तथा प्राचीनता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इनमें से अधिकांश पद्यानुवाद है। अर्थात छंदोबद्ध अनुवाद है। तेलुगु के अनुवादकों ने प्रायः पद्य को पद्य में अनुवाद करने की प्रक्रिया अपनायी है। इसका मुख्य कारण यही है कि काव्यानुवाद में जब किसी अन्य भाषा सभी को दृष्टि भी भाषा के कवि के काव्य का अनुवाद करना पड़ता है, तब अनुवादक की दृष्टि भी मूल कवि की लीक की सीमा के अंतर्गत ही रहती है। उसे मूल कवि की भावना, कल्पना एवं अनुभूति में अपने अंतरंग को रंगकर उसी प्रतिपादय को प्रस्तुत करना पड़ता है।

इस तरह के प्रस्तुति में अनुवादक ज्यादा इसी पर ध्यान केंद्रित करता है कि अनुवाद को पढनेवाला पाठक भी मूल रचना के पाठक की तरह ही अनुभव प्राप्त करें। इसी ओर वह प्रयास भी करता है। इसलिए प्रभाव साम्य की सारूप्यता ही अनुवाद का मेरुदंड है। इन सभी को दृष्टि में रखते हुए तेलुगु से हिन्दी में अनेक श्रेष्ठ अनुवाद हुए हैं। उनमें लघु कविताओं से लेकर बड़े काव्य यानी महाकाव्य व प्रबन्ध काव्य शामिल है। इन अनूदित कृतियों को कही कहीं मूल कवि की भावना, कल्पना एवं अनुभूति से बढ़कर मर्मस्पर्श ढंग से प्रस्तुत करने में सफलता मिली है। तेलुगु से हिन्दी में अनुवादों की परंपरा के अंतर्गत एक तरह से सबसे पहले पं. व्रजनंदन शर्मा के नाटकानुवाद को स्वीकारा जा सकता है? लेकिन वह गद्यानुवाद है। प्राचीन काल में साहित्य का अर्थ काव्य के रूप में ग्रहण करते थे। उसी को आधुनिक काल में विस्तृत करके गद्य और पद्य दोनों रूपों में स्वीकार किया गया है।

तेलुगु साहित्य के मध्य युग के भक्त कवियों में वेमना, पोलना और संगीत वाग्गेय कार श्री न्यागराज की कृतियों को अनूदित कर हिन्दी साहित्य भंडार को सुसंपन्न बनाने में हिन्दी प्रेमी तेलुगु रचनाकारों का योगदान शत्रुत्य रहा है। सन् 1957 में स्यंत वेमना शीर्षक से डॉ. चलसानि सुब्बाराव ने तेलुगु के मध्यकालीन महान संत कवि वेमना के सौ पचों का हिन्दी रूपांतरण प्रस्तुत कर हिन्दी तेलुगु भाषाओं की प्रवृत्तियों, विशेषताओं और बारीकियों का परिचय दिया। इस के फल स्वरूप हिन्दी के संत कवि कबीर के समझ वेमना की प्रतिभा को हिन्दी संसार के लिए ग्राह्य बनाया गया है।

पद्यानुवाद के अंतर्गत डॉ. चलसानि सुब्बाव के बाद, श्री वाणासि राममूर्ति रेणु का स्थान दिया जाता है। तेलुगु के महान कवि पोतना कृत 'आन्ध्र महा भागवतम्' के चार उपाख्यानों का "प्रह्लाद चरित्र, गजेंद्र मोसम, वामन चरित्र

और अंबरीश कथा" नामक शीर्षकों से श्री रेणु ने प्रांजल शैली में अतुकांत छंदों में हिन्दी रूपांतर किया। कथ्या और अभिव्यक्ति के योग को समन्वय करके अनूदित रचना की प्रभविष्णुता को बढ़ाया गया। इस के अनुरूप प्रभावात्मक को बढ़ाने वाले मूल काव्य तत्वों के जुड जाने के कारण यह अनुभूति रचना मूल की अपेक्षा अधिक सुंदर बन पड़ी है। इसके अलावा श्री रेणु ने आधुनिक काल के प्रमुख दलित रचनाकार 'गुर्रम जालुओं' की काव्यकृति 'गब्बिलम' का हिन्दी रूपांतर 'चेमगीदड' शीर्षक से प्रस्तुत किया है।

आधुनिक तेलुगु कविता में नवीन मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा द्वारा समाज में दलित मानव पर किए जानेवाले सामाजिक अन्याय एवं अत्याचारों के विरुद्ध विद्रोह करने वाले 'गुर्रम जाषुआ' ने व्यंग्य शैली में गब्बिलम रचना में अपने क्रांतिकारी विचारों को व्यंजित किया। श्री रेणु ने मूल कविता के कथ्य के हृदयंगम कर के आप अपना अनुवाद प्रस्तुत किया। इस रचना में संपूर्ण कथ्य को एक ही छंद में उतार कर अनुवादक ने उसे गरिमा प्रदान की है। इस महाकवि के ही दूसरा काव्य 'फिरदौसी' का श्री दुर्गानंद ने तेलुगु से हिन्दी में अनुवाद किया।

डॉ. इलापावुलूरि पांडुरंगाराव ने तेलुगु के प्रसिद्ध संगीत वाग्गेयकार श्री व्यागराज के विशिष्ट गेय पदों का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया। श्री पुन्तेरि सुब्रह्मण्याचार्युलु 'विश्वप्रेमी' ने तेलुगु के लोकप्रिय नीति शतक 'सुमती शतक' का अत्यंत सुंदर पयानुवाद 'सुमती सूक्ति-सुधा' शीर्षक से प्रकाशित किया है। इस में एक सौ नौ नीति मुक्तकों का छन्दोबद्ध अनुवाद प्रस्तुत किया गया है।

तेलुगु की गद्य कविता के पितामह पुरिपंडा अप्पल स्वामी की अडतीस कविताओं को श्री गुर्रम सुब्बाराव ने 'तेलुगु के आधुनिक कवि पुरिपिंडा अप्पल स्वामी' शीर्षक से प्रकाशित किया। डॉ. सूर्यनारायण भानु ने आधुनिक तेलुगु के पैतालीस कवियों की विशिष्ट कविताओं का हिन्दी रूपांतर तेलुगु की 'आधुनिक काव्य धारा' शीर्षक से जागृति, कल्पना, प्रगति आदि खंडों में प्रस्तुत किया।

इसके अलावा डॉ. भानु ने कवि सम्राट विश्वनाथ सत्यनारायण, तेलुगु छायावादी युग प्रवर्तक कवि देवुलपत्ति कृष्ण शास्त्री, दलित कवि गुर्रम जाजुआ और प्रगतिवादी कवि श्रीरंगम नारायण बाबू की प्रतिनिधि कविताओं का अनुवाद अत्यंत प्रांजल उदान एवं ब्रौढ भाषा में किया है। इन्होंने प्रगतिशील कवि श्रीरंगम श्रीनिवास राव (श्रीश्री) की, प्रतिनिधि कविताओं का भी हिन्दी रूपांतरण किया है। श्री.श्री. हिन्दी के कवि से निराला जैसे कवि व्यक्तित्व का कवि है। भुक्त छंद का उन्होंने समर्थन किया है। अनुवादक ने भी ऐसे ही हिन्दी शब्दों को चुन चुन कर कविता में गति लाने की कोशिश की है।

'मैं' शीर्षक कविता की निम्न पंक्तियाँ-

'भूत हूँ, यज्ञोपवीत हूँ
वैदलव्य गीत हूँ मैं।
सुध करूँ तो पद्म होऊँ
पुकारूँ तो वाघ होऊँ
अनल वेदी निकट में ही
रुधिर का नैवेध हूँ मैं।'

डॉ. चावलि सूर्यनारायण मूर्ति ने 'आधुनिक तेलुगु कविता' - प्रथम भाग के संपादन के साथ-साथ बीस तेलुगु कविताओं का हिन्दी अनुवाद भी किया। श्री आलूरि बैरागी चौधरी 'आधुनिक तेलुगु कविता- भाग-2' शीर्षक तेलुगु कविताओं का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया है। वे तेलुगु और हिन्दी के महान कवि थे। इन्होंने अनेक तेलुगु कविताओं का हिन्दी में मुक्त छंद में ही अनुवाद किया है। हिन्दी की सहज शैली, शब्द भंडार पर विशेष अधिकार, मुहावरेदार भाषा प्रयोग आदि के कारण इनके सभी अनुवाद श्रेष्ठ बन पड़े हैं। उन्होंने तेलुगु के लोकप्रिय कवि श्री श्री की 'कविते हैं कविते' का हिन्दी में अनुवाद किया है-

'कविते हे कविते'

मंजुल प्रांजल, गीत-गुंजरित कुसुम कुंज से

मैं ने तुझ को किसी शुभ समय तुला

सुन्दर भन्दन पर सवार दूर बिय, पथ में विहार

करती दुर्लभ सुषमा भइ समझा था जिस दिन।

चेब्रोलु शेषगिरि शव ने आन्ध्र के विख्यात कवि श्री मधुना पंतुल सत्यनारायण शास्त्री के आन्ध्रपुराण के एक प्रसंग का हिन्दी काव्य रूपांतरण 'मोती नाथ' नाम से प्रस्तुत किया। डॉ. यम. रंगय्या ने तेलुगु की कतिपय आधुनिक कविताओं का हिन्दी रूपांतर आधुनिक तेलुगु काव्य परिमल शीर्षक से प्रस्तुत किया। अनुवादक ने इस में तेलुगु के सुप्रसिद्ध महाकवि गुरजाडा से लेकर अत्याधुनिक कवियों की प्रतिनिधि कविताओं का सरल प्रांजल एवं प्रभावशाली भाषा में रूपांतरण किया। श्री एम. मल्लेश्वर राव ने प्रगतिवादी कवि श्री कुदर्ति की अट्ठाईस कविताओं को 'मेरे बिना' शीर्षक से काव्यानुवाद प्रस्तुत किया।

प्रमुख कवि आलोचक एवं अनुवादक पी. आदेश्वर राव ने तेलुगु की नयी कविता शीर्षक से कतिपय प्रमुख तेलुगु कविताओं का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया। इसके अलावा श्री आलूरि बैरागी की कविता एक ज्योति का भी उन्होंने किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने डॉ. बेजवाडा गोपाल रेड्डी की चुनी हुई कविताओं का 'लोकालोके' शीर्षक से हिन्दी रूपांतर प्रस्तुत किया और मिट्टी मनुष्य और आकाश' काव्य कृति को भी प्रस्तुत किया।

उपरोक्त अनुवादकों के साथ-साथ श्री वदिपर्ति चलपति शव ने सचलुयुग के दिग्गज कवि अल्लसानि पेद्दनी की काव्य कृति 'मनुचरित्र' का काव्यानुवाद अपनी मौलिक पद्धति में किया है। श्री दंडमुहि वेंकट कृष्णाराव (दाशरथी शतकम्) बुदराजु वेंकट सुब्बाराव (हरि किशोर की कविताएँ - मेरी काव्य साधना) श्री एम. बी.वी.ए आर शर्मा (सुमती शतकम्) श्री ओम प्रकाश निर्मल, डॉ. वै. वेंकट रमणराव, डॉ. शशीमुदिराज आदि प्रमुख अनुवादकों ने इस काव्यानुवाद परंपरा को आगे बढाया।

उल्लिखित अनुवादकों के अलावा बड़े आदर के साथ प्रमुख अनुवादकों में महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है डॉ. भीमसेन निर्मल जी को इन्होंने इस क्षेत्र में अधिक काम भी किया है। तिरुपति वेंकट कवुलु, काटूरि पिंगलि कवुलु, पद्माकर भाग- 2, तेलुगु का उपन्यास साहित्य आदि का गद्यानुवाद किया है। इन्होंने 'कवि श्री आफदा' शीर्षक से तेलुगु के लोकप्रिय कवि आरुद्रा की कविताओं का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया है। अधिकांश कविताओं का अनुवाद

इन्होंने मुक्त छंद शैली में किया है। ठेठ हिन्दी के शब्दों का प्रयोग करना इनकी एक विशेषता है। 'पानी की घड़ी' कविता की कुछ पंक्तियाँ -

'जिस रेल पर तुम चढना चाहते हो
वह सदा एक जन्म की देरी से आती है।
वर्षों और युगों की प्रतीक्षा न कर
चढ़ जाते हो किसी भी गाड़ी में।
टिकट कलेक्टर 'एक्स्प्रेस' बताता है
तुम्हारे आदर्शों के 'लगंज' को।'

इन्होंने तेलुगु के लोकप्रिय रामायण 'रंगनाथ रामायण' का हिन्दी में अनुवाद किया है। इन्होंने सन 1986 में भारतीय ज्ञानपीठ विजेता आचार्य सी. नारायण रेड्डी के 'विश्वंभरा' काव्य का हिन्दी में अनुवाद किया।

'बिता का, पशुता का
संस्कृति का, दृष्कृति का
स्वच्छंदता का निबंधता का
समाद्रता का रौद्रता का
पहला बीज है मन
मन का आवरण मानव
मानव का आच्छाद जगत
यही है विश्वंभरा तत्व
यही है अनंत जीवन सत्य।'

डॉ. यार्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद एक और तेलुगु भाषी कुरान हिन्दी अनुवादक है। इन्होंने हिन्दी से तेलुगु के अतिरिक्त तेलुगु से हिन्दी में भी अनुवाद कार्य किए है। 'तेलुगु के आधुनिक कवि बैरागी' शीर्षक से उन्होंने तेलुगु के कवि बैरागी की कविताओं का हिन्दी में अनुवाद किया है। 'मुझे दो थोड़ा विश्वास' कविता का अनुवाद -

'मुझे थोड़ा विश्वास दो !
मै पहाड़ों को भरम करूँगा।
फटे होमारो जैसे सूरज को
ठंडे पापड़ से चाँद को
आकाश की जूठी थाली से हटाऊँगा।
मेरे बाहु-बंधन में

इस विशाल ब्रह्मांड को

चटाई-सा समेट लूंगा।

असहाय मानव की भाग्य रेखा को

एक कलम की लकीर से मिटाऊँगा।'

सन् 1971 में दंडमूडि महीधर ने सी. नारायण रेड्डी की कृति 'समप्पा' का हिन्दी में अनुवाद किया है। हिन्दी में अनुवाद किया है। डॉ.सी. एच. रामुलु तेलुगु में लोकप्रिय 'मोल्ल रामायण' का हिन्दी अनुवाद किया। प्रो. शशि मुदिराज श्रीरंगम नारायण बाबू की तीन कविताओं का हिन्दी में अनुवाद किया है।

श्री पुद्धपर्ति नागपक्ष्मनी 'अन्नमाचार्य गीत माधुरि' शीर्षक से अन्नमाचार्य के एक सौ गीतों का हिन्दी में अनुवादक किया।

काव्यानुवाद के बाद गद्यानुवाद के बारे में देखेंगे तो आन्ध्रा के विभिन्न आधुनिक विधाएँ उपन्यास, कहानी, नाटक आदि का अनुवाद भी किए हैं। उपन्यास तो आधुनिक काल में अंग्रेजी का देन है। यह स्पष्ट संकेत देता है कि भारत में अनूदित साहित्य भी अंग्रेजों के आने के बाद ही जोर पकड़ा है। बहुत पहले से ही आधुनिक काल में आंध्र के अनुवादकों ने तेलुगु के उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद करने की सफल कोशिश की है। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी, बंगला के अतिरिक्त हिन्दी से भी तेलुगु में भी कई औपन्यासिक रचनाएँ अनूदित हुई हैं।

तेलुगु के प्रथम उपन्यास के संदर्भ में मतभेद होने पर भी अधिकांश मत यह स्पष्ट करते हैं कि कंदुकुरि वीरेशलिंगम पंतुलु जी के द्वारा शरशक्ति 'राजशेश्वर चरित्र' तेलुगु के प्रथम उपन्यास है। यह एक सुधारवादी सामाजिक उपन्यास है। इसका हिन्दी में अनुवाद किया गया है। इसके बाद अनेक तेलुगु उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद किया गया है। अडवि बापिराजु, नोरि नरसिंह शास्त्री एवं विश्वनाथ सत्यनारायण जैसे तेलुगु के प्रमुख उपन्यासकारों के उपन्यास का अनुवाद किया गया है। विश्वनाथ सत्यनारायण के उपन्यास 'वैथि पडगलु' का हमारे पूर्व प्रधान मंत्री श्री. पी. वी. नरसिंहा राव जी ने 'सहस्र फण' नाम से हिन्दी में अनुवाद किया है।

डॉ. विजय राघव रेड्डी जी के अनुसार अब तक तेलुगु से हिन्दी में लगभग 45 प्रमुख उपन्यासों का अनुवाद हुआ है। बुच्चिबाबु के 'चितरकु मिगिलेदि' उपन्यास का सु. श्री. दयावंति जी ने 'आखिर जो बच्चा' नाम से अनुवाद किया। गोपीचंद, कोडवहिगति कुटुंबराव, रंगनायकम्मा, वायिरेडि सीतादेवी, यहनपूरि सुलोचना रानी जैसे तेलुगु उपन्यासकारों के उपन्यासों का अनुवाद किया गया है।

उपन्यासों के बाद कहानियों को देखेंगे तो तेलुगु - हिन्दी में अनेक कहानियों का अनुवाद किया गया है। इस संबंध में डॉ. विजय राघव रेड्डी जी ने लिखा है- "जहाँ तक तेलुगु कहानियों के हिन्दी में अनुवाद व प्रकाशन का संबंध है, प्रेमचंद्र के सुपुत्र श्रीपत राय के प्रयासों में ही सर्वप्रथम 'गल्प संसार, माला भाग-7' नाम से तेलुगु कहानियों का एक संकलन प्रकाश में आया। यह संकलन सरस्वती प्रेस से 1939 में प्रकाश में आया। इसमें ग्यारह कहानियाँ संकलित हुई थीं। इन कहानियों का अनुवाद किया था वेमूरि आजनेय शर्मा एवं यलमंचिलि वेंकटेश्वर राव ने। डॉ. पी.वी. नरसारेड्डी तेलुगु भाषी हिन्दी कहानी अनुवादक हैं। भविष्य शीर्षक से उनका एक अनूदित कहानी-संग्रह प्राप्त होता है। इस में तेलुगु से हिन्दी में अनूदित आठ कहानियाँ तथा उनकी पाँच मौलिक कहानियाँ संग्रहीत है।

प्रो. राशि मुदिराज श्री श्री की 'चश्म चरित्र', श्रीपाद सुब्रमण्याः शास्त्री की दो रुपये का सिक्का' और गुंडर शेषेंद्र शर्मा की 'विश्वाला' नाम से तीन कहानियों का तेलुगु से हिन्दी में अनुवाद किया है। प्रो. बी. सत्यनारायण जी के अनूदित कहानियों का संग्रह चेकी नाम थे प्रकाशित हुआ है। इसमें डॉ. सुजाता रेड्डी की तीस कहानियों का हिन्दी अनुवाद है। श्रीमती पारनंदि निर्मला एक उच्च शिक्षा प्राप्ति तेलुगु से हिन्दी में अनुवाद करने वाली अनूदित कथा लेखिका है। इनके अनुवाद लगभग 1985 से विभिन्न स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में विशेषतः केंद्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली की वार्षिकी के साथ अनेक पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। इन्होंने 'तेलुगु की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ' शीर्षक से तेलुगु कहानियों का अनुवाद भी किया है। इसमें नौ लेखकों की 23 कहानियाँ हैं।

तेलुगु से हिन्दी में अनूदित कहानियों की दृष्टि थे सब से ज्यादा चर्चित कहानीकार शक्रिंदला सरस्वती देवी है। इनकी लगभग 250 से अधिक कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। इनका एक संग्रह 'देवर्णकमल' दे इसमें लगभग 100 कहानियाँ संकलित हैं। इसे केंद्रीय साहित्य अकादमी का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। डॉ. इलावुलू पांडुरंगा शक 'कथा भारती' शीर्षक से तेलुगु की पता सतसाई कहानियों का हिन्दी में अनुवाद किया है। इनके बाद दंडमूडि महीधर कोडवटिगंटि कुटुंबराव की केंद्रम, कोत्त जीवितम, तिंडि दोंग, सवति तल्लि, अमामई पेल्लि आदि कहानियों के श्रेष्ठ अनुवाद प्रस्तुत किए हैं।

तेलुगु में रचे गए अनेक नाटक और एकांकियों का तेलुगु के अनुवादकों में अनुवाद किए है। गद्य के अन्य विधियाँ जैसे निबंध, समीक्षा आदि का भी अनुवाद तेलुगु में किए गए हैं।

डॉ. श्रीशन निर्वाल जी ने पद्माकर-2. (निबंध) विविध लेखक, राजमन्नार के सात एकांकी, अल्लूरि रामाकृष्णा राव के 'नदी सुंदरी' (एकांकी) 'ये मर्द भी कैसे हैं' (एकांकी) गणपति शनितानंद स्वामी जी (जीवनी) आदि विभिन्न साहित्य को हिन्दी में अनुवाद किया है।

कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी के बाद गय के निबंध, आलोचनादि के रूप में तेलुगु में लिखी गयी रचनाओं के हिन्दी अनुवाद भी किए गए हैं। इनमें इतिहास से संबंधित लेख और पुस्तकें भी है। डॉ. सी.हेच. रामुलु एवं डॉ. वी कृष्ण ने आचार्य श्री वी. सुब्रह्मण्यम् के साहित्रिक निबंधों का हिन्दी में अनुवाद किया है।

डॉ. वेंकटरमण रावजी ने भावा- विज्ञान और गाला- शिक्षण शीर्षक एक पुस्तक का अनुवाद प्रस्तुत किया है। इसकी मूल रचना के लोक डॉ. के. वी. वी. एल. नरसिंहा राव है। श्री जगदीश शर्मा ने गुरुवेंद्र शर्मा की कृति 'स्वर्णहंस' का इसी शीर्षक से अनुवाद किया है। यह श्री हर्ष के 'नैषद काव्य' की तांत्रिक या में संबंधित एवं शर्मा के मौलिक चिंतन से युक्त निबंधों का संग्रह है। अडिगपूर इंमेश चौधरी राव के संस्कृति और साहित्य का अनुवाद किया है।

रेड्डी ने राजनेश्वर चरित्रा, रुद्रमदेवी, नारायण भट्ट आदि का आचार्य सुंदर रेड्डी ने हिन्दी तेलुगु का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. कर्ण राज शेषगिरि राव ने आंध्र के लोक गीत, श्री. वेमूरि आंजनेय शर्मा ने हाउस्सर्जन, कोल्लायिगट्टितिनेमि आदि का अनुवाद किया। डॉ. आई. पांडुरंगाराव ने तारा के महल, अंश अन्यन नयन बिन बानी, 27 कहानियाँ आदि का अनुवाद किया।

डॉ. आदेश्वर राव ने मोहभंग कहानियाँ, श्री चर्ल जनार्दन स्मानि ने शतावतार का अनुवाद किया। डॉ. लीलावती, डॉ. शान्ता सुंदरी, श्री कोम्मा शिव इसके अलावा डॉ. सुमनलता, डॉ. शंकर रेड्डी, डॉ. विजय राघव रेड्डी आदि अनुवादकों ने भी तेलुगु की प्रमुख कृतियों का हिन्दी में अनुवाद करके हिन्दी भाषी जगत को परिचित कराया।

अनुवाद- काल की विशिष्टताओं की दृष्टि से तेलुगू से हिन्दी में अनूदित विवेच्य कृतियाँ विशिष्ट बन पड़ी हैं। कथ्य एवं शिल्प के सुंदर समन्वय को यथातथा उतारने का सचेष्ट प्रयास किए जाने के फलस्वरूप ये अनूदित रचनाएँ सूक्ष्म एवं संश्लिष्ट अनुभूतियों को पूर्णतः कलात्मक अभिव्यक्ति देने में सक्षम प्रतीत होती है।

6.4. सारांश

आधुनिक युग में अनुवाद एक व्यापक और अनिवार्य अंग बन गया है। भारत जैसे बहुभाषा भाषी देश में सांस्कृतिक समर्त्यता एवं भावात्मक एकता का महत्व निर्विवाद है। साहित्य के क्षेत्र में राष्ट्रीय एकता के मूलभूत तत्वों की पुष्टि हेतु विभिन्न भाषाओं के बीच आदान-प्रदान होना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। राष्ट्रीयता तथा अंतर्राष्ट्रीय के निरंतर विकास के लिए सक्षम अनुवादकों का होना अत्यंत आवश्यक है। विकसित तथा विकासशील समाज की हर भाषा में समृद्ध साहित्य उपलब्ध है जिस से प्रभावित होकर लोग सुसंस्कृत बन सकते हैं।

अनुवाद की उपादेयता दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक एकता को सुदृढ़ आधार है साहित्य और संस्कृति के आदान-प्रदान का मुख्य सेतु भी साहित्य का अनुवाद है। तेलुगु में रचे गये अनेक साहित्य विधाओं का अनुवाद हिन्दी साहित्य प्रेमियों तक अनुवादकों ने पहुँचाया, पहुंचा रहे हैं।

6.5. बोध प्रश्न

1. अनुवाद की उपयोगिता क्या है।

2. तेलुगु-हिन्दी अनुवाद की परंपरा के बारे में चर्चा कीजिए।

3. आदि काल से आधुनिक काल तक तेलुगु-हिन्दी काव्यानुवाद की परंपरा के बारे में लिखिए।

6.6. सहायक ग्रंथ

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास एवं युग प्रवृत्तियाँ- डॉ. शिवकुमार शर्मा

2. हिन्दी कविता को आन्ध्रों की देन- डॉ. यार्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद।

3. आन्ध्रों में हिन्दी लेखन और शिक्षण की स्थिति और गति – प्रो. आई. एन. चन्द्रशेखर रेड्डी, आन्ध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी – हैदराबाद।

डॉ. एम. मंजुला

403HN21

M.A (Hindi)

Paper – III: HINDI LITERATURE OF ANDHRAS

आध्रों का हिन्दी साहित्य

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

सभी प्रश्नों के अंक समान है।

Time: 3Hours **Max:70 Marks**

1. बैसाखी कहानी का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(अथवा)

दलितों की विनती के विधाओं के प्रकारों को विस्तृत रूप में लिखिए।

2. आरिगपूडि का जीवनी और कृतियों के बारे में लिखिए।

(अथवा)

आचार्य सुंदर रेड्डी के बारे में लिखिए।

3. बालशौरि रेड्डी -व्यक्तित्व और कृतियों के बारे में लिखिए।

(अथवा)

आरिगपूडि रमेश चौधरी के बारे में एक लिख लिखिए।

4. आचार्य भीमसेन निर्मल के बारे में लिखिए ?

(या)

प्रो. जी. आदेश्वर राव के जीवनी कृतियों के बारे में विस्तृत रूप में लिखिए।

5. किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए।

(a) हिन्दी -तेलुगु समकालीन गद्य साहित्य

(b) तेलुगु-हिन्दी-अनुवाद साहित्य

(c) आन्ध्र के हिन्दी निबंधकार

(d) कर्ण वीरनागेश्वर राव

(या)

(a) बालशौर रेड्डी

(b) प्रो. वै. लक्ष्मी प्रसाद का साहित्य परिचय

(c) आन्ध्र का नुवाद साहित्य

(d) बैसाखी – कहानी परिचय